नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
दिसम्बर '९३
पांच रुपए
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

पेश करते हैं

मुफ़्त

अग्निपुत्र अभय और ब्लैक थंडर

के साथ

1994 की रंगीन डायरी
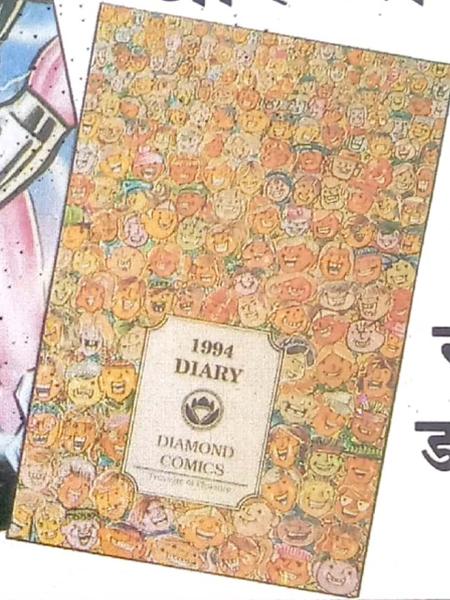
जिसका इंतजार था

प्राण

चाचा चौधरी
राका का चैलेंज

मुफ़्त!
पर्सी
4 पर्सी गोलियां
और
आकर्षक
कार स्टिकर

डायमण्ड कामिक्स

का सुपरहिट

800 वां अंक

कार्टूनिस्ट प्राण का

चाचा चौधरी-राका का चैलेंज

खूंखार राका छूट गया है, उसने
वैद्यराज चक्रमाचार्य की चमत्कारी दवाई पी है
जिसके कारण वह मर नहीं सकता, उसके
अत्याचारों से सारी पृथ्वी कांप उठी है।
कम्प्यूटर से तेज दिमाग वाले चाचा चौधरी
और विश्व के सबसे ज्यादा ताकतवर
इंसान साबू के लिये राका एक
चैलेंज बनकर खड़ा है।

डायमण्ड कामिक्स प्रा.लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

दिसम्बर '९३
वर्ष : ३० अंक : २

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : अखिलेश

एलबम : इंद्रजीत जुनेजा; एस. एस. बृजवासी

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार

मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील; वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार

आओ बात करें

बीकानेर रियासत में सूरतसिंह ने अपने नाबालिग भतीजे राजा प्रतापसिंह को मरवा दिया। खुद राजा बन बैठा। रियासत के कुछ सामंत तो नए राजा की हां में हां मिलाने लगे, लेकिन कई उसके खिलाफ हो गए। जो खिलाफ हुए, उन्हें दबाने के लिए राजा सूरतसिंह उठापटक मचाने लगा। लड़ाइयां छेड़ने लगा।

बीकानेर में चूरू मंडल का काफी दबदबा था। वहां के ठिकानेदार शिवजीसिंह थे। राजा सूरतसिंह ने अपना दूत वहां भेजा। दूत ने संदेश दिया—'महाराज का आदेश है कि सारी तोपें उनके हवाले कर दो। चूरू गढ़ के ऊंचे-ऊंचे सब कंगूरे तुड़वा दो। अगर दो महीने के भीतर ऐसा न करोगे, तो हम हमला करके जबर्दस्ती ऐसा करा देंगे।'

कितने ही अमीर उमरा, जमींदार और बड़े लोगों के सामने यह कहा गया। शिवजीसिंह को लगा जैसे जहर का प्याला आया हो। वह सोच में पड़ गए कि दूत को क्या उत्तर दें? शिवजीसिंह की मां सच्ची क्षत्राणी थीं। उन्होंने पुत्र से कहा—"कायर ही डरा करते हैं। बीकानेर को जवाब दे दो कि किले के कंगूरे मेरी पाग हैं और तोपें हमारी मूंछ हैं।"

ऐसा ही किया गया। दूत बीकानेर दरबार में लौटा और उसने शिवजीसिंह का संदेश सुना दिया। जो होना था, वही हुआ। चूरू पर हमला हो गया।

दोनों तरफ से तोपें गोले दागने लगीं। सैनिक धूल चाटने लगे। लेकिन चूरू वालों के सामने राजा सूरतसिंह को नीचा देखना पड़ा। उसे जान बचाकर भागना पड़ा। सूरतसिंह यह अपमान कैसे सहन करता? उसने बार-बार चढ़ाई की और बार-बार मुंह की खाई। पर अब भी उसे चैन न था।

एक बार फिर बीकानेर की सेना ने चूरू को घेर लिया। शिवजीसिंह अपने मंत्रियों और अधिकारियों से विचार करने लगे। तभी शत्रु सेना के गोले दनादन आकर गिरने लगे।

शिवजीसिंह की आंखों में खून उतर आया। उन्होंने अपने वीरों को तुरंत मोर्चे संभालने का आदेश दिया। खुद अपनी प्रिय तोप 'शिव बाण' पर जाकर डट गए। जवाब में शत्रु पर गोले छोड़ने लगे।

लेकिन इस बार बीकानेरी सेना डटी रही। बीकानेर का मंत्री अमरचंद था। उसके सैनिक बड़ी संख्या में मारे गए, किंतु वह नए-नए सैनिक जुटाता रहा। बारूद तथा दूसरी रसद का इंतजाम भी कर लेता। चार महीने निकल गए। शिवजीसिंह ने भी बारूद बाहर से मंगाने की कोशिश की। सैनिक भेजे, किंतु अमरचंद को भनक लग गई। उसने बारूद आदि लाने वाले सैनिकों पर हमला बोल दिया। चंद सैनिक ही किले में लौट सके, वह भी बिना बारूद के। यह देखकर भी शिवजीसिंह निराश नहीं हुए। उन्होंने खजांची को बुलवाया। कहा—"जितनी भी चांदी खजाने में है, उसे तुरंत दे दो, ताकि चांदी से तोप के गोले ढाले जा सकें।"

आदेश का पालन हुआ। रातों-रात चांदी के गोले ढलने लगे। 'शिव बाण' तोप से बीकानेरी सैनिकों पर चांदी के गोले दागे जाने लगे। सैनिक सोचने लगे—'इतने महीने बाद भी किलेदार के यहां चांदी के गोदाम भरे हैं। हम न जीत सकेंगे।'

मंत्री अमरचंद बड़ा चतुर-चालाक था। उसने कहा—"डटे रहो, अब लड़ाई अधिक न खींची जा सकेगी।"

लड़ते-लड़ते शिवजीसिंह खेत रहे। बीकानेर की सेना ने चूरूगढ़ पर अधिकार कर लिया। किंतु ठाकुर शिवजीसिंह ने बता दिया था कि आजादी और सम्मान के सामने चांदी-सोने की कोई कीमत नहीं।

समय ने फिर पलटा खाया। ठाकुर के बड़े बेटे पृथ्वीसिंह किले से चुपके-से निकल गए थे। उन्होंने कुछ ही महीने बाद फिर से चूरूगढ़ पर अधिकार कर लिया।

साहस, शूरवीरता और बलिदान के ऐसे पुतलों को हमारा नमन।

—तुम्हारे भइया

[signature]
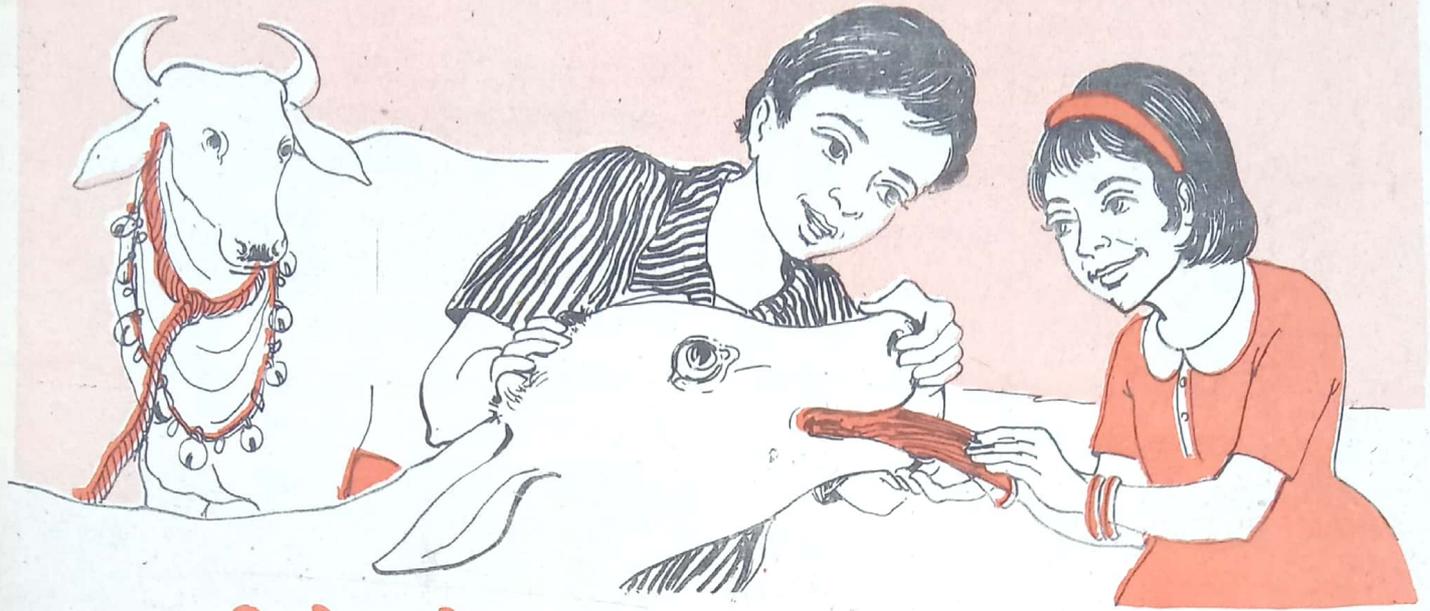
छमरी के बोल

—मृदुला हालन

ईनी, टीनी की यह कहानी काफी पुरानी है।

शहर से दूर, ऊंचे पहाड़ों की परछाईं तले एक साफ सुथरे घर में टीनी, ईनी रहते थे। ईनी था बड़ा भइया। उम्र लगभग दस साल। टीनी थी आठ साल की छोटी बहन।

घर के आसपास काफी जमीन उनके पास थी। मां और बाबू जी ने मेहनत कर-कर के उस जमीन पर खूब पेड़ लगा लिए थे। अमरूद, आम, शहतूत, लौकाट, नींबू, कमरख सभी कुछ तो था। मौसमी सब्जियां भी खूब उगती थीं। पीछे के पहाड़ से एक नाला बहता था। बाबू जी ने उसी नाले में से एक नाली काटकर खेतों की तरफ मोड़ दी थी। कल-कल बहता पानी एक पेड़ से दूसरे पेड़, एक क्यारी से दूसरी क्यारी तक इठला-इठलाकर बहता।

ईनी, टीनी का स्कूल शहर में था। वहां से लौटते-लौटते शाम हो जाती। ईनी तो बस्ता फेंक, एकदम कल्याण के पास जा पहुंचता।

यहां जरा ठहरना होगा। तनिक चूक हो गई। हम कल्याण की बात तो कहना ही भूल गए।

ईनी, टीनी के घर में एक गाय भी थी। खूब सफेद, बड़ी कजरारी आंखें। मां ने उसके सींगों में घुंघरू बांध दिए थे। वह जरा भी सिर हिलाती तो घुंघरू बज उठते छम्म-छम्म। शायद इसी कारण उसका नाम पड़ गया छमरी।

इसी छमरी के बछड़े का नाम कल्याण था। कल्याण से ईनी की खूब गहरी दोस्ती थी। छोटी-सी उम्र में ही कल्याण ने ऊंचा कद निकाल लिया था। अब उसके छोटे-छोटे सींग भी उग आए थे, जैसे बच्चे के मुंह में दो दांत हों।

स्कूल से आकर ईनी कल्याण के पास न जाए, तो वह रुठ जाता था।। यह समय था दोनों दोस्तों की दौड़ का। गाय के थान पर आकर ईनी छमरी के थनों से दूध पीता। धार सीधे मुंह में मार लेता। फिर कल्याण से लाड़ करता। उसकी जंजीर खोल देता।

कल्याण इसी क्षण के इंतजार में रहता था। जंजीर खुलते ही वह पूंछ उठाकर नथुने फुला लेता और एक बार ईनी की तरफ देख, जैसे ललकार रहा हो, घाटी में दौड़ जाता। ईनी पीछे, कल्याण आगे।

छमरी और कल्याण पर परिवार के चारों प्राणी जान छिड़कते। वे भी इनकी एक आवाज पर चौकन्ने हो जाते। बाबू जी काम से लौटते, तो छमरी का ताजा दूध भी बासी लगता। छमरी बहुत सीधी गाय थी। दिन में चार बार दूध निकाल लो, प्रेम से उमग कर वह दूध दे देती।

कभी-कभी छमरी को शरारत सूझती। पानी पीने जाते समय हठात् वह दौड़ पड़ती। ईनी, टीनी 'छमरी...छमरी...' पुकारते पीछे भागते। छमरी को

इस में खूब आनंद आता।

छमरी और कल्याण को लेकर ईनी, टीनी की जिम्मेदारियों का अंत नहीं था। कुछ भी काम होता, मां उन्हें ही आवाज लगाती—"ईनी ! टीनी ! गाय की घास के पूले ले आओ। नहीं ! नहीं ! अभी नहीं आए बगैर कैसे चलेगा। थोड़ी ही देर में अच्छी घास तो बिक जाएगी। क्या सूखी घास खाएगी तुम्हारी छमरी ?"

कभी कहतीं—'बच्चो ! गाय की सानी का वक्त हो गया है। खल-भूसा सब थान पर ही रखा है...जाओ सानी बना आओ...अरे ! क्या छमरी को भूखा रखोगे !"

इसी तरह दोनों भाई-बहन छमरी व कल्याण के हर काम के साथ जुड़ते ही चले गए।

एक दिन तो हद हो गई। दोनों भाई-बहन सुबह की मीठी नींद सो रहे थे कि मां ने आ कर जगाया—"ऐ ईनी ! टीनी ! उठो ! देखो ना छमरी न जाने कहां चली गई ? जाओ, जरा उसे ढूंढकर लाओ ! शायद खूंटा ढीला हो गया था। या फिर जंजीर ठीक से नहीं बंधी थी। जो भी हो उसे खोजकर लाना ही होगा।"

दोनों भाई-बहन आंखें मलते छमरी को ढूंढने चल पड़े। नाले के किनारे-किनारे आगे बढ़े। पहाड़ी पर चढ़े। "छमरी ! छमरी..." उनकी आवाजें घाटी में गूंजकर लौट आईं।

"भैया ! अब कहां ढूंढें उसे ?"—थककर टीनी ने पूछा।

"बस ! इस पहाड़ी के पीछे और देख लेते हैं।"—कह कर ईनी टीनी का हाथ पकड़कर पहाड़ी के दूसरी ओर उतर गया। चार कदम चलते ही दोनों ठिठक गए। वहां एक भुट्टे का खेत था। छमरी बहुत तन्मय होकर दूधिया भुट्टे खा रही थी। "छमरी !" ईनी की आवाज सुनकर उसने गरदन उठाई –"मां..." फिर भुट्टे खाने लगी।

दोनों भाई-बहन हंस पड़े —"इन भुट्टों के लिए तूने हमें इतना दौड़ाया पगली।" फिर उसके गले में जंजीर डालकर घर ले आए।

छमरी को भुट्टे खाने में बहुत आनंद आया। वह अक्सर ही रस्सा तुड़ाकर मुंह अंधेरे भाग जाती। कभी भुट्टे के खेत में मिलती, कभी नाले की पुलिया के पास तो कभी घास के मैदान में।

एक दिन यह खेल गले का फंदा बन गया। दोनों भाई-बहन खोजकर थक गए, पर छमरी का
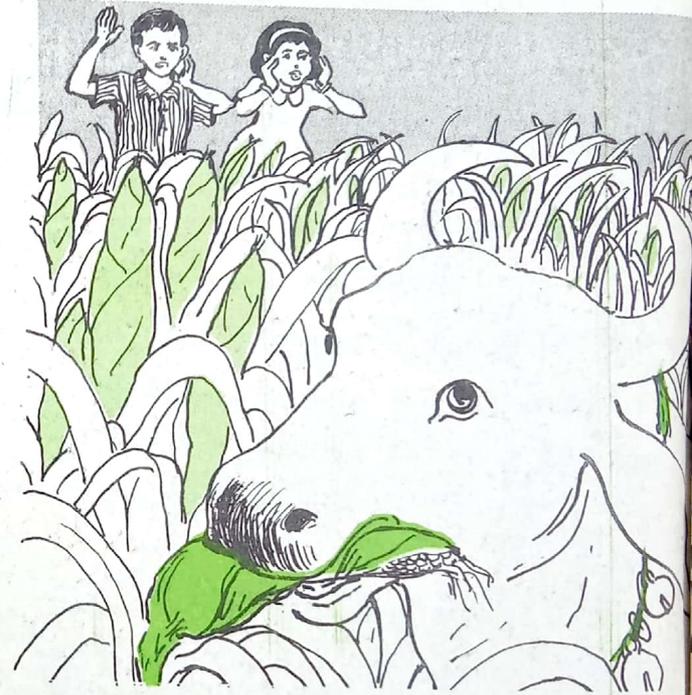
नामो-निशान तक नहीं मिला। छमरी नहीं तो कल्याण दुखी। छमरी नहीं तो बाबू जी को ताजा दूध की चाय कैसे मिले ? छमरी नहीं तो ईनी, टीनी दूध कैसे पिएं। "ओह ! एक छमरी के न होने से कितनी मुश्किलें हैं।"–ईनी ने कहा।"

मां ने कहा—"आधी रात के समय छमरी जोर-जोर से रंभा रही थी। तभी भागी होगी पर गई कहां ?"

दोपहर होते-होते एक और गाज गिरी। पड़ोसी खेत वालों ने बताया कि रात इस इलाके में शेर घुस आया था और बाड़े से एक बकरी को ले गया है।

"हे भगवान ! मेरी छमरी !"—मां घबरा गईं।

"क्या शेर ने छमरी को भी मारा होगा।"—टीनी ने पूछा।

"मारा है, यह तो नहीं कहा जा सकता पर उसे कुछ

तो हुआ ही है।"—बाबू जी भी चिंतित थे।

ईनी, टीनी को तो शेर की बात सुनकर ही रोना आ रहा था।

शेर ने अगर छमरी पर हमला किया होता तो भी वह कहीं पड़ी होती। घायल ही सही। इतनी बड़ी गाय को शेर घसीट कर तो ले जा नहीं सकता।

दोपहर बाद बाबू जी ने एक-दो लोगों को साथ

लिया और छमरी को ढूंढने चले। ईनी, टीनी तो साथ थे ही। बहुत देर तक कहीं कोई सुराग भी नहीं मिला।

"देखो ! वह क्या है ?"—एक आदमी बोला।

थोड़ी दूर पर, घनी झाड़ियों के नीचे आधा खाया जानवर पड़ा था।

"क्या हमारी छमरी।"—ईनी के गले से आवाज नहीं निकल रही थी।

"तुम दोनों यहीं ठहरो। हम देखकर आते हैं।"—बाबू जी ने कहा।

ईनी, टीनी एक-दूसरे का हाथ पकड़े खड़े रहे, जैसे गले में कुछ घुट रहा हो।

"वह छमरी नहीं है।"—बाबू जी दूर से ही चिल्लाए। वह तो बकरी का पिंजर है।

"लगता है शेर ने आराम से अपना शिकार खाया और जंगल में चला गया।"—साथ का आदमी बोला।

"या तो छमरी कहीं दूसरे गांव में निकल गई। जानवरों को तो शेर की गंध आ जाती है। या कहीं पहाड़ी से फिसल न गई हो।"

अब खोज जारी रखना सम्भव नहीं था। शाम ढलने लगी थी। इसलिए सब लौट पड़े।

थोड़ी देर बाद पहाड़ की गोलाई के साथ पगडंडी घूम जाती थी। यहां ऊबड़-खाबड़ पहाड़ थे जैसे गुफाएं हों। सावधानी से ही चला जा सकता था वहां।

ऐसे में अचानक आवाज आई—"मां ऽ ऽ ऽ ऽ।"

"छमरी ! बाबू जी। यह छमरी की आवाज है...वह यहीं कहीं है।"—ईनी, टीनी बावले हो उठे।

बाबू जी ने रुककर आवाज की दिशा में देखा और आवाज लगाई—"छमरी ऽ ऽ ऽ ऽ।"

उधर से अवाज आई—"मां ऽ ऽ ऽ।"

सब लोग उत्सुक और चौकन्ने होकर आगे बढ़े। यहां कुछ दिखाई नहीं दिया। बाबू जी ने फिर पुकारा ! छमरी की आवाज फिर आई, पर वह थी कहां ?

आवाज के सहारे आगे बढ़ने पर जो देखा उसे चमत्कार ही कहा जाएगा।

पहाड़ की एक गहरी खोह थी। उसके सामने एक बड़ा-सा पत्थर पड़ा था। आवाज अंदर से आ रही थी। पर छमरी अंदर गई कैसे ? लगता है कि शेर से बचने के लिए भागते-भागते छमरी खोह में दुबक गई तब वहां पत्थर नहीं था। उसके थोड़ी देर बाद ही शेर ऊपर से भागा, तो ढीला पड़ा बड़ा-सा पत्थर लुढ़ककर खोह के आगे जा पड़ा। उसके अंदर शेर भी नहीं घुस सकता था।

"भगवान ! तेरी लीला निराली है।"—बाबू जी ने कहा और फिर सबने मिलकर पत्थर लुढ़का दिया।

ईनी, टीनी दोनों छमरी के गले से लिपट गए। छमरी भी उनको चाट-चाटकर प्यार जता रही थी।

●

निशान बने पहचान

—नागेश पांडेय 'संजय'

गुनीराम की चतुराई का जवाब नहीं था। लोग उसकी बुद्धि का लोहा मानते थे। वह शिवनगर में रहता था। वहां का राजा था शिवेंद्रसिंह।

गुनीराम को राजा से थोड़ी-बहुत सहायता मिलती रहती थी। गुनीराम कभी खुद राजा से किसी सहायता के लिए नहीं कहता था!

एक बार गुनीराम के घर में एक मुसाफिर आया। उसने कहा—"मैं बहुत दूर से आया हूं। दूर जाना है। रात हो गई है। अगर आप मुझे यहां ठहरने दें, तो मैं आपका आभारी रहूंगा।"

गुनीराम ने कुछ सोचकर उसे ठहरा लिया। भोजन का समय हुआ। दोनों भोजन के लिए साथ-साथ बैठे। खाते-खाते मुसाफिर बोला—"मैंने आपको नाहक कष्ट दिया। आपने मुझे न जानते हुए भी शरण दी। आप अपना परिचय तो मुझे दीजिए।"

"मैं गुनीराम हूं। यही मेरा परिचय है। और हां, आपका आतिथ्य मेरे लिए कष्ट का नहीं, प्रसन्नता का विषय है।"—गुनीराम ने हंसते हुए कहा।

"तो आप ही वह गुनीराम हैं, जो बहुत चतुर कहे जाते हैं।"—मुसाफिर की आंखें खुली रह गईं। कुछ रुककर उसने कहा—"आपकी चतुराई के किस्से दूर-दूर तक मशहूर हैं। आप दूसरी जगह जाकर अपनी किस्मत क्यों नहीं आजमाते?"

—"मेरी चतुराई अपने राज्य की सेवा कर रही है। इससे बढ़कर और क्या होगा?"

—"आप बुरा न मानें तो एक बात कहूं!"

"जरूर।"—गुनीराम ने सिर हिलाया।

मुसाफिर ने कहा—"सरल और नेक होने के कारण आप ठगे जा रहे हैं। आपके गुणों की यहां कोई कद्र नहीं है।"

गुनीराम ने कुछ सोचकर कहा—"हां भाई, तुम ठीक कहते हो। ऐसा होना ही चाहिए।"

भोजन करके गुनीराम और मुसाफिर लेट गए। काफी देर तक दोनों में बातें होती रहीं। मुसाफिर राजा की कमियां निकालता। गुनीराम भी उसका समर्थन करता। वह बीच-बीच में राजा को भला-बुरा भी कहता।

सुबह हुई। मुसाफिर ने चलने से पहले कहा—"आपने मेरी बातों पर विचार किया?"

—"हां, और अंत में यही सोचा कि आपको धन्यवाद दूं।"

"उसकी आवश्यकता नहीं।"—मुसाफिर मुसकराया।

गुनीराम बोला—"आवश्यकता है।"

"वह किसलिए?"—मुसाफिर चौंका।

—"इसलिए कि आप मेरे जैसे गरीब और मामूली आदमी के घर आए। आप राजा शिवेंद्रसिंह हैं। मैंने आपको कल, भोजन के समय ही पहचान लिया था।"

"अच्छा!"—मुसाफिर के रूप में राजा चहका—"वह कैसे?"

"महाराज, मैं कुछ सोचकर आपकी हां में हां मिला रहा था। क्योंकि मुझे आप पर किसी राज्य का गुप्तचर होने का संदेह हुआ था।"

—"लेकिन मेरे राजा होने का संदेह कैसे हुआ?"

"आपके चेहरे से और कैसे! जब मैं राजा के लिए उलटी-सीधी बातें कहता था, तो आपके चेहरे पर क्रोध के भाव आ जाते थे।"

"मगर तुम्हारा संदेह विश्वास में कैसे बदला?"—राजा ने पूछा।

—"आपके पैर में पड़े निशान से।"

—लेकिन तुम्हें मेरे पैर के निशान की जानकारी कैसे थी?"

—"भला क्यों न होती! मुझ सेवक का स्थान आपके पैरों में ही है।"

गुनीराम की बात सुन, राजा की आंखों से आंसू बहने लगे। उसने गुनीराम के सिर पर आशीर्वाद का हाथ रख दिया। ●

भगवान बद्रीनाथ

पानी की गवाही

—हरि वल्लभ बोहरा 'हरि'

बहुत पुरानी बात है। एक था गांव— बरमसर।

गांव के मुखिया थे राउत जी। चौरासी गांवों तक राउत जी की धाक थी। वह आला दर्जे के होशियार, बुद्धिमान और चतुर थे।

चाहे कैसी भी उलझन हो, लड़ाई हो, टंटा हो, गांव-गवाड़ के लोग तो कोर्ट-कचहरी का रास्ता तक भूल चुके थे। मजाल है,राउत जी से दूध का दूध और पानी का पानी करने में सूई की नोक बराबर भी ऊक-चूक हुई हो।

ठसक राउत जी की भी कम नहीं थी। चौबीस पहर हाथी तो ड्योढ़ी पर बंधा रहता। चारों तरफ सुख का राज था।

ठेठ दरबार तक राउत जी की विरुदावली कही-सुनी जाती। पर राज दरबार में जितने राउत जी के प्रशंसक थे, उससे ज्यादा विरोधी। विरोधियों को राउत जी की इतनी पूछ, कद्र और आवभगत फूटी आंख न सुहाती। खुद महाराज भी राउत जी का सम्मान करते। उनकी बात रखते।

एक बार राज के हाकिम पड़ गए बीमार। वह चले गए छुट्टी पर। अब हाकिम छुट्टी पर हों, तो दरबार का काम कैसे चले ? महाराज ने कुछ दिन के लिए नया हाकिम रखने की सोची। अपने दरबारियों से कहा— "किसी सुयोग्य आदमी का नाम बताओ।" सबने अपनी-अपनी खास पसंद वाले आदमी का नाम सुझाया। पर महाराज को कोई नाम नहीं जंचा।

हाकिम से पुछवाया गया। हाकिम ने कहलाया— 'अन्नदाता,आदमी तो लाखों में एक ही है। वह है बरमसर का ठिकानेदार राउत जी।'

"राउत जी !"– नाम सुनते ही महाराज उछल पड़े।
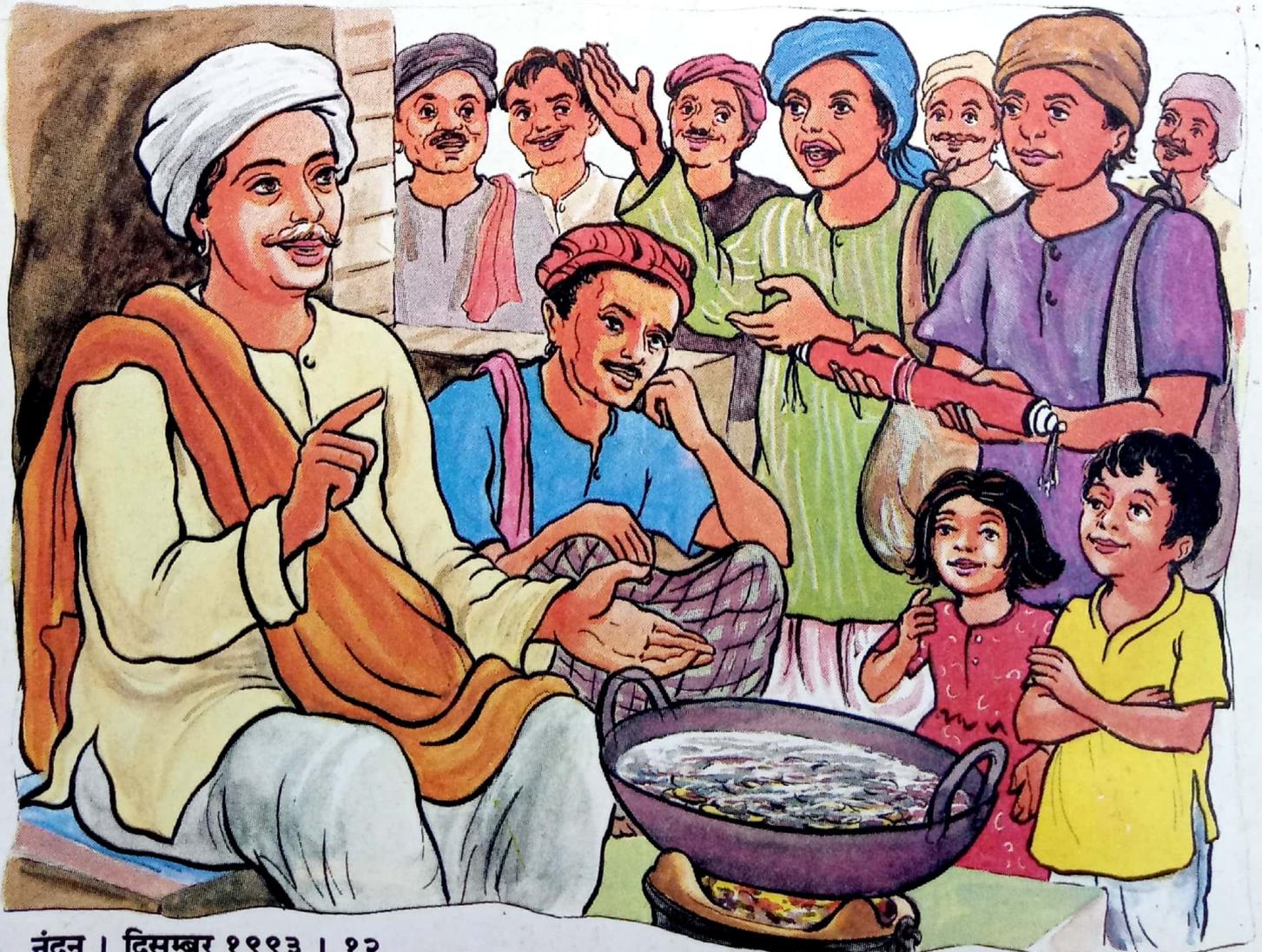
मगर राउत जी की परीक्षा कैसे हो ? उन्होंने अपने खास दो आदमियों को बुला भेजा। सारी बात समझाई।

दोनों आदमी हरजी और भूरजी पहुंचे बरमसर। बरमसर में उनको जो पहला आदमी दिखा, वह था—कंदोई। हरजी और भूरजी कंदोई के पीछे लग गए।

कंदोई ठाकुरद्वारे के दर्शन कर, अपनी पौड़ी पर पहुंचा। कुछ देर में मिठाइयां और नमकीन के थाल चमकाकर, सजा दिए। लगा गरमागरम जलेबियां उतारने।

सवेरे से शाम तक कंदोई मिठाइयां बेचता रहा। हरजी और भूरजी उसे देखते रहे। रात घिरने को आई। कंदोई ने गल्ला गिना, पोटली बांध कमर पर लटकाई और दुकान बढ़ाकर चल दिया।

कंदोई ज्योंही सड़क पर पहुंचा, हरजी और भूरजी ने आंखों ही आंखों में किया इशारा। दोनों ने जल्दी-जल्दी डग भरे। नजदीक पहुंचते ही कंदोई से लगे झगड़ने। हो-हल्ला मच गया। थोड़ी देर में ही अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठी हो गई। किसी ने हरजी से पूछा। पूछना था कि हरजी गरज उठे— "पूछते क्या हो ? यह कंदोई चोर है।"

"इस कंदोई को हम जानते हैं। यह चोर नहीं हो सकता।" —एक पहलवान भीड़ की अगुवाई करता हुआ बोला।

—"हां-हां, कंदोई को हम जानते हैं। तुम ही अजनबी लगते हो। इसलिए तुम बताओ।"

"तो ठीक है, मैं बताता हूं।" भूरजी गम्भीर स्वर में अपने दोनों हाथों से भीड़ को पीछे हटाते हुए बोले— "मैं हूं भूरजी, यह हैं हरजी। हम दोनों तनोट के रहने वाले हैं। यहां बरमसर खरीदारी के लिए आए हैं। हमने अपने पैसे पोटली में रखे थे। अभी थोड़ी देर पहले हमने इस कंदोई की दुकान से मिठाई लेकर खाई थी। थके हुए होने के कारण, हमें यहीं दीवार के पास झपकी लग गई। थोड़ी देर बाद उठे तो देखा, पोटली गायब। उसी समय कंदोई अपनी दुकान

बंदकर जाने लगा। हमने देखा, हमारी पोटली इसके पास थी।"

"झूठ ! झूठ बोलते हैं ये दोनों। मैंने कोई पोटली नहीं चुराई।"— घबराए स्वर में कंदोई बोला।

"तुम्हारे पास क्या सबूत है कि यह पोटली तुम्हारी है ?"— किसी एक ने हरजी से पूछा।

"इस पोटली में इकहत्तर रुपए, चौदह आने हैं।"— भूरजी ने अपने चिरपरिचित गम्भीर स्वर में कहा।

हरजी-भूरजी के दावों को सुनकर, कंदोई के तो देवता ही कूच कर गए। भीड़ में भी सबको सांप सूंघ गया। कुछ के तो मुंह भी खुले के खुले रह गए। किसी के पास हरजी-भूरजी के इस दावे की काट नहीं थी। तब किसी ने धीरे से कहा— "इसका फैसला तो राउत जी ही कर सकते हैं।" हरजी और भूरजी भी भीड़ के साथ राउत जी के घर की ओर चले।

किसी ने पहले से ही राउत जी के सामने सारे टंटे की तफसील सुना दी थी। बात सुनकर, पहले तो राउत जी मुसकराए, फिर इत्मीनान के साथ हुक्का गुड़गुड़ाने लगे। तभी भीड़ समेत सब लोग राउत जी के सामने पहुंच गए। कंदोई उनके पैरों पर गिर पड़ा। बोला— "ठाकर सा ! ये दोनों जाने कहां के चोर-उचक्के हैं। मेरी दिन भर की कमाई पर हाथ साफ करना चाहते हैं। इस गांव की इज्जत अब आपके हाथ में है। यह सारा धन मेरे पसीने की कमाई का है।" कहते-कहते उसकी रुलाई फूट पड़ी।

राउत जी ने कंदोई को आश्वस्त किया।

हरजी-भूरजी भी अपनी बात पर अड़े रहे । भूरजी ने कहा— ''अगर यह धन कंदोई का है, तो फिर हम कैसे जानते हैं कि इसमें पूरे इकहत्तर रुपए, चौदह आने हैं ?''

''मैं कुछ नहीं जानता, इन्हें कैसे मालूम कि इस पोटली में कितना धन है ? हां, एक बात जरूर है । ये दोनों आज सवेरे से शाम तक मेरी दुकान के सामने बैठे थे ।'' —कंदोई ने कहा ।

जब सब बैठ चुके, तो राउत जी ने अंदर से अपने कारिंदे को बुलाया । बुलाकर कहा— ''जाओ और एक कड़ाही में गरम पानी लेकर आओ ।''

कारिंदा गरम पानी की कड़ाही ले आया । राउत जी ने सबके बीचों-बीच सिगड़ी के ऊपर कड़ाही रखवा दी ।

दूसरे ही पल पोटली का सारा धन गिन कर कड़ाही में डाल दिया । गिनती में रकम पूरे इकहत्तर रुपए चौदह आने पाकर, राउत जी भी चौंक उठे ।

थोड़ी ही देर में गरम होते पानी की ऊपरी परत को देखकर राउत जी की बांछें खिल उठीं । कंदोई, हरजी-भूरजी के साथ-साथ सारी भीड़ ने देखा, पानी की ऊपरी परत पर चिकनाई की कुछ बूंदें चमक रही थीं । धीरे-धीरे चिकनाई की मात्रा बढ़ती जा रही थी ।

राउत जी ने फैसला दिया— ''पोटली का धन कंदोई का है । दिन भर मिठाई, नमकीन तौलने से उसके हाथों में चिकनाई लग जाती है । रकम गिनते समय वही चिकनाई कुछ मात्रा में सिक्कों पर लग जाती है, जो गरम पानी के ऊपर आ गई है ।'' कंदोई अपनी ईमानदारी का फैसला सुनकर, खुशी के मारे नाचने लगा । राउत जी ने कड़ाही में से सारा धन निकलवा कर कंदोई को सौंप दिया । सारी भीड़ राउत जी का जय-जयकार करने लगी ।

हरजी और भूरजी मुसकराते हुए, राउत जी और भीड़ को देखते रहे । उनके चेहरे पर चोरी पकड़े जाने और झूठा पड़ जाने की शरम न देखकर, भीड़ को बड़ा आश्चर्य हुआ । वह राउत जी से उन दोनों को कठोर दंड देने की मांग करने लगी ।

राउत जी ने भीड़ को शांत कराया । हरजी-भूरजी की ओर देखकर बोले— ''बोलो, क्या कहना चाहते हो, अपनी सफाई में ? तुम्हारा झूठ तो अभी तक कड़ाही के पानी की सतह पर दिखाई दे रहा है ।''

हरजी ने झुककर राउत जी को सलाम किया । बोले— ''हमें तो पहले से ही मालूम था । यह सारा धन तो कंदोई का ही है ।''

अब राउत जी को गुस्सा आने लगा । तब भूरजी ने अपने कपड़ों में छिपाया हुआ दरबार की मोहर लगा पत्र, राउत जी की ओर बढ़ा दिया ।

पत्र पढ़कर राउत जी मुसकरा उठे । बोले— ''हूं... तो महाराज राउत जी की परीक्षा लेना चाहते थे ।''

''हां, ठाकुर सा ! हाकिम साहब बीमार हैं । उनकी जगह पर कुछ दिन के लिए नया हाकिम बनाया जाना है ।'' गांव वालों की तरफ मुंह करके हरजी ने प्रसन्नता भरे स्वर में घोषणा की— ''बरमसर वासियो ! तुम सबको बधाई हो । राउत जी को हम लोग दरबार की ओर से राज का नया हाकिम बनने के लिए तनोट चलने का न्योता देते हैं ।''

भीड़ ने सुना तो खुशी के मारे चिल्ला उठी— ''राउत जी की जय ।'' उस रात बरमसर में नौबत बजी । ●
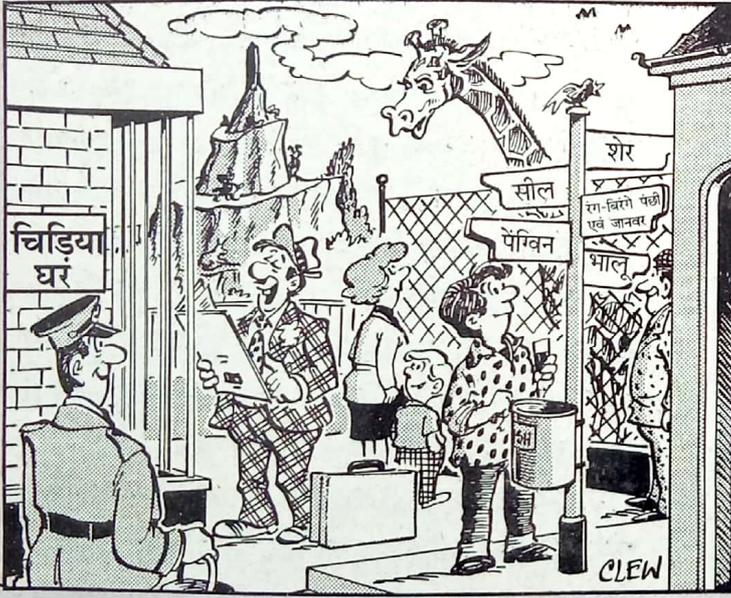
आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस**; ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान**; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि**; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट**।

चित्र-पहेली : १२१

फूल वाला : इस विषय पर चटख रंगों से एक चित्र बनाइए। चित्र के पीछे अपना **नाम, आयु** और **पता** साफ-साफ लिखिए। उसे १५ दिसंबर '९३ तक **नंदन कार्यालय** में भेज दीजिए। चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : मार्च '९४ अंक

कहानी लिखो : १२१

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १५ दिसंबर तक कहानी लिखो-१२१, नंदन, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१ के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : फरवरी '९४ अंक

बोला विधाता

— डा. ओम्प्रकाश सिंहल

हजारों साल पुरानी बात है। फिलीपीन में एक बच्चा रहता था। उसका कोई न था। एकदम अनाथ था वह। भगवान की लीला देखिए। इस अनाथ बच्चे के सिर्फ एक टांग, एक हाथ और एक आंख थी। फिलीपीनी भाषा में ऐसे व्यक्ति को पिकास कहते हैं। इसलिए लोग उसे जुआन पिकास कहकर पुकारते थे।

एक दिन उसके मन में विधाता के पास जाकर यह पूछने का विचार आया कि क्या वह उसे पूरा आदमी नहीं बना सकता ? यह विचार आते ही वह विधाता से मिलने चल पड़ा।

लाठी के बल पर धीरे-धीरे जुआन पिकास चलता गया, चलता गया। कई दिन बाद उसे एक घोड़ा दिखाई दिया। हट्टा-कट्टा होने पर भी वह एक बहुत ही छोटी-सी रस्सी से बंधा था। इससे उसे इधर-उधर घूमने में परेशानी हो रही थी। घोड़े ने हिनहिनाकर जुआन पिकास को रोक लिया। फिर पूछा— "आप कहां जा रहे हैं ?" जुआन पिकास ने उत्तर दिया— "मैं विधाता के पास जा रहा हूं। उनसे पूछूंगा कि क्या वह मुझे इस अधूरे शरीर के बदले में पूरा शरीर नहीं दे सकते ? पूरा शरीर मिलने पर मैं आत्मनिर्भर हो सकूंगा। दूसरों की मदद कर सकूंगा।"

घोड़े ने कहा—"मैं विधाता के पास जाकर एक सवाल पूछना चाहता हूं। लेकिन खूंटे से बंधा हूं, इसलिए जा नहीं सकता। आपसे रस्सी खुलवाकर भी नहीं जा सकता। इससे मेरा मालिक परेशान होगा। मुझे ढूंढ़ता घूमेगा। खाना तक नहीं खाएगा। इसलिए मेरी ओर से आप ही एक सवाल पूछ लीजिएगा।"

जुआन पिकास ने कहा— "कितने नेकदिल हो तुम ! खुद तकलीफ सहकर भी मालिक का ध्यान रखने वाले, बताओ, क्या पूछना है ?"

घोड़े ने कहा— "मैं जानना चाहता हूं कि क्या कभी मुझे मुक्ति मिलेगी ?"

जुआन पिकास घोड़े को आश्वासन देकर आगे चल दिया। काफी दूर निकल जाने पर उसे एक और घोड़ा मिला। एक लम्बी रस्सी से बंधा हुआ—एकदम मरियल। शरीर की हड्डियां निकली हुईं। उसने भी हिनहिनाकर जुआन पिकास को रोका। फिर यह पूछा कि वह कहां और क्यों जा रहा है ? इसके बाद बोला— "अरे मुसाफिर ! रस्सी खोलकर मुझे भी अपने साथ ले चल। विधाता से जानना चाहता हूं कि इस जालिम आदमी से मेरा पिंड कब छूटेगा ?"

जुआन पिकास ने कहा— "भाई, मैं ऐसा नहीं करूंगा। दूसरे की चीज को हाथ लगाना भी पाप है। फिर तुम्हें यहां न देखकर तुम्हारा मालिक परेशान होगा ?" घोड़े ने कहा— "मुझे इसकी कोई परवाह नहीं, हुआ करे परेशान। वह मेरे लिए नहीं, अपने काम के लिए परेशान होगा।"

जुआन पिकास ने कहा— "तुम चिंता मत करो। मैं तुम्हारा नाम ले विधाता से यह प्रश्न पूछ लूंगा। जो उत्तर मिलेगा, उसे लौटते समय बता दूंगा।"

जुआन पिकास चलते-चलते एक चौराहे पर पहुंचा। चौराहे के ठीक बीचोंबीच एक घर बना था।

जुआन पिकास का खूब आदर-सत्कार हुआ। बातें करते समय उसने गृहस्वामी को अपनी यात्रा का उद्देश्य बताया। गृहस्वामी ने विधाता से अपनी मुक्ति के बारे में भी पूछने का अनुरोध किया। विधाता द्वारा

दिया गया उत्तर लौटती बार बताकर जाने की विनती की। जुआन पिकास ने उससे भी वायदा किया। फिर आगे चल दिया।

अब जुआन पिकास एक पहाड़ी पर पहुंचा। वहां उसे एक झरना बहता दिखाई दिया। ऐसा लगता था, जैसे पानी नहीं, पिघली हुई चांदी बह रही हो। झरने के पास एक आलीशान महल था। महल में रहता था एक अत्याचारी आदमी। पास से गुजरने वाले हर आदमी को वह दबोच लेता। जब जुआन पिकास उस महल के पास से गुजरा, तब वह भी दबोच लिया गया। महल में ले जाया गया। लेकिन उस आदमी के मन में न जाने क्या विचार आया कि उसने जुआन पिकास को कोई यातना नहीं दी। काफी देर तक उसके शरीर पर हल्के-हल्के हाथ फेरता रहा। फिर पूछा कि वह कहां और किस काम से जा रहा है? उत्तर सुनने के बाद उसने कहा— "भाई! जरा विधाता से यह पूछना कि क्या कभी मुझे भी इस जन्म से मुक्ति मिल सकेगी?" जुआन पिकास ने वचन दिया कि वह विधाता से उसका प्रश्न जरूर पूछेगा, उत्तर वह लौटती बार बताता जाएगा।

धीरे-धीरे चलते हुए जुआन पिकास एक दिन विधाता के पास पहुंच ही गया। विधाता ने उससे वहां आने का कारण पूछा। जुआन पिकास ने कहा—"मैं यह विनती करने आया हूं कि मुझे अधूरे शरीर के

बदले में पूरा शरीर दे दिया जाए।" विधाता ने कहा कि उसे अधूरा शरीर इसलिए दिया गया था, ताकि उसके स्वभाव की परीक्षा ली जाए। परीक्षा में वह परोपकारी तथा दूसरों पर दोषारोपण न करने वाला सिद्ध हुआ है। इसलिए अब उसका शरीर बदल दिया जाएगा। वह अपनी आंखें बंद कर ले।

जुआन पिकास ने पांच मिनट बाद अपनी आंखें खोलीं। अपना शरीर देखकर उसे बहुत खुशी हुई। वह पूरा आदमी बन गया था— दो आंखें, दो हाथ और दो पैरों वाला आदमी। वह खुश था कि अब लोग उसके नाम के साथ पिकास नहीं जोड़ेंगे। लेकिन इस खुशी के बावजूद वह वहीं बैठा रहा। विधाता ने कहा— "अब घर क्यों नहीं जाते? क्या चाहते हो?"

जुआन ने कहा— "जब मैं यहां आ रहा था, तब मुझे रास्ते में कुछ प्राणी मिले थे। प्रत्येक ने यह जानना चाहा था कि उसकी मुक्ति होगी या नहीं? मैंने उन्हें वचन दिया है कि आपसे उनके प्रश्न का उत्तर जरूर पूछूंगा। जो उत्तर मिलेगा, वह लौटती बार बताता जाऊंगा।"

विधाता ने कहा— "अच्छा, सुनो! सबसे आखिर में मिलने वाले दुष्ट व्यक्ति को मुक्ति नहीं मिलेगी। उसके पहले मिलने वाला परोपकारी व्यक्ति वास्तव में मुक्ति का हकदार है। अपने कर्तव्य का पालन न करने वाले मरियल घोड़े को मुक्ति नहीं मिल सकती। अपने स्वामी के सुख-दुःख की चिंता करने वाले घोड़े को मुक्ति जरूर मिलेगी।"

जुआन ने लौटते समय सब प्राणियों को विधाता द्वारा दिया गया उत्तर बता दिया। उत्तर सुनकर बाकी किसी ने तो कुछ नहीं कहा, किंतु परोपकारी व्यक्ति बोला— "मुझे पक्का विश्वास था कि झरने के किनारे आलीशान महल में रहने वाले दुष्ट व्यक्ति को मुक्ति मिल ही नहीं सकती!"

लेकिन हुआ कुछ और। परनिंदा के कारण परोपकारी व्यक्ति को नरक मिला और अपनी दुष्टता महसूस करने वाले व्यक्ति को स्वर्ग। •

(फिलीपीन की लोक कथा)

कपास का फूल

— शशिकांत लाल

बहुत समय पहले की बात है। वीरसेन नाम का एक राजा राज करता था। एक समय राजगुरु सुखदेव गंगा स्नान करने गए। वहीं पर एक धोबिन कपड़े धो रही थी। गुरु सुखदेव ने कहा— "तुम जरा रुक जाओ। मुझे स्नान करना है। गंदे कपड़ों के मैल से जल अशुद्ध हो रहा है।" इस पर धोबिन ने मुसकराते हुए कहा— "दूसरे घाट पर चले जाइए।" सुखदेव दूसरे घाट पर स्नान करने लगे। स्नान कर, सूर्य को अर्घ्य देते हुए कह रहे थे— "वाह ! गंगा जल से बढ़कर दूसरा जल ही नहीं।"

यह सुनकर धोबिन बोली— "कहने वाला झूठा।" सुखदेव जी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने फिर अपने शब्द दोहराए। इस बार भी धोबिन ने वही बात कही।

सूर्य को देखकर सुखदेव जी ने कहा— "वाह ! सूर्य ज्योति से बढ़कर दूसरी कोई ज्योति नहीं।" धोबिन फिर बोल पड़ी— "कहने वाला झूठा।" सुखदेव उस बात पर ध्यान न देकर सोचने लगे— 'हो सकता है, किसी दूसरी बात के बारे में धोबिन कह रही हो।' लेकिन जितनी बार सुखदेव जी ने अपनी बात कही, धोबिन ने वही बात दोहराई। बार-बार धोबिन के इस व्यवहार से सुखदेव जी का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उसी समय राजकुमार भी हाथ में गुलाब का फूल लेकर आए। मां गंगा को फूल चढ़ाकर पूजन किया। सुखदेव जी बोल पड़े— "वाह ! गुलाब के फूल से सुंदर, दूसरा कोई फूल नहीं।"

धोबिन सुन ही रही थी। फिर बोली— "कहने वाला झूठा।" इस पर सुखदेव जी का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। क्रोध से कांपने लगे। राजकुमार ने सहारा देकर उन्हें जल से बाहर निकाला। उसी समय राजगुरु के मुंह से निकल पड़ा— "वाह ! पुत्र बल से बढ़कर दूसरा कोई बल नहीं।"

धोबिन ने इस बात को भी काट दिया।

राजा का दरबार लगा हुआ था। राजगुरु का तमतमाया चेहरा देखकर पूछा—"गुरुदेव, क्या बात है ? आप किस बात से नाराज हैं ?"

"महाराज, आपके राज्य में एक धोबिन है, जो हर बात को काटती है।"—कहते हुए सुखदेव जी ने सारी घटना सुना दी।

राजा ने अपने सिपाही को भेजकर धोबिन को बुलाया। धोबिन डर रही थी। उसे देखकर राजा ने कहा— "सेनापति ! धोबिन को फांसी पर लटका दिया जाए।" धोबिन हाथ जोड़कर कहने लगी — "महाराज, मेरे किस अपराध का दंड दे रहे हैं ?" मंत्री ने कहा— "आज गुरु महाराज स्नान करने गए हुए थे, तो इन्होंने कहा था— गंगा जल से बढ़कर, दूसरा जल नहीं। तब तुमने क्या कहा ?"

धोबिन ने कहा— "महाराज, मैंने यही कहा था, कहने वाला झूठा।"

"क्या तुम साबित कर सकती हो ?"— राजा ने कहा।

"हां महाराज।" धोबिन कहने लगी— "यह ठीक है कि गंगा जल अत्यंत पवित्र है, परंतु गंगा जल से बढ़कर वह जल है, जो प्यासे की प्यास दूर करता है। अगर जोर से प्यास लगी हो, गंगा जल वहां

न हो, प्यास से जान जा रही हो, उस समय नहर, कुआं, तालाब किसी का जल हो, वह गंगा जल से श्रेष्ठ है ।'' यह बात सुनकर सब लोग वाह-वाह करने लगे ।

''महाराज, इसका पहला अपराध माफ किया जाए ।''— कई दरबारियों ने एक साथ कहा ।

राजा ने कहा— ''ठीक है, लेकिन दूसरे अपराध में तुम नहीं बच सकतीं ।''

—''तुमने इस बात का खंडन क्यों किया कि सूर्य ज्योति से बढ़कर कोई ज्योति नहीं ?''

— ''हां महाराज, जो अंधा है उसके लिए सूर्य की ज्योति किसी काम की नहीं । अतः आंख की ज्योति से बढ़कर कोई ज्योति नहीं है ।'' धोबिन का जवाब सुनकर सब लोग कहने लगे— ''महाराज, इसका दूसरा अपराध भी माफ किया जाए ।''

राजा ने कहा— ''तुमने इस बात को भी काटा कि गुलाब के फूल से सुंदर कोई फूल ही नहीं है ।''

''हां महाराज, यह भी झूठ है, क्योंकि गुलाब से कोई माला गूंथकर पहन सकता है । कोई बालों में लगाकर सुंदर लग सकता है, लेकिन गुलाब से शरीर को नहीं ढक सकते ? इसलिए गुलाब के फूल से भी सुंदर कपास का फूल है, जिससे वस्त्र बनाकर पहने जाते हैं ।''— धोबिन बोली ।

धोबिन की यह बात भी सही मानी गई। सभी 'वाह ! वाह !' करने लगे । राजा ने पुनः कहा— ''अच्छा, यह बताओ—पुत्र बल के समान कोई बल नहीं, उस पर तुमने क्यों कहा था कि कहने वाला झूठा ?''

— ''हां महाराज ! पुत्र बल से कोई काम नहीं चलता यदि आत्म बल न हो । वह शक्तिहीन हो जाता है । हे राजन ! अगर मैं गलत कह रही हूं तो फांसी पर चढ़ने के लिए तैयार हूं ।''

धोबिन के जवाब सुनकर सभी चकित थे । राजगुरु सुखदेव भी धोबिन की चतुराई से बहुत प्रभावित हुए । उस दिन से राजा ने धोबिन को महारानी की सेवा में रख लिया । ●

फैसला

—शिवकुमार गोयल

तब उदयपुर के महाराणा थे फतहसिंह । एक बार उन्हें पता चला कि सियारवां गांव के किसान लगान नहीं देते । उन्होंने आदेश दिया कि लगान वसूल किया जाए ।

सियारवां गांव में ब्राह्मण रहते थे । उनका कहना था—''हम लगान क्यों दें ? यह गांव तो अनेक वर्ष पूर्व महाराणा सज्जन सिंह जी ने हमारे पुरखों को दान में दिया था । इतना ही नहीं, हमें दक्षिणा के रूप में बारह सौ रुपए भी प्रति वर्ष मिलते थे, जो अब बंद हो गए हैं । हमें दक्षिणा फिर से मिलनी चाहिए ।''

सियारवां के कुछ समझदार माने जाने वाले लोग मिलकर उदयपुर दरबार में पहुंचे । महाराणा जी से फरियाद की । कहा—''अन्नदाता, हमारे पुरखे बताया करते थे कि एक बार उदयपुर राज्य में भयानक सूखा पड़ा था । तब महाराणा सज्जनसिंह जी ने वर्षा के लिए यज्ञ करवाया था । यज्ञ पूर्ण होते ही वर्षा आरंभ हो गई थी । इससे प्रसन्न होकर महाराणा जी ने सियारवां गांव हमारे पुरखों को दान में दे दिया था । साथ में बारह सौ रुपए प्रति वर्ष दक्षिणा के रूप में तय हुए थे । महाराणा जी की जय हो । हमें न्याय चाहिए ।''

महाराणा फतहसिंह ने ध्यान से फरियाद सुनी । फिर बोले—''क्या सियारवां के दान का कोई प्रमाण है आप लोगों के पास ? कोई आदेश पत्र ? उसे दरबार में पेश कर दें, तो लगान की वसूली रोक दी जाएगी, अन्यथा सियारवां के निवासियों को कर देना होगा।''

महाराणा फतहसिंह की बात सुनकर सियारवां से

आए लोगों के चेहरे उतर गए। दिखाने के लिए तो उनके पास कुछ भी नहीं था। वैसा दान-पत्र तो किसी ने कभी नहीं देखा था। बस, गांव के बड़े-बूढ़े ही यह बात बताया करते थे। वे लोग चुपचाप उदयपुर से सियारवां लौट आए।

अगले दिन गांव में पंचायत बैठी। उदयपुर से लौटे गांव वालों ने पूरी बात बताई। कहा—"अगर किसी के पास सियारवां का दानपत्र हो, तो उसे ले आए। उसके बिना महाराणा जी हमारी बात सुनने वाले नहीं। दानपत्र न मिला, तो गांव को लगान देना ही पड़ेगा।"

यह बात सुनकर वहां सन्नाटा छा गया। क्योंकि दानपत्र सचमुच किसी के पास नहीं था। सब कहने लगे—"यह तो बुरा हुआ। महाराणा तो अब हमसे लगान वसूल करके रहेंगे।"

तभी एक व्यक्ति खड़ा हुआ। उसने कहा—"हमारे पुरखों की बात झूठी नहीं हो सकती। दानपत्र कहीं न कहीं होगा जरूर। इस समय अगर नहीं मिल रहा है, तो हम क्या करें।"

मुखिया बोला—"एक और बड़ी अदालत भी है, जिसके दरवाजे हम खटखटा सकते हैं।"

"कौन सी बड़ी अदालत है ?"—कई लोग एक साथ बोल उठे।

"अंग्रेज बहादुर की, और किसकी !"—मुखिया ने कहा। "हमें वहां भी इस मामले को उठाना चाहिए।" बस, फैसला हो गया।

उन दिनों उदयपुर में कालोन इलियट बड़े अंग्रेज अधिकारी थे। गांव वालों का एक प्रतिनिधि मंडल लेकर मुखिया कालोन इलियट से मिला। इलियट ने ध्यान से पूरा मामला सुना, फिर आश्वासन दिया—"घबराने की कोई बात नहीं है। मैं महाराणा जी के साथ तुम्हारे गांव में आऊंगा। खुद जांच करूंगा।"

मुखिया तथा दूसरे गांव वाले संतुष्ट होकर सियारवां लौट गए। गांव वाले हर दिन प्रतीक्षा में रहते कि इलियट और महाराणा फतहसिंह किस दिन गांव में आते हैं।

एक दिन गांव वालों को सूचना मिली कि महाराणा फतहसिंह और कालोन इलियट एक सप्ताह बाद गांव में पधारेंगे। गांव वाले सक्रिय हो गए। पूरे सियारवां में सफाई की गई। मकानों की पुताई हुई। देखते-देखते गांव का रूप निखर गया। महाराणा जी और कालोन इलियट के स्वागत की पूरी तैयारी की गई। सियारवां को अपने महाराणा का स्वागत करने का अवसर पहली बार मिल रहा था। पर गांव वालों के मन में धुकधुकी भी थी। 'अगर अंग्रेज बहादुर ने भी दानपत्र का प्रमाण मांगा, तो फिर क्या होगा ?'—यह चिंता सभी को परेशान कर रही थी।

निश्चित तिथि को महाराणा फतहसिंह और कालोन इलियट सियारवां आ पहुंचे। साथ में पूरा तामझाम था। दूर-दूर के गांवों के निवासी भी महाराणा के दर्शन करने आए थे। गांव वालों ने अपने महाराणा का स्वागत किया। इलियट की अगवानी की और उन्हें सम्मानपूर्वक सरोवर के तट पर ले गए।

मेहमानों के बैठने का प्रबंध वहीं किया गया था। थोड़ी दूर पर गांव वाले बैठे थे। सब उत्सुक थे कि देखें लगान के बारे में आज क्या फैसला होता है। कालोन इलियट ने गांव के मुखिया को सामने बुलाया। उसे पूरा मामला बताने को कहा।

मुखिया ने इलियट को वही सब कह सुनाया, जो महाराणा जी के सामने बताया था। इस पर इलियट ने पूछा—"क्या आपके पास कोई लिखित प्रमाण है जिससे पता चल सके कि गांव महाराणा ने दान में दिया था ?" यह सुनते ही मुखिया का सिर झुक गया। वह कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं था।

तभी एक बूढ़ा ब्राह्मण उठ खड़ा हुआ। लाठी टेकता भीड़ से निकलकर महाराणा जी की ओर बढ़ा। बोला—"हमारे दादा-परदादा बताया करते थे कि महाराणा जी ने दान की पुष्टि करने वाला एक ताम्रपत्र दिया था, लेकिन अब उस तामपत्र के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। गांव में वह किसी के पास नहीं है। न जाने कहां खो गया।"
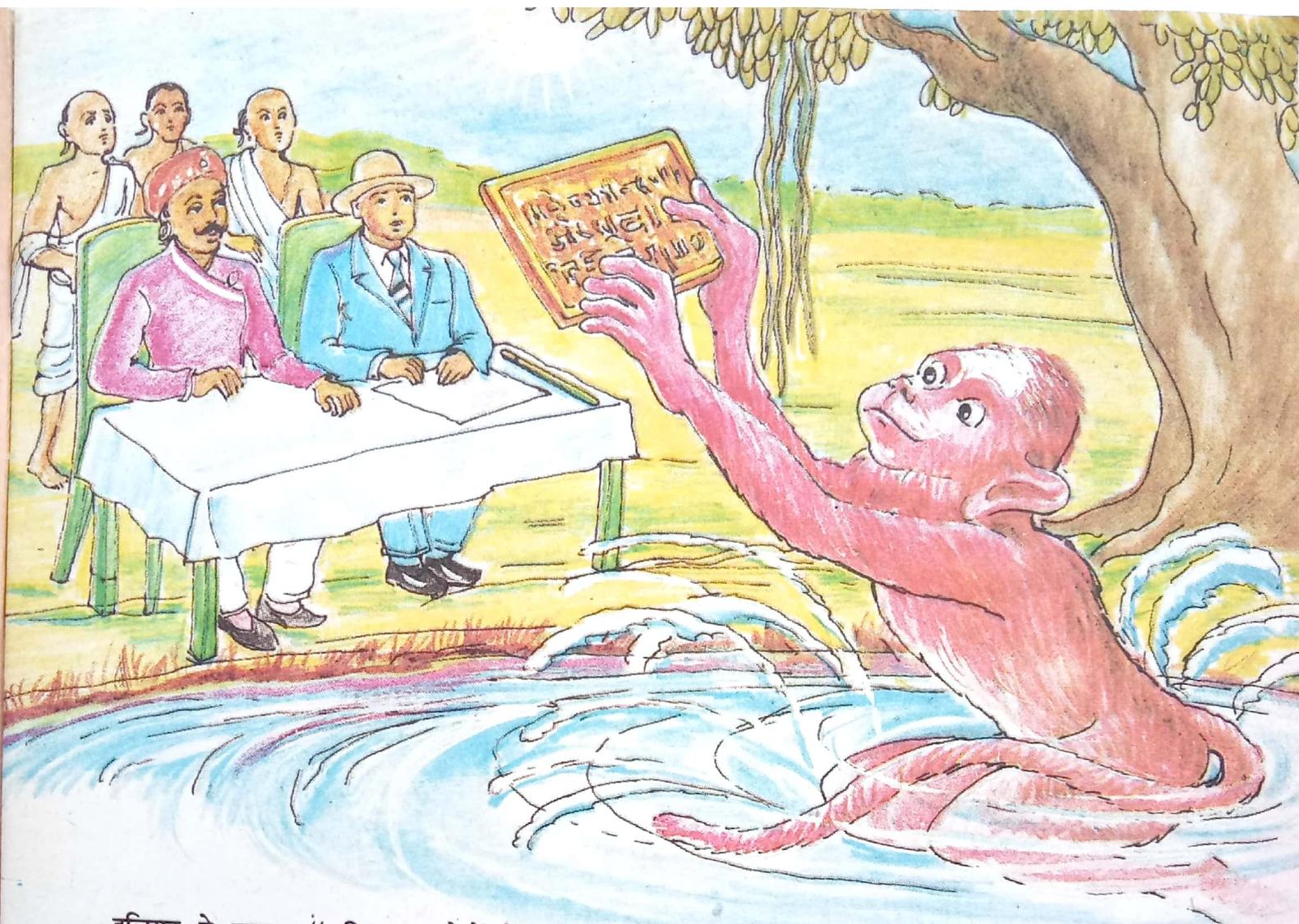
इलियट ने कहा—"यदि तुम लोगों के पास लिखित प्रमाणपत्र नहीं है, तो फिर निर्णय महाराणा के पक्ष में जाएगा। तुम लोगों को लगान देना होगा।"

बूढ़े ब्राह्मण ने यह सुना, तो उसका शरीर कांपने लगा। उसने सूर्य की ओर देखा और हाथ जोड़कर बोला—"हे सूर्य देवता, आप साक्षी हैं, हमारे पुरखे झूठे नहीं थे। हमारा पक्ष सच्चा है। हमारी सहायता करो।"

कुछ देर बाद बरगद के वृक्ष में खड़खड़ाहट- सी हुई और एक विशालकाय बंदर नीचे उतरा। फिर सबके देखते-देखते वह सरोवर में कूद पड़ा। जब वह पानी से बाहर आया, तो उसके हाथ में एक ताम्रपत्र था। सब लोग चुपचाप देखते रहे – यह तो चमत्कार ही था। बंदर ने ताम्रपत्र इलियट और महाराणा जी के सामने रख, मेज पर डाल दिया और पेड़ पर चढ़कर आंखों से ओझल हो गया।

इलियट ने ताम्रपत्र देखा और उसे महाराणा फतहसिंह की ओर बढ़ा दिया। महाराणा ने ताम्रपत्र देखा और माथे से लगा लिया। उस ताम्रपत्र पर महाराणा के पूर्वज सज्जनसिंह के हस्ताक्षर थे और ताम्रपत्र में सियारवां ग्राम के दान का स्पष्ट उल्लेख था। अब इस बारे में कोई संदेह नहीं रह गया था।

महाराणा फतहसिंह ने आदेश दिया—"सियारवां गांव राज्य की सम्पत्ति नहीं है, यह बात इस ताम्रपत्र से प्रमाणित हो गई है। यह बड़े चमत्कारिक ढंग से हमारे सामने आया है।"

अभी महाराणा यह कह ही रहे थे कि वह बंदर फिर पेड़ से नीचे उतरा। मेज के पास आकर ताम्रपत्र उठाया और सरोवर में फेंककर फिर से पेड़ पर जा चढ़ा।

सब हैरानी से देखते रह गए, लेकिन फैसला हो चुका था। इसके बाद सियारवां के निवासियों से फिर कभी लगान नहीं मांगा गया। बंद हुई दान राशि भी मिलने लगीं। यह घटना सन् १९२२ की है। ●

प्रयाग और लखनऊ में

नंदन चित्रकला प्रतियोगिताएं

इलाहाबाद में सर्दी आई : आनंद जायसवाल, इलाहाबाद

मदारी आया : श्रद्धा अग्रवाल, इलाहाबाद

हमारा बाग : देवीना चड्ढा, इलाहाबाद
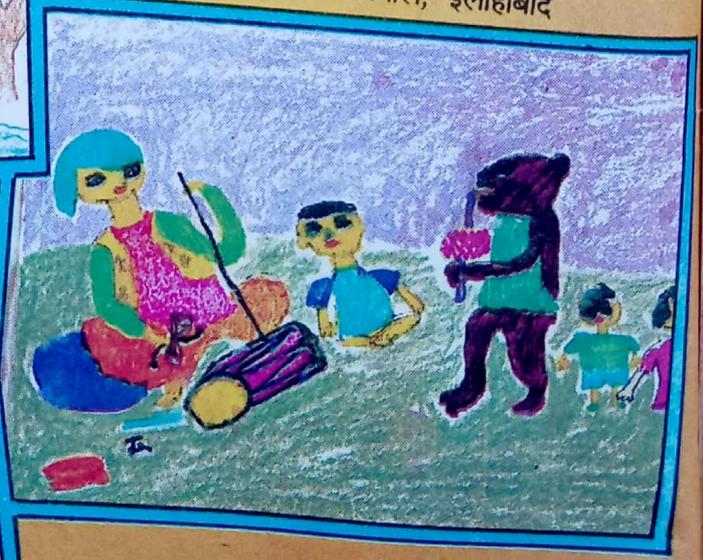
मेला : झरना मालवीय, इलाहाबाद
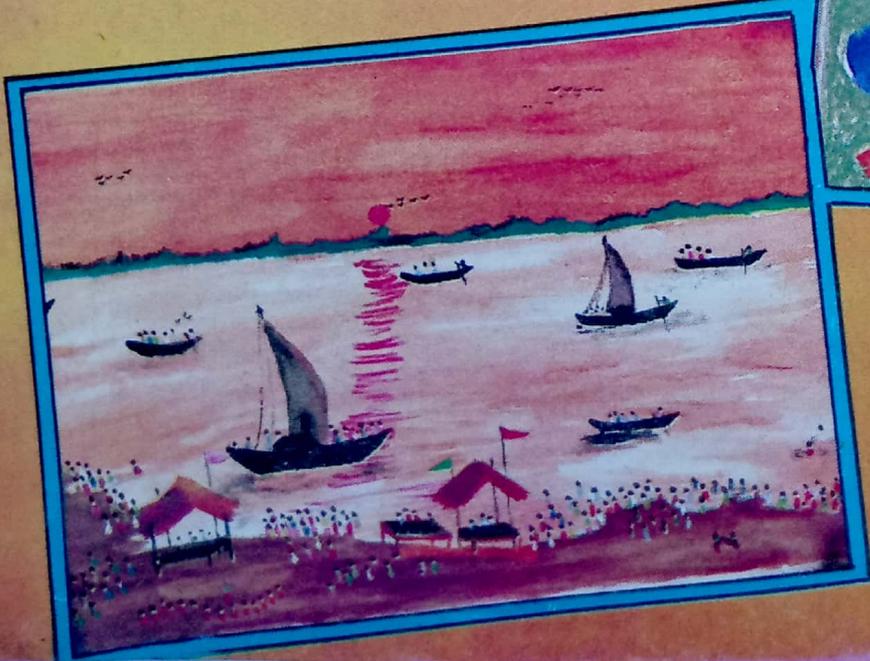
दीपावली : अंजलि उपाध्याय, लखनऊ

शहर में भीड़-भाड़ : परेश तिवारी, लखनऊ

बसंत का मौसम : गोल्डन गर्ग, लखनऊ

पिकनिक : शिलाई मित्तल, लखनऊ
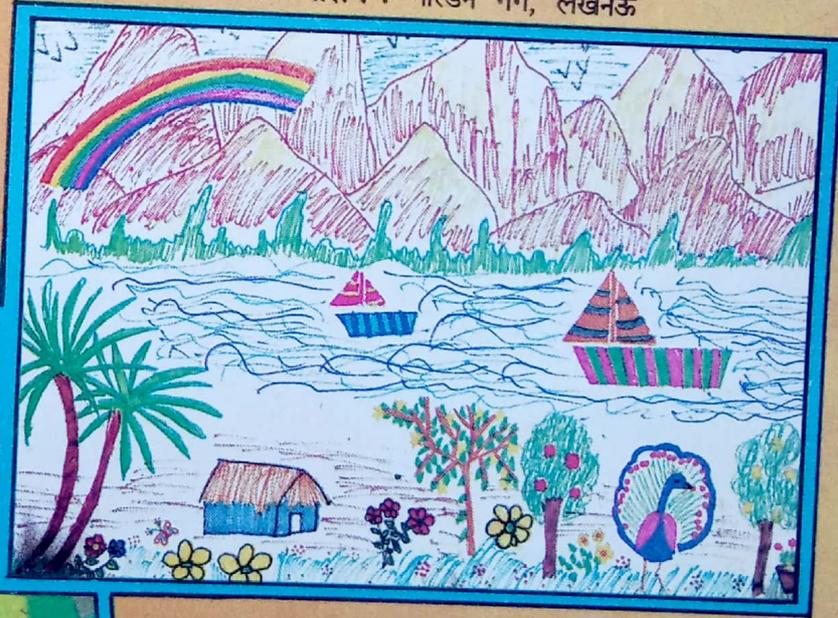
हजारों बच्चों ने भाग लिया।
नंदन के पाठकों के लिए
इन प्रतियोगिताओं की
एक झलक...
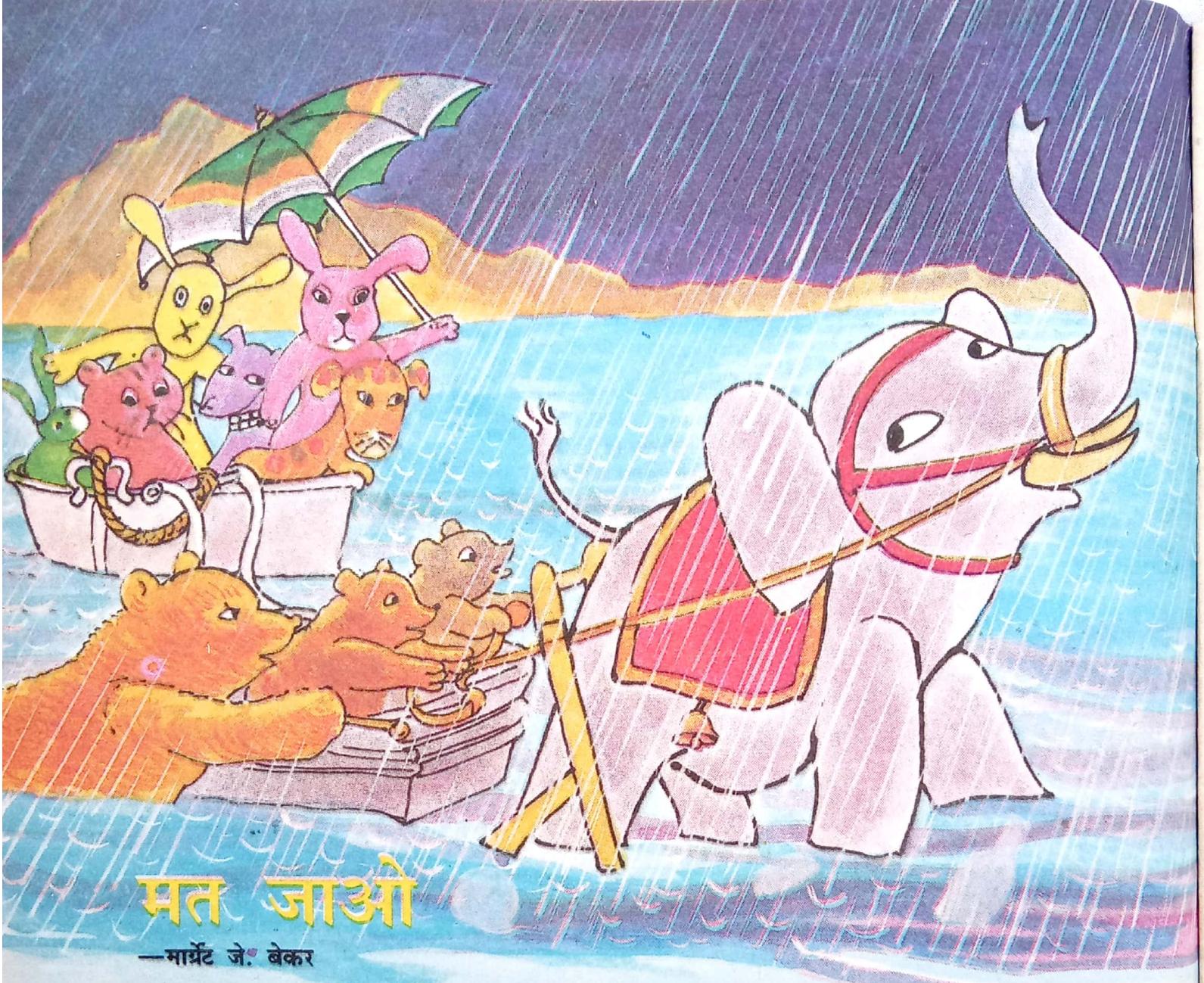
मत जाओ

—मार्ग्रेट जे. बेकर

ये तीन खिलौना भालू थे— बूट्स, स्लिपर्स और साक्स। तीनों,बच्चों का सामान बेचने वाली दुकान में रखे हुए थे। जब लोग वहां खरीदारी करने आते, तो बच्चे खिलौनों से खेलते थे। लेकिन एक दिन तीनों को दुकान से हटा दिया गया। वे पुराने पड़ गए थे। उनके स्थान पर नए खिलौने आ गए।

अब बेचारे तीनों भालू क्या करें? वे डर रहे थे कि कहीं उन्हें उठाकर कूड़े के ढेर में न फेंक दिया जाए। पर उनका भाग्य अच्छा था। दुकान में काम करने वाली पौली ट्रिकेट भालुओं को अपने घर ले आई। तीनों भालू नए घर में आकर खुश थे।

घर में पौली के तीन छोटे भाई-बहन और थे— सिमोन, बिल तथा आउड्रे। वे उपहार में खिलौना भालू पाकर खुश थे। प्यार से उनके साथ खेलते थे।

एक दिन तीनों भालू खिड़की के सामने बैठे थे। वहां से सड़क की चहल-पहल का मजा लिया जा सकता था। तभी सामने से एक कूड़ा गाड़ी गुजरी। उसमें एक नन्हा खिलौना भालू पड़ा था। बूट्स ने उसे देख लिया। उसने स्लिपर्स से कहा— "मैंने अभी-अभी एक भालू को कूड़ा गाड़ी में पड़े देखा है, बेचारा। उसे ले जाकर कूड़े के ढेर पर फेंक दिया जाएगा। हमें कुछ करना चाहिए।"

साक्स ने कहा— "हां, हम उसे यों नहीं छोड़ सकते। कितनी बुरी बात है। नए खिलौनों को इतने ध्यान से रखा जाता है, लेकिन कुछ समय बाद उन्हें बेदर्दी से फेंक दिया जाता है। कोई नहीं सोचता कि

पुराने और बूढ़े खिलौनों को भी एक घर चाहिए।''

स्लिपर्स बोली— ''सब हमारे जैसे भाग्यवान नहीं होते। इस घर में हमारा कितना ध्यान रखा जाता है।''

तीनों बहुत देर तक सोचते रहे कि उन्हें क्या करना चाहिए। कुछ देर बाद होब्सन नामक बिल्ली वहां आई। वह भालुओं की दोस्त थी। साक्स ने पूछा— ''क्या तुम्हें पता है, शहर का कूड़ा कहां डाला जाता है?''

''हां, मालूम है। मुझे पूरे शहर की एक-एक बात पता रहती है।''— और होब्सन ने भालुओं को वह ठिकाना बता दिया। जब घर में कोई नहीं था, तो तीनों भालू बाहर आ गए और चुपचाप एक बस में चढ़ गए। उन पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। सबको अपनी पड़ी थी। ऐसे में छोटे-छोटे खिलौना भालुओं पर कौन ध्यान देता भला। जिसने देखा भी तो यही समझा, शायद कोई बच्चा अपने खिलौने बस में भूल गया।

शहर के बाहरी हिस्से में कूड़ाघर था। चारों और कंटीले तार लगे थे। तीनों भालू वहां जा पहुंचे। उनकी आंखें अपने जैसे भालू को खोज रही थीं। लेकिन वहां तो बहुत सारे पुराने खिलौने पड़े थे। भालू, बंदर, गुड़िया, हाथी, खरगोश और भी न जाने कैसे-कैसे खिलौने। टूटे-फूटे, बेसहारा, बेघर खिलौनों का संसार था वहां।

उन्हें देखकर साक्स ने बूट्स से कहा— ''क्या इन सभी को हमारी तरह घर नहीं मिल सकता? अगर हम इन्हें अपने साथ घर ले चलें, तो कैसा रहे?''

बूट्स ने कहा— ''कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो। भला हम इन सबको अपने साथ कैसे ले जा सकते हैं? कहीं ऐसा न हो कि हमें ही उस घर से निकाल दिया जाए।'' फिर वे तीनों उस भालू को ढूंढ़ने लगे, जिसे बूट्स ने कूड़ा-गाड़ी में पड़े देखा था। आखिर वह भालू उन्हें दिखाई दे गया। उसका नाम था बोस्टन। वह देखने में एकदम नया लगता था। पता चला-बच्चों ने उसे गलती से कूड़े में फेंक दिया था।

साक्स ने बूट्स से कहा— ''भालू तो मिल गया। अब उसे ले कैसे जाएं? और फिर क्या हमें सबसे नहीं पूछना चाहिए। सबको यहां छोड़कर एक को ले जाना क्या ठीक लगेगा?''

स्लिपर्स बोली— ''हम सबसे पूछ लेते हैं। पहले यह तो पता चले कि यहां से कौन-कौन चलना चाहता है। फिर आगे की बात सोचेंगे।''

कुछ खिलौने उनके साथ चलने को तैयार हो गए। सचमुच वहां बहुत परेशानी थी। सब खुले में रहते थे। गत्ते के टूटे-फटे डिब्बों में उनके घर थे। गर्मियां तो खैर जैसे-तैसे बीत जाती थीं, पर बरसात और सर्दियों में बहुत परेशानी होती थी।

अब समस्या थी कि खिलौनों को ले कैसे जाएं। तभी किसी ने हनीबाल हाथी का नाम लिया। विशालकाय हनीबाल चुपचाप एक तरफ खड़ा था और उनकी बातें सुन रहा था। उसने कहा— ''भई, मैं तो यहीं ठीक हूं। आखिर दुनिया में अमीर-गरीब सभी हैं। कुछ महलों में रहते हैं, तो कई खुले में सोने पर मजबूर हैं। और फिर जब हम सभी को टूटा-फूटा, बेकार समझकर यहां फेंक दिया गया है, तो भला अब कौन अपने घर में रखेगा?''

हनीबाल की बात सुनकर वहां कुछ देर के लिए मौन छा गया। सब सोच में डूब गए। लेकिन फिर यह फैसला हुआ— जो खिलौना जाना चाहे, भालुओं के साथ चला जाए। हनीबाल ने कहा— ''मेरे पीछे एक गाड़ी बांध दो। उसमें यात्री बैठ जाएं। फिर मैं

गाड़ी को खींचता हुआ ले चलूंगा।''

सबको हनीबाल का सुझाव पसंद आया। वह एक पहिएदार पटरे पर खड़ा था। गाड़ी को पटरे से बांध दिया गया। स्लिपर्स, बूट्स और साक्स के साथ-साथ और भी कई खिलौने उसमें बैठ गए। उन्होंने अपने साथियों से विदा ली, फिर हनीबाल उन्हें लेकर चल दिया। जाने वाले खुश थे और पीछे रह गए खिलौने उदास। वे सोच रहे थे— 'क्या हम अपने इन साथियों से फिर कभी मिल पाएंगे ?'

रात के अंधेरे में खिलौना गाड़ी पौली ट्रिंकेट के घर जा पहुंची। तीनों भालू अंदर चले गए, फिर उन्होंने बाकी सबको एक-एक करके अंदर बुला लिया। घर में सब सो गए थे। सब खिलौने आपस में धीरे-धीरे बातें करते रहे। योजना बन रही थी कि दिन के समय मेहमान खिलौनों को कहां रखा जाए, ताकि घर वालों को कोई संदेह न हो।

इसी तरह कई दिन बीत गए। सिमोन, बिल और आउड्रे कभी-कभी चक्कर में पड़ जाते। उन्हें घर में अपरिचित खिलौने दिखाई देते, जो तुरंत कहीं गायब भी हो जाते। वे सोचते— 'आखिर एकाएक घर में इतने नए खिलौने कहां से आ गए ? कौन लाया उन्हें ?'

एक सुबह हनीबाल ने साक्स से कहा— ''मित्र, अब मैं जाना चाहूंगा।'' साक्स ने कहा—''अब तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं। तुम यहीं रहोगे, हमारे साथ। आखिर यहां क्या परेशानी है तुम्हें ?''

और हनीबाल को साक्स की बात माननी पड़ी। सिमोन, बिल तथा आउड्रे हनीबाल को पाकर बहुत खुश थे। पौली ने छुट्टी वाले दिन हनीबाल की पोशाक संवार दी। अब वह नए जैसा लगने लगा था। तीनों बच्चे अक्सर ही हनीबाल से खेलते थे। कभी-कभी भालुओं को ऐसा लगता- जैसे हनीबाल ने इस घर में उनकी जगह छीन ली हो। फिर अपनी ईर्ष्या पर खुद ही लज्जा से गड़ जाते। आखिर उन्होंने स्वयं ही तो हनीबाल को अपने घर में रुकने पर विवश किया था।

एक दिन खिलौनों ने एक बैठक बुलाई। उसमें कूड़ाघर में रहने वाले बेघर खिलौनों की समस्या पर बातचीत की गई। बूट्स ने कहा— ''वहां रहने वाले खिलौनों को हमारी दया नहीं चाहिए। उन्हें चाहिए सम्मान के साथ जीने का अवसर। आखिर ये कब तक कूड़े के ढेर पर पड़े रहेंगे ?'' सब अपनी-अपनी बात कह रहे थे, पर हनीबाल चुप खड़ा था। उसे अपने साथियों की याद आ रही थी।

उस रात तेज बरसात हुई। बिजली कड़कने लगी। सड़कों पर पानी ही पानी नजर आने लगा। हनीबाल ने कहा— ''हमारे साथी खुले मैदान में रह रहे हैं। मुझे लगता है, वहां पानी भर गया होगा। हमें जाकर उनकी खोज-खबर लेनी चाहिए।''

खिलौना नावों में बैठकर तीनों भालू और उनके साथी कूड़ाघर वाले मैदान में पहुंचे। वहां बेघर खिलौनों की बस्ती पानी में डूब चुकी थी। वे सब एक टीले पर जा बैठे थे। वहां बारिश से बचने का कोई तरीका नहीं था। सचमुच सभी खिलौने परेशान थे।

आखिर बाढ़ में फंसे सब खिलौनों को नावों में पौली ट्रिंकेट के मकान पर पहुंचा दिया गया। बूट्स ने स्लिपर्स से कहा— ''अब जो भी होगा, देखा जाएगा। आखिर इन बेघर साथियों को बाढ़ में डूबने के लिए नहीं छोड़ सकते थे हम।''

बेघर खिलौने खुश थे। पौली ट्रिंकेट के मकान में उनकी खूब खातिर हो रही थी— लेकिन तीनों भालू परेशान थे। मेहमानों में कुछ खिलौने बहुत शैतान थे। वे हर समय उत्पात मचाते रहतेथे। इस पर उनमें और भालुओं में तकरार भी हो गई।

आखिर हनीबाल ने साक्स और स्लिपर्स से कहा— "मित्रो, आपने हम सबकी बहुत सहायता की। अब हम यहां से जाना चाहते हैं। छोटों ने जो शरारत की है, उसके लिए मैं आपसे क्षमा मांगता हूं।"

"लेकिन आप सब कहां जाएंगे ? किस घर में रहेंगे ?"— बूट्स ने परेशान होकर पूछा।

"यह सब हम बाद में सोचेंगे। लेकिन अब हम यहां एक पल भी नहीं रुकेंगे। आपने हमारा बहुत ध्यान रखा, इसके लिए बहुत धन्यवाद।" —हनीबाल ने कहा और सब खिलौनों के साथ पौली ट्रिंकेट के मकान से बाहर चला गया। तीनों भालू उदास खड़े उन्हें जाते देख रहे थे।

मेहमानों के जाने के बाद घर जैसे एकदम खाली-सा हो गया। सबसे ज्यादा परेशान थी आउड्रे। वह हनीबाल से हमेशा खेलती रहती थी। वह उदास रहने लगी। सोचती रहती— 'आखिर हाथी कहां चला गया ?'

आउड्रे बीमार थी। उसके पेट में दर्द था। बुखार आ रहा था। हर समय पीड़ा से चीखती रहती लेकिन इतनी तकलीफ में भी वह हनीबाल हाथी को नहीं भूली थी। डाक्टरों ने उसका आपरेशन किया। बाद में जब उसे होश आया, तो बोली— "मेरा हाथी कहां है ?"

डाक्टर ने उसकी मां को फोन करके खिलौना हाथी लाने को कहा। लेकिन हनीबाल कहां गायब हो गया, यह कोई न जान सका। साक्स ने यह सुना, तो स्लिपर्स से बोला— "यह सब मेरे कारण हुआ। हनीबाल और उसके साथी नाराज होकर चले गए। जब तक आउड्रे को हनीबाल हाथी नहीं मिलेगा, वह परेशान रहेगी। हमें कुछ करना चाहिए।"

तीनों भालू नाराज खिलौनों को ढूंढ़ने चल दिए। वे पुरानी जगह नहीं मिले। वहां तो अब भी पानी भरा हुआ था। खोए खिलौने मिले एक नई इमारत के पिछवाड़े गोदाम में। वहां काम चल रहा था। कूड़े-कबाड़ के बीच खिलौने चुपचाप पड़े थे।

स्लिपर्स और साक्स ने उनसे बात की। कहा— "आउड्रे का आपरेशन हुआ है। वह हनीबाल का नाम पुकारती रहती है। आप अब हमारे साथ आउड्रे के पास चलें।"

आउड्रे बीमार है, यह सुनकर हनीबाल भी उदास हो गया। कुछ देर सोचता खड़ा रहा, फिर बोला— "मैं उसके पास जाऊंगा। मुझे पता नहीं था कि वह मुझसे इतना स्नेह करती है।"

किसी को पता न चला कि हनीबाल हाथी कब और कैसे लौट आया था। अब वह पलंग पर लेटी आउड्रे के पास खड़ा था और ध्यान से उसे देख रहा था। अपना खोया खिलौना पाकर आउड्रे बहुत खुश थी। अपनी बीमारी की बात एकदम भूल गई थी।

बूट्स ने बाकी खिलौनों से कहा— "आपने देखा, हनीबाल को पाकर लड़की कितनी खुश है। मेरा एक सुझाव है। आप सब बच्चों के अस्पताल में क्यों न चलें। खिलौने कैसे भी हों, बीमार बच्चे उन्हें पाकर खुश हो जाते हैं। इसके बाद आप लोगों को और कहीं जाने की आवश्यकता नहीं रह जाएगी।"

बूट्स का सुझाव सभी को पसंद आया। और एकाएक अस्पताल में ढेर सारे खिलौने देखकर सब चकित रह गए। कोई नहीं समझ पा रहा था कि इतने सारे पुराने खिलौने अस्पताल में कैसे आ गए! हनीबाल का मन था कि वह भी अपने मित्रों के संग अस्पताल में रहे, पर आउड्रे उसे एक पल को भी नहीं छोड़ती थी। बीमार बच्चे खिलौने पाकर खुश थे।

प्रस्तुत— देवेंद्र कुमार

चांदी का तालाब

—राज बुद्धिराजा

बात तब की है जब जापान में कच्चे को यलों वाली अंगीठी पर खाना पका करता था। य मोतो मुरा गांव में एक अमीर किसान रहता था। उर के अनाज भरे खेतों की कहानी दूर-दूर तक फैल गई थी।

किसान की हवेली से सटी घास-फूस की एक झोंपड़ी थी। उसमें एक गरीब किसान र हता था। उसके पास बिछौने के नाम पर पैबंद लगी चादर थी। दिन भर मेहनत कर, वह किसी तरह से खाने का जुगाड़ कर पाता था।

एक बार तथागतअमिताभ बुद्ध भिक्षु क का रूप धारण कर घूमते हुए उस गांव में पहुंचे। वह सबसे पहले अमीर किसान के घर गए। किसान उन्हें देखते ही आगबबूला हो गया। फिर भी भिक्षुक ने किसान के आगे हाथ फैला दिए। किसान ने उन्हें दुत्कार कर भगा दिया।

भिक्षुक मुसकराते हुए पास वाली झोंपड़ी में चले गए।

गरीब किसान का चेहरा भिक्षुक को देखते ही खुशी से चमक उठा। उसने भिक्षुक को रू खा-सूखा भोजन कराया। लकड़ियों से आग जलाई। भिक्षुक वहीं लेट गए। किसान ने उन्हें चादर ओढ़ने को दी।

"तुम बहुत दयालु हो। तुम्हारी झोंपड़ी के सामने एक पौधा पेड़ बन जाएगा। उसकी एक टह ी से तुम ओखली और मूसल बनाना। इससे तुम्हारे स भी दुःख दूर हो जाएंगे। मैं बुद्ध हूं। तुम्हारा कल्या हो।" —कहते हुए भिक्षुक चले गए।

किसान दंग रह गया। वह चुपचाप बुद्ध को जाते देखता रहा। थोड़ी ही देर में बुद्ध उसकी निगाहों से दूर हो गए।

तीन-चार दिन बाद गरीब किसान की झो पड़ी के सामने एक छोटा-सा पौधा उग आया था। दे खते ही देखते वह पेड़ बन गया। किसान ने पेड़ की एक टहनी काटी। उससे ओखली और मूसल बनाए। अब जब भी वह उसमें धान डालता, तो धान कई गुना चावल बनकर बाहर निकलता। वह ओखली हमेशा अन्न से भरी रहती।

यह बात अमीर किसान को पता लग गई। एक दिन उसने गरीब किसान से ओखली मांगी। गरीब किसान ने ओखली दे दी। साथ में ओखली की विशेषता भी बता दी। अमीर किसान तो लालची था। घर आकर उसने ओखली में धान डाला। थोड़ी देर बाद धान निकालने के लिए उसने हाथ बढ़ाया। पर ओखली में धान नहीं था। गुस्से में उसने ओखली को पटक दिया।

निर्धन किसान रोता-बिलखता ओखली के टुकड़े उठा लाया। उसने ओखली के टुकड़ों से एक संदूक बनाया। अब वह जब कभी बचे-खुचे पैसे उसमें डालता, तो पैसे सोने-चांदी के सिक्के बन जाते। इस तरह उसके पास सोने-चांदी का ढेर लग गया।

अमीर किसान को यह पता चला, तो वह गरीब किसान को बहला-फुसलाकर संदूक अपने घर ले आया। उसने संदूक में चांदी-सोने के सभी सिक्के डाल दिए। थोड़ी देर बाद संदूक का ढक्कन अपने आप खुल गया। सिक्के पानी बनकर बहने लगे। गांव के पास पानी का तालाब बन गया। उसने गुस्से में बाकी सिक्कों को भी संदूक में डाल दिया। लेकिन वे भी पानी बनकर बहने लगे। उसमें गांव का गांव डूब गया। केवल गरीब किसान की झोंपड़ी बची हुई थी।

आज भी जापान के उस गांव में संदूक वाली नदी और संदूक वाला तालाब मौजूद हैं। उसी दिन से यह भी कहा जाने लगा है कि पैसा एक जगह कभी नहीं टिकता और वह पानी की तरह बहता रहता है।

परलोक की धुन

—वीरेन्द्र पैन्यूली

महाराजा अमितसेन को उनकी प्रजा बहुत चाहती थी। राजा भी अपनी प्रजा को बहुत चाहते थे। परंतु धीरे-धीरे उनमें एक अजीब-सा परिवर्तन आ गया था। किसी भी काम को करने से पहले, वह यह जानना चाहते थे कि उनके उस काम का उन पर परलोक में क्या असर होगा ? परलोक का यह ख्याल महाराजा को बीमारी की तरह पकड़ लेगा, यह किसी ने सोचा नहीं था। महाराजा अमितसेन के परिवार वाले भी उनकी इस सनक से परेशान हो गए थे।

परलोक की चिंता उन्हें इतनी होने लगी थी कि परलोक में किसी भी काम का असर बताने के लिए राजा ने अपना एक विशेष सलाहकार नियुक्त कर दिया था। परंतु केवल एक विशेष सलाहकार से काम नहीं चल पा रहा था। महाराजा को चौबीसों घंटे सोते, उठते, चलते, काम करते परलोक की सलाह चाहिए थी। इसलिए अब तीन-चार और सलाहकारों को नियुक्त करने की तैयारियां की जाने लगी थीं। यह बात जब राज्य के सभासदों व राज परिवार के लोगों को पता चली, तो सबने अपने-अपने लोगों को परलोक के सलाहकारों के रूप में नियुक्त करवाने की जोड़-तोड़ शुरू कर दी। जोड़-तोड़ करने वाले जानते थे कि सलाहकारों के माध्यम से वे महाराजा को अपने-अपने हित की सलाह दे सकते थे। अतः राज्य षड्यंत्रकारियों की चपेट में आ गया था। जनता त्रस्त थी। दरबारी भी परेशान थे।

एक दिन राजमहल में नियुक्त प्रहरी अपने-अपने काम पर नहीं आए। महाराजा चिंतित हो गए। उन्होंने तत्काल प्रधान मंत्री व सेनापति को उपस्थित होने का आदेश दिया। दरबार व राजमहल में प्रहरियों को भिजवाने की जिम्मेदारी सेनापति पर थी। उनके आने पर महाराजा ने प्रहरियों के काम पर न आने का कारण पूछा।

सेनापति ने विनम्र स्वर म कहा—''महाराज, सारे सैनिक सेना को छोड़कर जा रहे हैं। दूसरी तरफ दुश्मनों की विशाल सेनाएं हमारी सीमा पर जमा हो रही हैं। वे किसी भी समय हम पर आक्रमण कर सकती हैं। सैनिकों का यह कहना है कि महाराजा अपने परलोक की तो चिंता कर रहे हैं, किंतु हमारा परलोक खराब कर रहे हैं।''

इसके बाद प्रधानमंत्री ने प्रजा के दुःखों का वर्णन करते हुए कहा—''आपको यदि हमारे कहने पर विश्वास नहीं हो रहा है, तो आप स्वयं जाकर, नगर व राज्य के हालात देख सकते हैं।'' महाराजा को यह सुझाव पसंद आया। जगह-जगह घूमने पर महाराजा ने स्थिति को वैसा ही पाया, जैसा उन्हें प्रधान मंत्री व सेनापति ने बताया था।

राजमहल लौटने से पहले राजा उन संत से भी मिलने के लिए गए, जिनके पास वह अक्सर मुसीबत के क्षणों में चले जाते थे। महाराजा उनका सम्मान भी बहुत करते थे। संत ने महाराजा से सब कुछ सुना। उन्होंने कहा—''तुम राजमहल में अपनी सुरक्षा के लिए प्रहरियों के न पहुंचने से चिंतित क्यों हो गए थे ? जबकि सचाई यह है कि पूरा राज्य असुरक्षित है।''

राजा संत की बात का मर्म समझ गए। दरबार लौटते हुए महाराजा को संत ने सलाह दी—''जिस लोक में हम जिंदा हैं, उस लोक में हमारे कामों का क्या असर होगा, यह जानना परलोक के असर से ज्यादा जरूरी है।''

दरबार व राजमहल में जाकर महाराजा अमितसेन ने पहला काम परलोक के सलाहकारों को हटाने का किया। धीरे-धीरे प्रजा फिर से सुखी हो गई। ●

छोटी बहन

—उषा महाजन

किसी कस्बे में गोपाल दास नाम का एक भला आदमी रहता था। छोटा-सा उसका परिवार था। पत्नी सुजाता और दो प्यारी-प्यारी बेटियां—कुसुम और कंचन। कुसुम दस बरस की और कंचन आठ बरस की थी।

कस्बे के बीचोंबीच गोपालदास की दुकान थी। खासी आमदनी थी। परिवार का खर्च भी भली-भांति चल जाता था। थोड़ी-बहुत बचत भी हो जाती थी। जीवन बहुत सुखमय था।

फिर भी गोपालदास और सुजाता परेशान से रहते थे। कारण था, कुसुम और कंचन आपस में बहुत लड़ती थीं। उनकी दिन भर की तू-तू मैं-मैं बंद करा पाना किसी के वश में नहीं था। कंचन छोटी थी, इसलिए माता-पिता उसका कुछ अधिक ख्याल रखते। मां उसे अपने हाथों से खाना खिलाती, अपने साथ सुलाती। कभी बाहर जाते, तो थक जाने पर गोद में उठा लेती। बस, यही सब देखकर कुसुम उससे खूब चिढ़ती। मौका पाते ही उसे पीटने लगती या फिर तरह-तरह से तंग करती। छोटी भी रो-रो कर उसे मारने दौड़ती। मां से शिकायत लगा कर उसे डांट खिलवाती।

उनके घर से दो मील दूर एक प्राइमरी स्कूल था। दोनों वहीं पढ़ती थीं। कंचन छोटी कक्षा में थी। उसकी छुट्टी जल्दी हो जाती। वह कुसुम से पहले ही घर पहुंच जाती। कुसुम शाम के लगभग चार बजे घर लौटती। घर में घुसते ही देखती कि कंचन मां के बिस्तर पर आराम से सो रही है। वह आगबबूला होकर बस्ता वहीं फेंक देती और खाए-पिए बिना ही खेलने निकल जाती। मां उसे बुलाकर लाती। मिन्नत-खुशामद करती, तब कहीं वह कुछ कौर खाती। खाते-खाते मां को नाराजगी से देखती, कहने लगती—"तुम तो सिर्फ कंचन को ही प्यार करती हो। मुझे डांटती ही रहती हो।" मां समझाती—"यह बात नहीं कुसुम बिटिया, मां-बाप के लिए तो सभी बच्चे समान होते हैं। हां, छोटों का ख्याल कुछ ज्यादा करना पड़ता है। वे अपनी देखभाल खुद ठीक से जो नहीं कर पाते।"

मां की बातें कुसुम के दिमाग में घुसती ही न थीं। एक दिन रोज की तरह कुसुम स्कूल से घर लौटी। देखती क्या है कि मां का बिस्तर खाली पड़ा था। कंचन वहां सो ही नहीं रही थी। वह बस्ता रख कर पूरे घर में ढूंढ़ आई, लेकिन कंचन कहीं मिली ही नहीं। उसे एक बात की खुशी भी हो रही थी कि चलो, आज वह मां के साथ घर में अकेली ही है। अब मां उसका खूब ख्याल करेगी, लेकिन फिर उसे लगा कि कहीं पिता जी कंचन को घुमाने-फिराने तो नहीं ले गए! आखिर न रहा गया। मां से पूछने लगी—"अम्मां, कंचन कहां है? दिखाई नहीं दे रही।"

बात कुछ और थी। गांव से मामा अचानक ही आ गए थे। वह कंचन को साइकिल पर बैठा कर बाजार की सैर कराने ले गए थे। दोनों को एक साथ तो लेकर जा नहीं सकते थे। इसीलिए पहले कंचन को ले गए थे। लौटकर कुसुम को भी ले जाने वाले थे। लेकिन

मां कुसुम के स्वभाव को जानती थी। कहीं वह सच बात सुनकर नाराज न हो जाए। इसलिए उसने झूठ बोल दिया कि अभी कंचन स्कूल से ही नहीं लौटी।

सुनते ही कुसुम का कलेजा धक से रह गया। स्कूल तो कब का बंद हो चुका है। अब तक तो फाटक पर ताला भी लग चुका होगा। कंचन के साथ आने वाली नीना और मीता को भी उसने अपनी आंखों से अपने घर के बाहर बैठे देखा था। वे आ गईं, तो कंचन क्यों नहीं आई? उसका मन तरह-तरह के अनुमान लगाने लगा कि कहीं कंचन स्कूल में ही तो नहीं छूट गई या फिर कहीं वह गुम तो नहीं हो गई?

मां नहीं जानती थी कि चिंता के मारे भीतर ही भीतर कुसुम का क्या हाल हो रहा है। यह जताने के लिए कि उन्हें कंचन की कोई खास फिक्र नहीं, वह लापरवाही से बोली—"तेरे पिता जी दुकान से आएंगे तो उन्हें भेजूंगी स्कूल उसे ढूंढ़ने। चल, तू खा-पीकर खेलने जा।"

कुसुम से खाना भी ठीक से नहीं खाया गया। सोचती रही— 'पिता जी पता नहीं कब लौटें दुकान से। मुझे स्वयं स्कूल जाकर कंचन का पता लगाना चाहिए। मां भी कैसी लापरवाह हैं! उन्हें कंचन की तनिक भी फिक्र नहीं है। ढूंढ़ने तक नहीं गईं उसे।'

उसने मां से कहा कि खेलने जा रही है, लेकिन दौड़ पड़ी स्कूल की तरफ जाने वाली सड़क पर। दौड़ते-दौड़ते उसकी सांसें फूलने लगीं, लेकिन घर से दो मील दूर स्कूल के फाटक पर पहुंच कर ही वह रुकी। फाटक पर तो सचमुच ताला लटक रहा था। सिर्फ तिपाई पर बैठा चौकीदार कोई अखबार पढ़ रहा था।

हांफते हुए उसने चौकीदार से पूछा— "भैया जी, आपने मेरी छोटी बहन कंचन को देखा है? वह अभी तक घर नहीं पहुंची।"

चौकीदार हंस दिया। बोला— "अरे बिटिया, अब तक तो सब बच्चे घर पहुंच, खा-पीकर सो रहे होंगे या खेल रहे होंगे। तू घर जा। तेरी बहन घर पर ही होगी।"

कुसुम को काटो तो खून नहीं। वह उलटे पांव घर वापस दौड़ी। हांफते-हांफते घर पहुंची, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। कंचन मां की गोद में लेटी थी। मां उसे थपकियां दे रही थी। लेकिन पिताजी परेशान से कमरे में इधर-उधर चक्कर लगा रहे थे। उसे देखते ही वह उस पर बरस पड़े—"अरे कुसुम, तू कहां चली गई थी? सबके घर पूछ आए, तेरा कहीं पता ही नहीं। कहां गई थी खेलने? कितनी बार समझाया कि खेल कर जल्दी घर लौटा कर!"

कुसुम चुप। कोई और दिन होता, तो पिता जी की फटकार सुन कर वह जोर-जोर से रोने लगती। लेकिन आज तो उसे जैसे कुछ सुनाई ही नहीं दे रहा था। बस, केवल एक खुशी उसके हृदय में भरती जा रही थी कि उसकी बहन कंचन सही-सलामत थी। उसका मन हो रहा था कि वह खुद पास जाकर कंचन को अपने गले से लगा ले। लेकिन बेचारी चुपचाप खड़ी उसे देखती रही और पिता जी की फटकार सुनती रही।

मां की बातें अब उसकी समझ में आने लगी थीं कि क्यों वह कंचन का अधिक ख्याल करती थीं। वह खुद भी तो कंचन का कितना ख्याल करती थी और कितना प्यार था। ●

टिली लिली झर

दिखा अंगूठा बोला मुन्ना, टिली लिली झर !
पकड़ सको तो पकड़ो, मेरे लगे हवा के पर।
खेल शुरू लो, भागो-भागो
पकड़ो थुलथुल भैया,
चोर-सिपाही खेलो, या फिर
खेलो छुपम छुपैया।
पकड़ सकोगे कहां मुझे, मैं भागूं सरर-सरर,
दिखा अंगूठा बोला मुन्ना, टिली लिली झर !
मुझे परी ने दिया रात
कल जादू वाला डंडा,
चांदी वाली मुर्गी देगी
सोने वाला अंडा।
आंखें बंद करो, दिखलाऊं दादी अभी हुनर,
दिखा अंगूठा बोला मुन्ना, टिली लिली झर !
मंझली काकी, कितने बाकी
देखें आम तुम्हारे,
मिट्ठू को दिखला मत देना
खा जाएगा सारे।
वो देखो, वो चिड़ी, चिड़े के ले गई कान कतर !
दिखा अंगूठा बोला मुन्ना, टिली लिली झर !

—कृष्ण शलभ

भालू चाबी वाला

बहना है गुड्डू की गुड़िया,
गुड्डू उसका भाई,
फिर भी जाने क्यों दोनों में,
उस दिन हुई लड़ाई।
उठा-पटक और धमाचौकड़ी,
मची हुई थी भारी,
बस्ते में से निकल-निकल,
गिरती थीं चीजें सारी।
तभी कहीं से आ टपका था,
भालू चाबी वाला,
लगा दिखाने नाच ठुमककर,
वह तो अजब निराला।
फिर तो घोड़ा, हाथी, बंदर,
आए सभी खिलौने,
चाबी वाली बतख सलोनी,
नन्हे-मुन्ने बौने।
सबने मिलकर खूब सजाए
उन दोनों के बस्ते,
सारी चीजें रखीं जगह पर,
सबने हंसते-हंसते।

—लता पंत

बरगद

यह बरगद का पेड़ पुराना,
लगता सब पेड़ों का नाना।

मोटी डालें है फैलाए,
लम्बी-लम्बी जटा बढ़ाए,
पत्तों का है तम्बू ताना।

सिर को ऊंचा किए खड़ा है,
तूफानों से सदा लड़ा है,
झुकना नहीं कभी है जाना।

चिड़ियां करतीं यहां बसेरा,
प्यारा-न्यारा उनका डेरा,
मौज मनातीं, गातीं गाना।

शीतल छाया यह देता है,
नहीं किसी से कुछ लेता है,
सबको लगता बड़ा सुहाना।

—कृष्णकांत तैलंग

गुलमोहर

गुलमोहर का पेड़ लगाया
है मैंने जो आंगन में !
नन्हा-सा लाए थे पापा
इसको मेरे जन्म दिवस पर,
पाला-पोसा मैंने इसको
पानी-खाद दिया था जमकर।
अब मुझ से भी बड़ा हो गया,
देखो यह आनन-फानन में।
बड़े मजे से अब मैं इसकी
शाखाओं पर चढ़ सकता हूं,
घंटों-घंटों इसकी शीतल
छाया में मैं पढ़ सकता हूं।
चाहूं तो बांहों में इसकी,
झूला झूलूं मैं सावन में।

—सुरेश विमल

सागर का बेटा

एक बार देवता भगवान शिव के दर्शन करने गए। शिव एकांतवास में थे। अनिच्छा से उन्होंने भयानक रूप धर...
करो दर्शन !
देवराज, रक्षा करो !
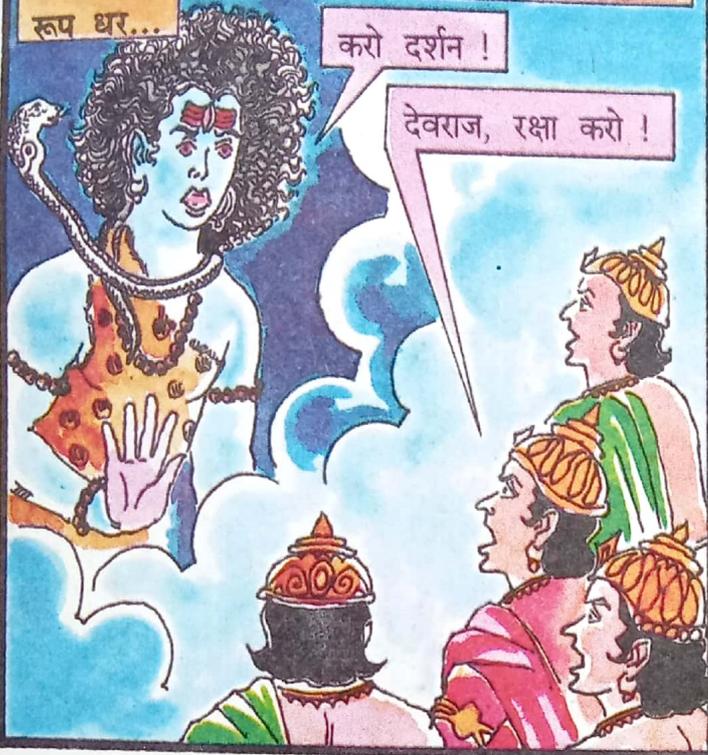
इंद्र ने वज्र चलाया। वह शिव के कंठ में लगा। वह क्रोधित हो उठे। ज्वालाएं फूट पड़ीं।...
बचाओ !
बचाओ !
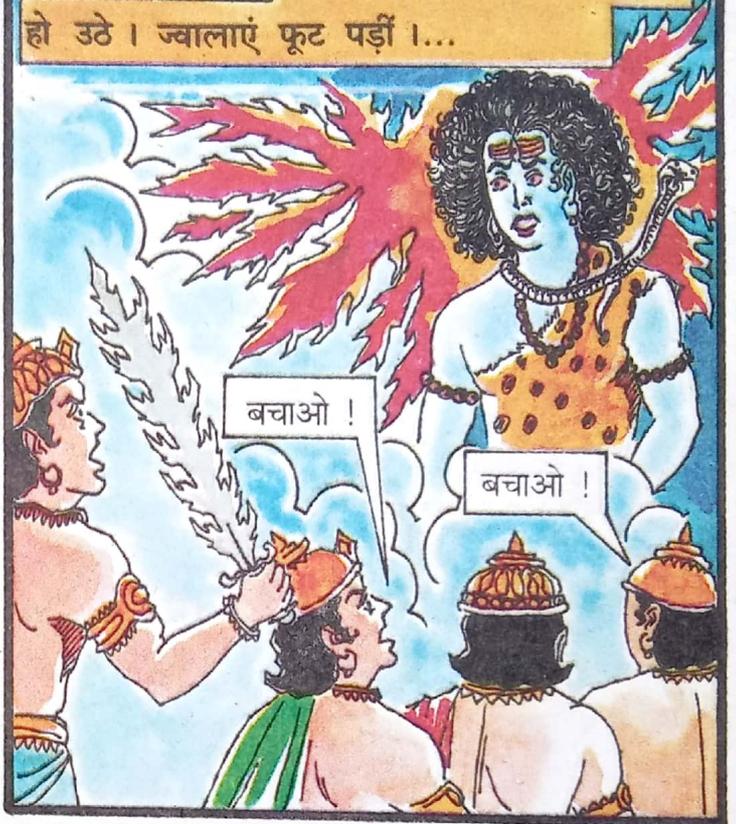
शिव को पहचान देव-गुरु वृहस्पति ने स्तुति कर उन्हें शांत किया। ज्वालाएं सागर में जा गिरीं। अचानक...
अग्नि और सागर के संयोग से...अद्‌भुत बालक

उस बालक का नाम रखा गया जलंधर। ब्रह्मा ने उसे शीघ्र बढ़ने और वेद ज्ञाता होने का वर दिया...
अजेय हो पुत्र!
अभय पुत्र
कितना हृष्ट-पुष्ट
शिव और ब्रह्मा दोनों का आशीर्वाद प्राप्त...
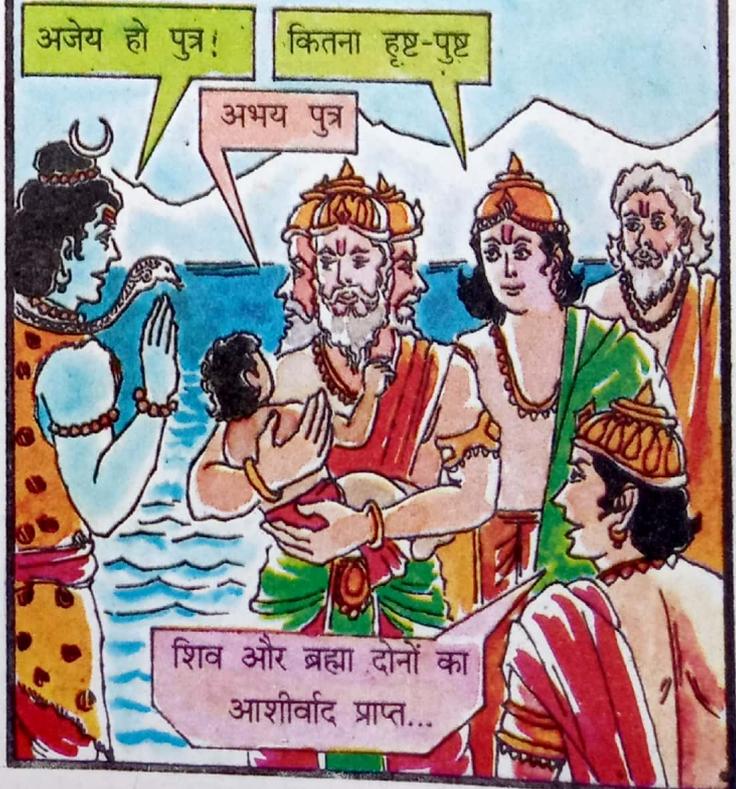
जलंधर की राजधानी थी जालंधरी नगरी। वह देवताओं का मित्र था। एक दिन उसने सागर-मंथन की कथा सुनी...
सागर मेरे पिता... उनकी वस्तुओं पर मेरा अधिकार...
उसने तुरंत एक दूत को...
देवलोक जाओ। इंद्र से कहो – सागर से प्राप्त वस्तुएं लौटाए।
जो आज्ञा!

इंद्र ने वस्तुएं लौटाने से मना कर दिया। जलंधर ने देवलोक पर चढ़ाई कर दी। किंतु...
हमारी विजय होगी। शुक्र हमारे मृत सैनिकों को जीवित जो कर देते हैं।
यही काम देव-गुरु बृहस्पति कर रहे हैं राजन्!

बृहस्पति द्रोणागिरि की औषधियों से मृत देव-सैनिकों को जीवित करते थे। जलंधर ने द्रोणागिरि को उखाड़ कर...
जा सागर में। देखता हूं अब देवता जीवित कैसे होंगे?

देवताओं में हाहाकार मच गया। सब भगवान विष्णु की शरण में गए। युद्ध रुकवाने के लिए..
युद्ध नहीं। हम तुम्हारी शक्ति पर प्रसन्न हैं। वर मांगो।
आप लक्ष्मी सहित मेरे महल में ही रहें।

जलंधर की राजधानी थी जालंधरी नगरी। वह देवताओं का मित्र था। एक दिन उसने सागर-मंथन की कथा सुनी...
सागर मेरे पिता... उनकी वस्तुओं पर मेरा अधिकार...
उसने तुरंत एक दूत को...
देवलोक जाओ। इंद्र से कहो – सागर से प्राप्त वस्तुएं लौटाए।
जो आज्ञा!

इंद्र ने वस्तुएं लौटाने से मना कर दिया। जलंधर ने देवलोक पर चढ़ाई कर दी। किंतु...
हमारी विजय होगी। शुक्र हमारे मृत सैनिकों को जीवित जो कर देते हैं।
यही काम देव-गुरु बृहस्पति कर रहे हैं राजन्!

बृहस्पति द्रोणागिरि की औषधियों से मृत देव-सैनिकों को जीवित करते थे। जलंधर ने द्रोणागिरि को उखाड़ कर...
जा सागर में। देखता हूं अब देवता जीवित कैसे होंगे?

देवताओं में हाहाकार मच गया। सब भगवान विष्णु की शरण में गए। युद्ध रुकवाने के लिए.
युद्ध नहीं। हम तुम्हारी शक्ति पर प्रसन्न हैं। वर मांगो।
आप लक्ष्मी सहित मेरे महल में ही रहें।

विष्णु अपने ही वचन में फंस गए। देवलोक में महा शोक छा गया। शिव और ब्रह्मा दोनों जलंधर को अभय दे चुके थे। उनसे मदद की आशा न थी। एक दिन...
नारायण! नारायण! यह कैसा सन्नाटा!
नारद जी!
शायद यह कुछ मदद करें!

कुछ करने का आश्वासन दे, नारद जी पहुंचे जलंधर के पास...
विवाह कर लो। पार्वती जैसी पत्नी मिले तो धन्य हो जाओगे!
पार्वती जैसी!
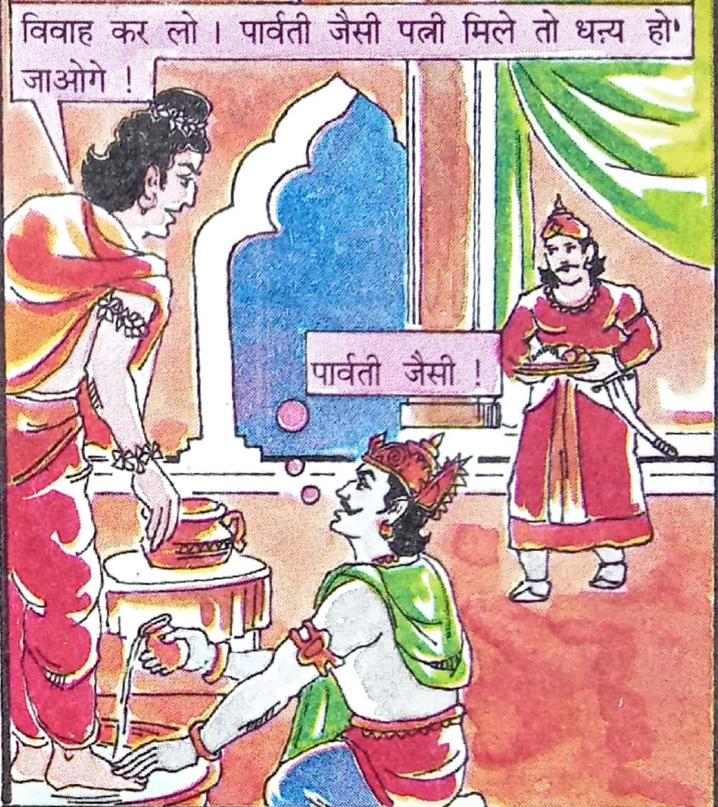
जलंधर रात को सो न सका। पार्वती जैसी पत्नी उसे कहां मिलेगी! उसने राहु को बुलाकर मन की बात कही...
आप के लिए कुछ असंभव नहीं। पार्वती भी...
तो जाओ! शिव से पार्वती देने को कहो!

शिव ने राहु को भगा दिया। जलंधर शक्ति के मद में चूर था। कैलास पर धावा बोल दिया...
प्रभो, जलंधर के सैनिक मरते ही जीवित कर देते हैं शुक्र...
उसे रोको! मैं शुक्र को मार्ग से हटाता हूं।
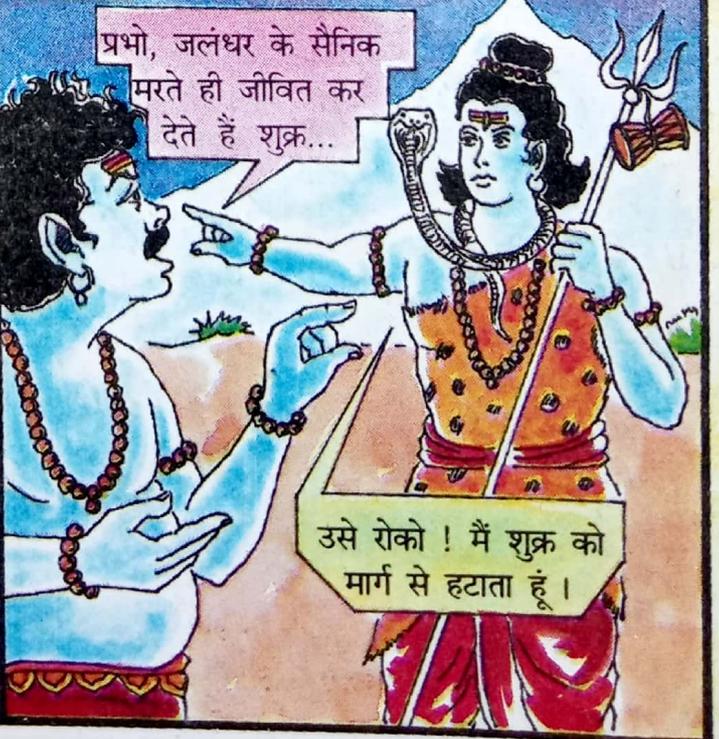
शिव ने फूंक मार शुक्र को अंतरिक्ष में उड़ा दिया। जलंधर देवताओं पर भारी पड़ रहा था। विष्णु थे नहीं। ऐसे में...
जलंधर-वध के लिए भगवान शिव को तैयार कैसे करें!
जितने क्रोध से जलंधर का जन्म हुआ, यदि उससे अधिक क्रोध दिलाया जाए...
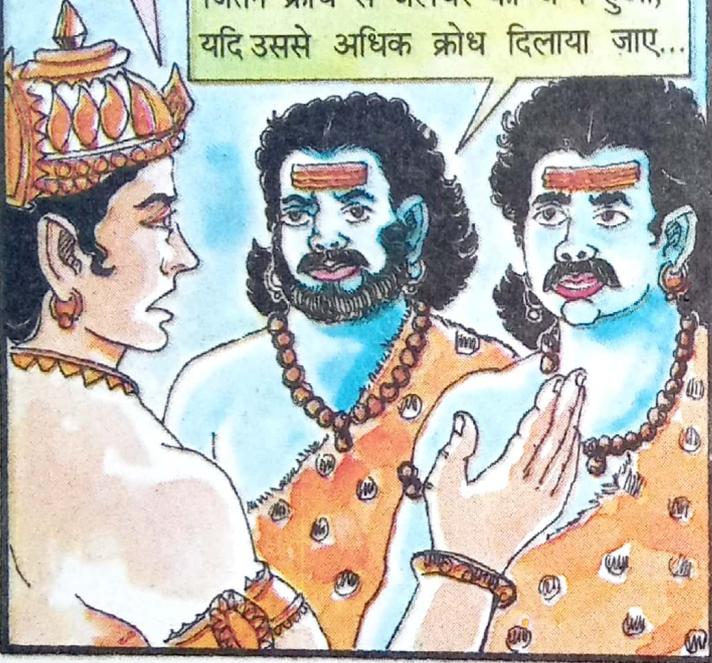
तुरंत योजना बनी। इंद्र का आदेश पा रंभा पार्वती का रूप धर जलंधर के शिविर में जा घुसी। पहरे पर तैनात शुंभ, निशुंभ ने उसे पकड़ लिया और...
हा! हा! हा! मेरे वीर शुंभ-निशुंभ!
हमने पार्वती को पकड़ लिया। आप विवाह करें!

शिव ने देखा, तो क्रोध से साक्षात् अग्नि बन गए। शक्तिचक्र से उन्होंने जलंधर का वध कर डाला। शुंभ निशुंभ को शाप दिया...
तुम दोनों का वध भी गिरिजा के हाथों होगा
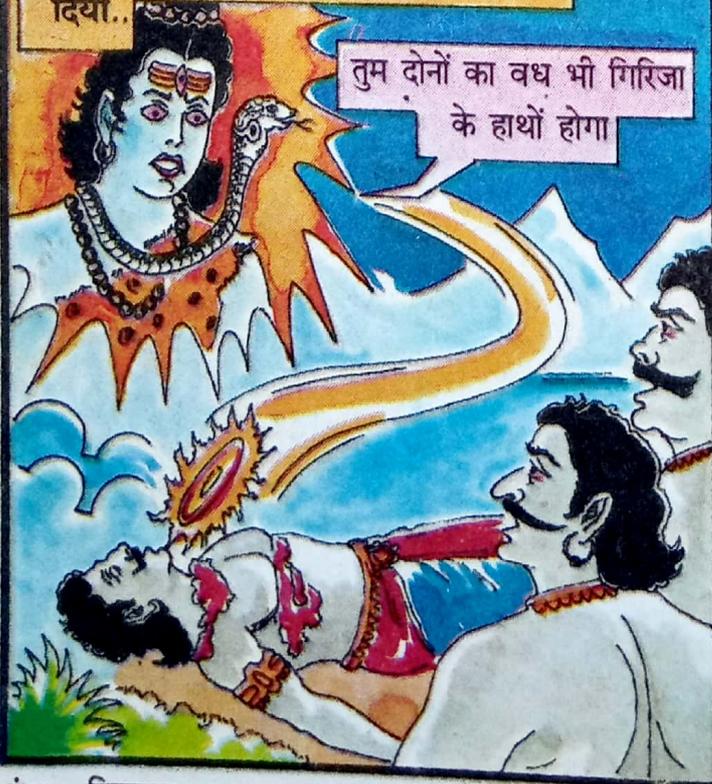
और जब भगवान शिव का क्रोध शांत हुआ, तो...
तुम वह नहीं थीं न गिरिजे!
नहीं तो...ऐसा न होता तो यह सब कैसे होता? विष्णु कैसे लौटते...

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए
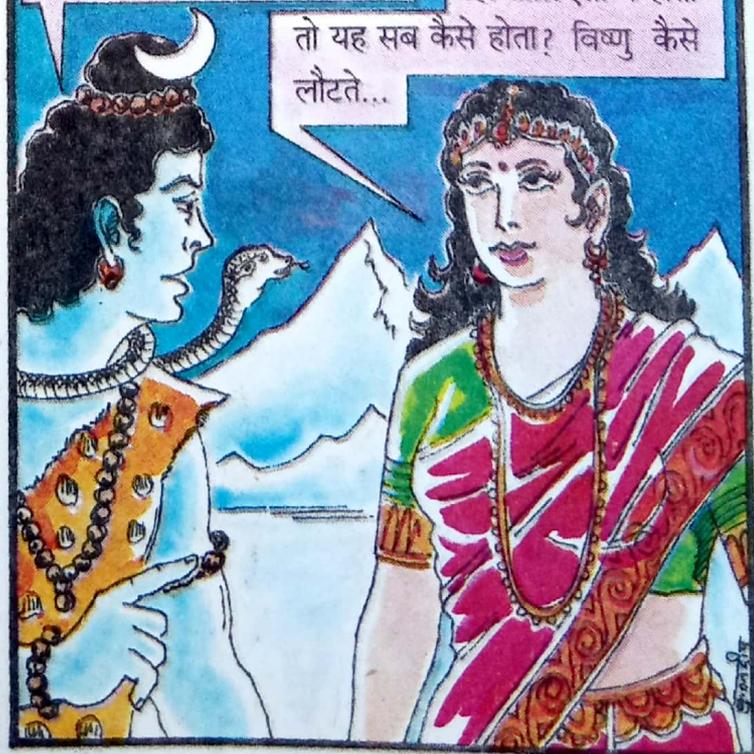
वर्ष : ३० अंक : २, दिसम्बर '९३; नई दिल्ली, अगहन-पौष, शक सं.१९१५

नंदन चित्रकला प्रतियोगिता

जन्मदिन पर बच्चों को पत्रिका भेंट करें

लखनऊ। कला और कलाकारों के नगर में चित्रकला प्रतियोगिता हो तो बच्चे बढ़-चढ़कर भाग लेंगे ही। यहां हरे-भरे हजरत महल पार्क में 'नंदन' के चार हजार पाठक जमा हुए। आसपास पुरानी शानदार इमारतें सिर उठाए खड़ी थीं।

दो वर्गों में प्रतियोगिता थी। सात से नौ वर्ष के बच्चों के लिए विषय थे— शहर में भीड़-भाड़, रेलवे स्टेशन या दीवाली।

उसी दिन चित्रों का चुनाव हुआ। पुरस्कार विजेता रहे : प्रथम— अखिल मोहन, परेश तिवारी, द्वितीय—अरुणसिंह राजपूत, नमित टंडन, तृतीय-शिलाई मित्तल, सुनयना सिंह। इनके अलावा दस-दस बच्चों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए। सभी को सुंदर उपहार और आकर्षक प्रमाणपत्र मिले।

शाम को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सभागार खचाखच भरा था। बच्चे और उनके अभिभावक बड़े उत्साह में थे। हिंदुस्तान टाइम्स के प्रसार व्यवस्थापक श्री राकेश शर्मा ने सभी का स्वागत किया। पुरस्कार वितरण किया 'नंदन' के सम्पादक जयप्रकाश भारती ने। उन्होंने कहा कि जन्मदिन पर बच्चों को अच्छी पुस्तकें देनी चाहिएं। पत्रिका का वर्ष भर का शुल्क भेंट करने से बालक को हर महीने उत्सव की याद आएगी। बार-बार तालियों से सभागार गूंज उठता। बाहर चुने हुए सौ चित्रों की प्रदर्शनी लगी थी।

श्री राकेश शर्मा ने हर विजेता को हार पहनाया। उसकी पेंटिंग दर्शकों को दिखाई। प्रतियोगिता में निर्णायक थे—प्रसिद्ध कलाकार श्री सतीशचंद्रा, योगेंद्रकुमार लल्ला, नारायण बड़ोदिया और 'नंदन' के सम्पादक।

'समूची हिंदी शिक्षा' का समारोह लंदन में

लंदन। प्रवासी भारतीय लेखक श्री वेद मित्र की पुस्तक 'समूची हिंदी शिक्षा' का लोकापर्ण यहां हुआ। पुस्तक चार भागों में है। इसकी भूमिका भारतीय उच्चायुक्त डा. लक्ष्मीमल सिंघवी ने लिखी है।

इस अवसर पर डा. सिंघवी ने कहा कि भारतीय मूल के बालकों और विदेशियों को हिंदी सिखाने में पुस्तक बहुत उपयोगी रहेगी। इंजीनियर होते हुए भी श्री वेद मित्र ने अपने अनुभव से यह उत्तम पुस्तक लिखी है। उनका प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

पुस्तक के प्रकाशक पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी के निदेशक आनंद भूषण, लंदन में हिंदी अधिकारी सुरेंद्र अरोड़ा तथा अनेक विशिष्ट व्यक्ति समारोह में उपस्थित थे। अब यहां हिंदी को विदेशी भाषाओं के पाठ्यक्रम में स्थान मिल गया है। हिंदी में प्राप्त अंक उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए मान्य हो गए हैं।

इतनी लम्बी गुफा

जकार्ता। इंडोनेशिया में दुनिया की सबसे लम्बी गुफा का पता चला है। इस गुफा का पता आस्ट्रेलिया के एक अभियान दल ने लगाया था।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

नंदन बाल समाचार

दुखी मनुष्य की सेवा करना ही सच्चा धर्म है। —मदर टेरेसा

जेब खर्च से किताबें

हर महीने आप कितनी किताबें खरीदते हैं? साल में कितने रुपए किताबों या पत्रिकाओं पर खर्च करते हैं। जो भी बड़े लोग हुए, उनमें से ज्यादातर पुस्तक-प्रेमी थे। उनका शौक रहा बढ़िया पुस्तकें चुन-चुनकर खरीदना और पढ़ना। बढ़िया पुस्तक लिखना आसान तो नहीं होता। कई बार एक लेखक पूरे जीवन में एक या दो किताबें लिखता है। उसके सारे जीवन के अनुभव उसमें समाए रहते हैं। हमें घर बैठे ऐसा ज्ञान मिल जाता है, जो बेशकीमती होता है।

लेकिन अक्सर शिकायत होती है कि पुस्तकें महंगी हैं। कहां से खरीदें! लेकिन बच्चों की पुस्तकें महंगी नहीं हैं, आज भी सस्ती हैं। दस-पंद्रह-बीस रुपए में मिल ही जाती हैं। जेब-खर्च से यदि थोड़ी बचत की जाए, तो हर महीने कुछ किताबें अवश्य खरीदी जा सकेंगी। उन्हें आप पढ़ें, भाई-बहन और मित्र भी पढ़ सकते हैं।

ब्रेल लिपि के बिना

कोटा। अरविंद सक्सेना जब किशोर थे तभी गोली लगने से उनकी आंखों की ज्योति चली गई। लेकिन उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा। पढ़ने-लिखने के लिए ब्रेललिपि की भी मदद नहीं ली। आज वह इतिहास में पी.एच.डी. कर चुके हैं और कोटा के एक कालेज में वरिष्ठ व्याख्याता हैं।

खेल-कूद की कोई उम्र नहीं

मियाजाकी। जापान के इस शहर में बुजुर्गों के लिए दसवीं एथलेटिक्स प्रतियोगिता हुई। इसमें भारत की संतोष कंवर को तीन रजत पदक मिले। श्रीमती कंवर इकसठ वर्ष की हैं। श्रीमती कंवर का कहना है कि खराब मौसम के कारण वह कई प्रतियोगिताओं में भाग नहीं ले सकीं। अन्यथा कुछ पदक और जीत लेतीं। भारतीय दल के सदस्य अजमेर सिंह को हेमर थ्रो में स्वर्ण पदक मिला।

दुर्लभ सिक्का

शिमला। शिमला में दूसरी शताब्दी का दुर्लभ सिक्का मिला है। इस सिक्के के एक तरफ भगवान कार्तिकेय का चित्र बना है। इस चित्र में कार्तिकेय को एक सिर वाला दिखाया गया है। सिक्के पर ब्राह्मी लिपि में यौधेय गणराज्य अंकित है।

सैनिकों की ममी

पेइचिंग। चीन में दो हजार वर्ष पुरानी सैनिकों की ममी मिली हैं। ये सैनिक टोपी और जैकेट पहने हुए हैं। इन सैनिकों के शरीर पर चोटों के निशान आज भी मौजूद हैं।

नोबुल पुरस्कार

वाशिंगटन। साहित्य का नोबुल पुरस्कार अश्वेत अमरीकी उपन्यासकार टोनी मारिसन को दिया गया है। टोनी मारिसन का कहना है कि वह गांव का साहित्य लिखती हैं। उनके उपन्यास गांव के उन रीति-रिवाजों के बारे में हैं जो धीरे-धीरे खत्म हो रहे हैं।

दादा चोटी पर

काठमांडू। वेनेजुएला के हैं रमोन सुरेज। पर्वतों की चोटियों पर चढ़ने का उन्हें शौक है। वह एवरेस्ट शिखर पर भी जा पहुंचे। शिखर पर अब तक पहुंचने वाले पर्वतारोहियों में वह सबसे बुजुर्ग हैं। उम्र है साठ वर्ष।

वेदों का शोध केंद्र

नई दिल्ली। प्रीत विहार में वेदों पर शोध करने के लिए 'धरम हिंदुजा इंटरनेशनल सेंटर फार वैदिक रिसर्च एंड स्टडीज' केंद्र खोला गया है। केंद्र के निदेशक डा. आर. के. शर्मा का कहना है कि विज्ञान के साथ यदि वेदों के ज्ञान का उपयोग किया जाए तो दुनिया का भला हो सकता है।

खुशबू से पकड़ा

भोपाल। चंदन की खुशबू से सांप नहीं पुलिस खिंची चली आई। दो सूटकेसों में भरकर चंदन ले जाया जा रहा था। गाड़ी के डिब्बे में सुगंध फैल रही थी। रेलवे पुलिस को शक हुआ। सूटकेस खुलवाने पर पैंसठ किलो चंदन निकला। इसे आंध्र प्रदेश से चुराया गया था।

अमरीका में आयुर्वेद

न्यूयार्क। अमरीका में इस समय आठ सौ वैद्य हैं। यहां आयुर्वेदिक दवाइयों का चलन बढ़ रहा है। आजकल आयुर्वेद का प्रशिक्षण भारत के अलावा अमरीका, कनाडा, ब्रिटेन तथा यूरोप के अन्य देशों में भी दिया जाता है।

भागीं टिड्डियां

मंदसौर। यहां टिड्डियों ने हमला कर दिया। ग्रामीण क्षेत्रों में खूब ढोल-नगाड़े और थालियां बजाई गईं। नीमच में सारे वाहनों ने हार्न बजाए। जिसको जो मिला वह उसी से शोर मचाने लगा। सारी टिड्डियां उड़ गईं।

पानी साफ करने वाला पौधा

नैरोबी। छोटा-सा तैरता हुआ हरे रंग का पौधा। इसका नाम है लैमना। यह पौधा गंदे पानी को साफ कर सकता है। पानी की सतह पर तैरने वाला यह पौधा सारी गंदगी को सोख लेता है। इस पौधे से नदियों और झीलों के पानी की सफाई में काफी मदद मिल सकती है। यही नहीं यह मछलियों का अच्छा भोजन भी है। यदि पानी में इसकी खेती की जाए तो पानी भी साफ रहेगा। साथ ही इससे पशुओं का चारा और खाद भी तैयार की जा सकती है।

खेतों में न जाएं

इंदौर। मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में कीटनाशकों के कारण भारी संख्या में मोरों की मौत हो जाती है। अब किसानों से कहा गया है कि वे मोरों को अपने खेतों में न जाने दें। पर सवाल यह भी है कि यदि मोर खेतों में न जाएं तो खाएंगे क्या। और किसान उन्हें खेतों में जाने से रोकेंगे कैसे ?

दीमकों के घर

कैनबरा। आस्ट्रेलिया में दीमकों की इतनी ऊंची बाम्बी हैं कि वे दूर से छोटी-छोटी पहाड़ियां नजर आती हैं। दीमकों के घरों को लोग दूर-दूर से देखने आते हैं।

दुनिया की भाषाएं

नई दिल्ली। लेविस किंग देहरादून में रहते हैं। उन्होंने चवालीस संकेत और अक्षरों से मिलाकर नई लिपि तैयार की है। इसे उन्होंने 'इंटास्क्रिप्ट' का नाम दिया है। उनका कहना है कि 'इंटास्क्रिप्ट' के जरिए दुनिया की किसी भी भाषा को लिखा जा सकता है। इस विषय पर उन्होंने एक पुस्तक लिखी है।

बाल-साहित्य को दिशा दी 'नंदन' ने

—शंकर सुल्तानपुरी

लखनऊ। "नंदन बच्चों की बेजोड़ पत्रिका है। उसने बाल-साहित्य को सही दिशा देने का काम किया है। बच्चे हर नए अंक की राह देखते रहते हैं।"—ये शब्द प्रसिद्ध लेखक शंकर सुल्तानपुरी ने कहे। वह 'बाल-साहित्य का विकास कैसे हो'-गोष्ठी में बोल रहे थे।

गोष्ठी में प्रो. रामेश्वर दयाल दुबे, योगेंद्रकुमार लल्ला (सम्पादक : उपहार), डा. विनोदचंद्र पांडे, रवींद्रकुमार राजेश, शंकर सुल्तानपुरी और कौशलेंद्र पांडेय ने चुनी हुई, बाल-कविताओं का पाठ किया। श्री जयप्रकाश भारती ने बताया कि 'नंदन' के द्वारा देश-विदेश की तीन सौ श्रेष्ठ कृतियां बच्चों तक पहुंचाई गई हैं। उन्होंने कहा कि बाल-साहित्य के बड़े लाइब्रेरी संस्करण निकाले जाने चाहिएं।

नया सिर नई पूंछ

मद्रास। प्लेनेरिया समुद्र और नदियों के तल में रहता है। यह एक अनोखा कीड़ा है। यदि इसका सिर कट जाए तो नया सिर उग आता है। यदि इसके कई टुकड़े हो जाएं तो हर टुकड़े में नया सिर और नई पूंछ उग आती है।

राष्ट्रपति का कुत्ता

पेरिस। फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांसिस मित्तरां का कुत्ता खो गया था। पूरे एक महीने बाद वह वापस आया। पूरे देश में दूरदर्शन के जरिए कुत्ते की वापसी की अपील की गई थी। दरअसल वह कुत्ता एक महिला को सड़क पर घूमता मिला था। वह उसे अपने घर ले गई। दूरदर्शन पर देखकर उसने कुत्ता वापस कर दिया। बदले में उसे नया कुत्ता दिया गया है।

नन्हे समाचार

□ अमरीका के टाप्सफील्ड नगर में 'विशाल काशीफल' प्रतियोगिता हुई। इनाम मिला रान दीकोज को। काशीफल का वजन था ३१३ किलोग्राम। उसे उठाने में नौ आदमी लगे थे।

□ इंग्लैंड के एक चिड़ियाघर में रहता है क्लो नामक ऊंट। एक बार किसी ने उसे सेंडविच खिला दिए। क्लो को वे इतने पसंद आए कि उसने भूसा और चारा खाना छोड़ दिया। अब वह सिर्फ सेंडविच ही खाता है।

□ ज्यूरिख में एक कलाकार ने अपने चित्रों की प्रदर्शनी लगाई। प्रवेश द्वार पर उसने एक कार खड़ी कर दी। कार को सैकड़ों छुरी-कांटों से सजाया गया था। इस अनोखी सजावट की चर्चा पूरे ज्यूरिख में थी। उसे देखने हजारों लोग आए।

□ फ्रांस में जमीन के अंदर चलने वाली रेलगाड़ियों के यात्री अक्सर दुर्गंध की शिकायत करते हैं इसलिए रेल सुरंगों में सब जगह इत्र छिड़ककर हवा को सुगंधित बनाया जाएगा।

□ दो भारतीय छायाकारों को वन्य जीवों के सुंदर चित्र उतारने के लिए ब्रिटेन में पुरस्कार मिला है। उनके नाम हैं—जगदीप राजपूत और विवेक सिन्हा।

□ मैसूर के चिड़ियाघर में रहने वाली सफेद बाघिन प्रियदर्शिनी ने तीन सफेद बाघों को जन्म दिया है।

□ मेरठ के सर्वम् अग्रवाल ने १७वीं जवाहरलाल नेहरू टेबिल टेनिस प्रतियोगिता में सब जूनियर एकल खिताब जीत लिया है।

□ अमरीका में रहने वाले विदेशियों में भारतीय लोग सबसे अधिक पैसा कमाते हैं, ऐसा जनगणना ब्यूरो की रिपोर्ट में कहा गया है।

सचित्र समाचार
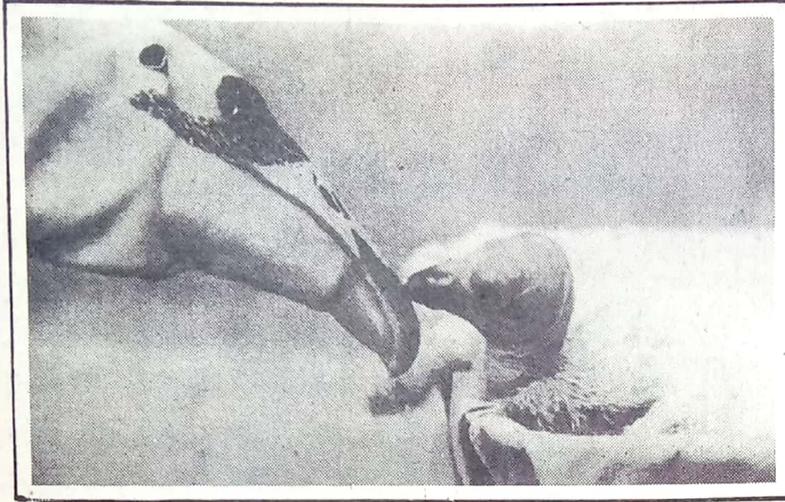
एक दिन का गिद्ध शावक। मां मर गई। अमरीका के पक्षी अनाथालय में इसे लकड़ी की मादा गिद्ध की सहायता से भोजन खाना सिखाया जा रहा है।

कम्बोडिया में फिर से राजा का शासन : नए महाराजाधिराज नरोत्तम सिंहानुक।
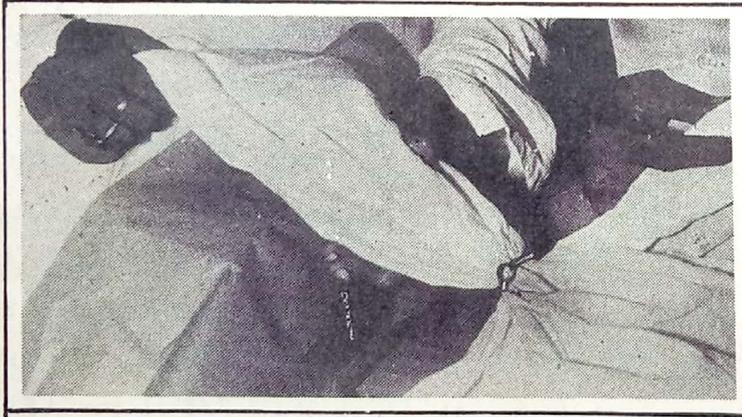
आज भी मलमल की धोती अंगूठी में से निकाली जा सकती है। बंगाल के एक जुलाहे ने इसे बनाया।

शिलर इंस्टीट्यूट गाजियाबाद के बच्चों का फैंसी ड्रेस कार्यक्रम : एक बच्चा शेर की पोशाक में।
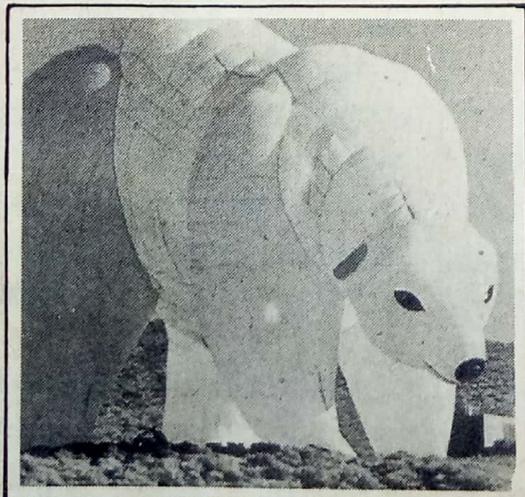
क्या कहा, भालू—नहीं भई, यह तो है एक बड़ा-सा गुब्बारा। उड़ान के लिए तैयार।

सोने-चांदी के सिक्कों की बारिश : नहीं यह खजाना एक माली को लंदन के बाग में मिला। खजाना तो सरकार ने ले लिया। मगर माली को इसकी पूरी कीमत (करीब सैंतालीस करोड़ रुपए) दी जाएगी।

हाथ में धन

भानाचार्य ज्योतिष के प्रकांड पंडित थे, मगर थे इतने गरीब कि पूछो मत । एक दिन...

हाथ देख दुनिया का भविष्य बताते हो । अपना हाथ देखा है कभी ?
देखा है । बेशुमार धन का योग है ।
मगर आएगा कब ?

एक बार गांव में राजा का मंत्री आया । उसने भानाचार्य के बारे में सुना...
हम भी हाथ दिखाने चलें ?
मगर गरीब किसान बनकर । देखें, क्या कहेगा ।

दोनों फटेहाल किसानों का वेश बना...
न खाने का ठिकाना, न रहने का ! सुख के दिन कब आएंगे ?
हाथ में तो राज योग है । दरबार में होना चाहिए । धन भी पर्याप्त ....
वाह ! अद्‌भुत ज्ञान है !

राजधानी पहुंच मंत्री ने राजा को सब कुछ बता कर...
ऐसा विद्वान गरीबी में दिन काटे, आपके रहते...
सच कहा । उसे मेरी ओर से दस हजार स्वर्ण मुद्राएं भिजवा दो ।

राजा का दूत स्वर्ण मुद्राएं ले भानाचार्य के घर पहुंचा...
महाराज ने आपके बारे में सुना... खुश होकर यह धन भेजा है...
सुनकर ही !...न...न...नहीं चाहिए। वापस ले जाओ...
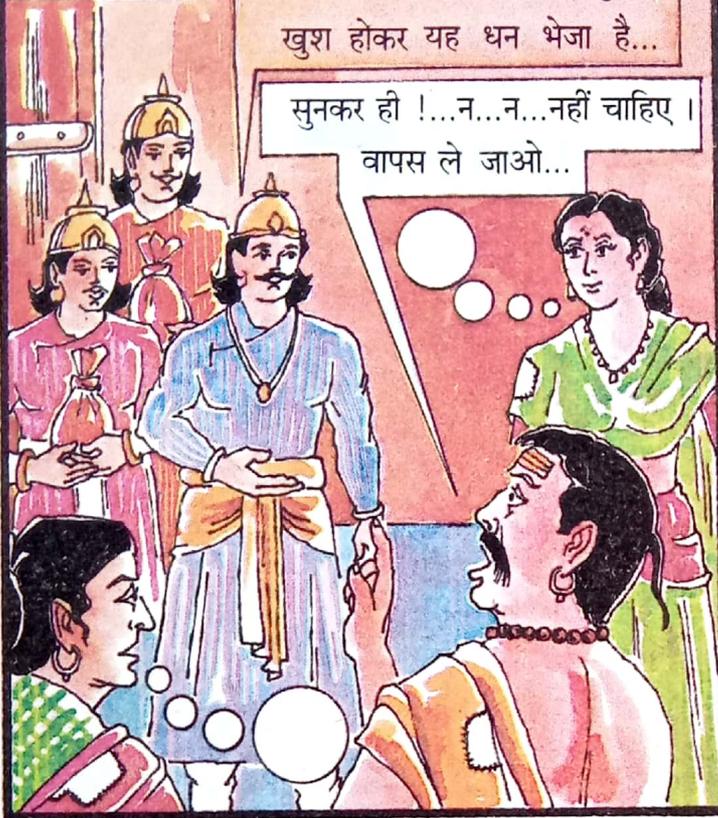
दूत को भानाचार्य की 'न' अखर गई। वह लौट गया, तो...
कहते हो, धन लिखा है हाथ में। राजा ने कृपा कर धन भेजा, तो ठोकर मार दी।
अरी पगली, ऐसी कृपा संकट लाती है। फांसी चढ़वा देती है।
संकट ! फांसी !!
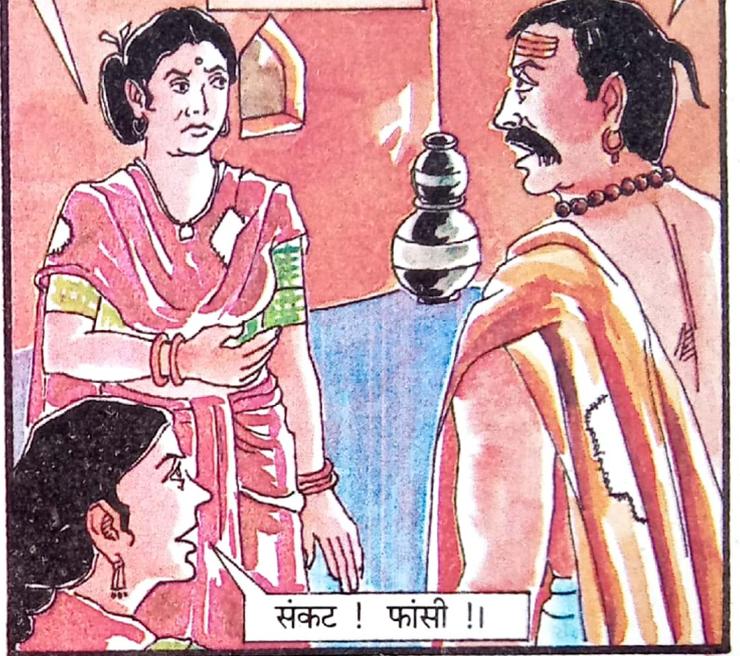
उधर महल में दूत ने नमक-मिर्च लगाकर...
भानाचार्य की अकड़ मैं निकालूंगा !
हमने बहुत अनुरोध किया महाराज, मगर उसने धन बाहर फेंक दिया। हमें धक्के देकर...
पकड़ लाओ उसे। सात दिन भूखा रखकर आठवें दिन फांसी पर लटका दो।
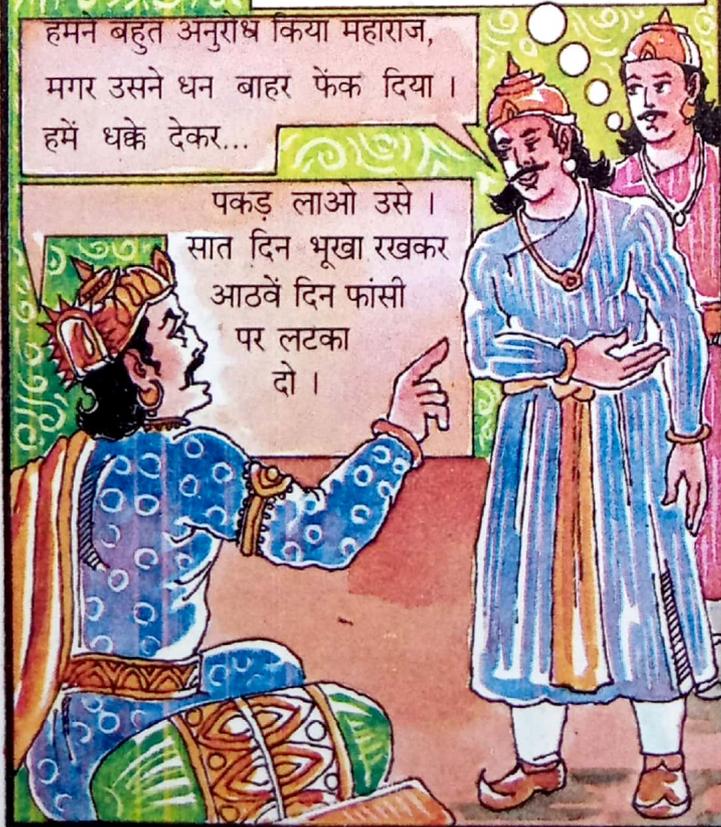
राजा के सैनिक भानाचार्य को पकड़ लाए। उसे...
हे भगवान !
और कर राजा की भेंट का निरादर। आठवें दिन फांसी...
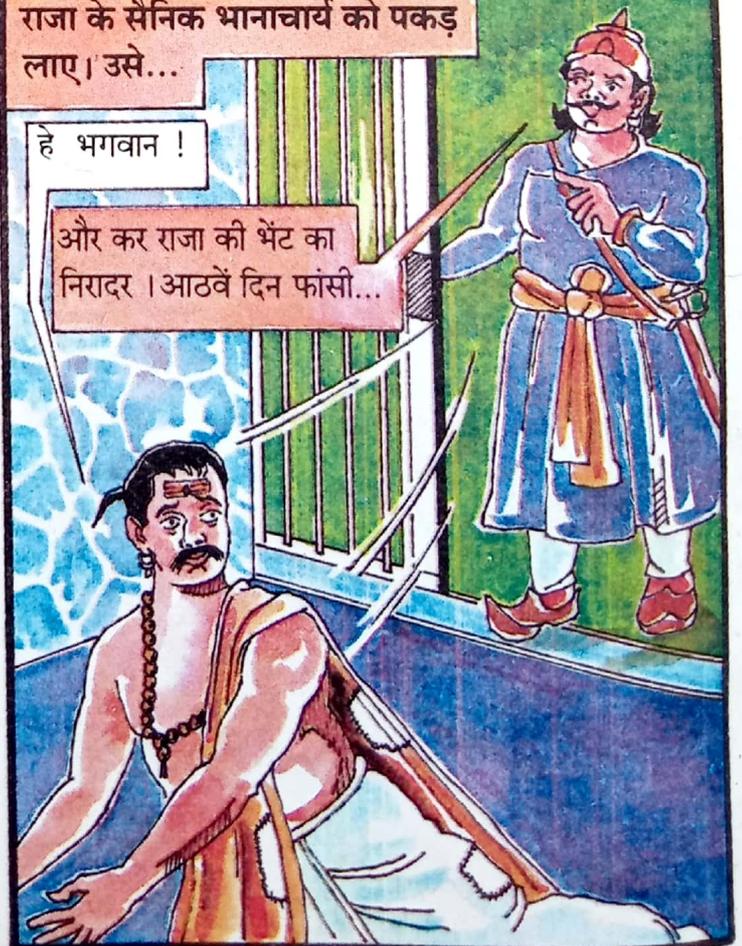
भानाचार्य की पत्नी को खबर मिली। वह रोती हुई राजा के पास पहुंची...
क्षमा कर दो महाराज। उन्होंने तो पहले ही कहा था—यह धन फांसी दिलवाएगा...
पहले कहा था! मगर कैसे! पता कैसे चला?
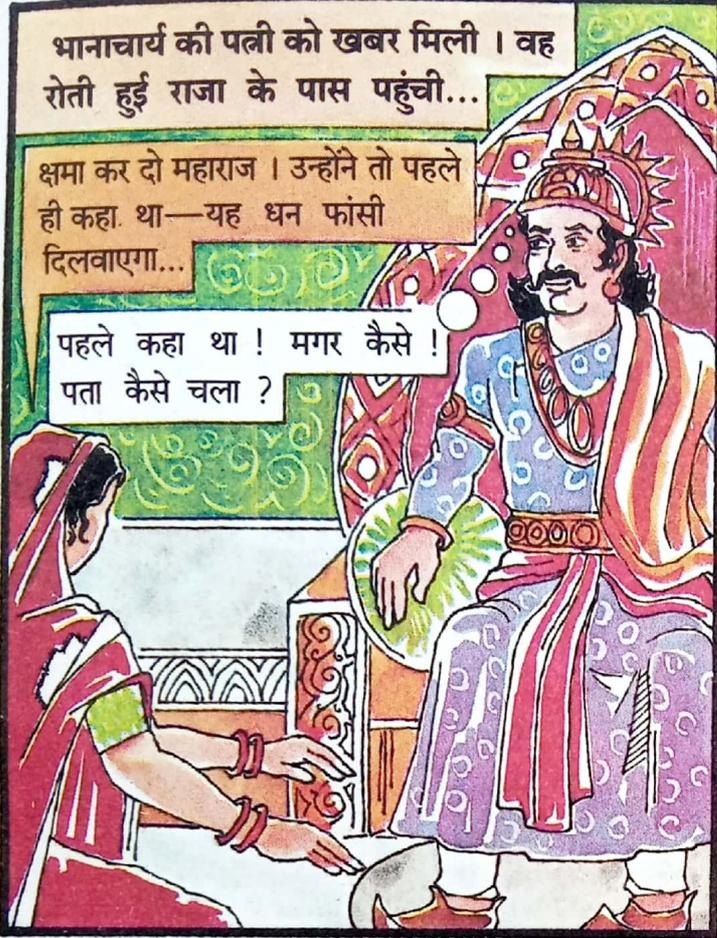
उस रात राजा सो न सका। अगले दिन दरबार में उसने भानाचार्य को बुलाकर...
सच बताओ, तुम्हें पहले कैसे पता चला कि मैं तुम्हें फांसी दूंगा?
आपके स्वभाव से राजन्। जो सुना, वही सच माना। प्रशंसा सुनी, तो धन। बुराई सुनी, तो फांसी। झूठी हो या सच्ची। इसी कारण...
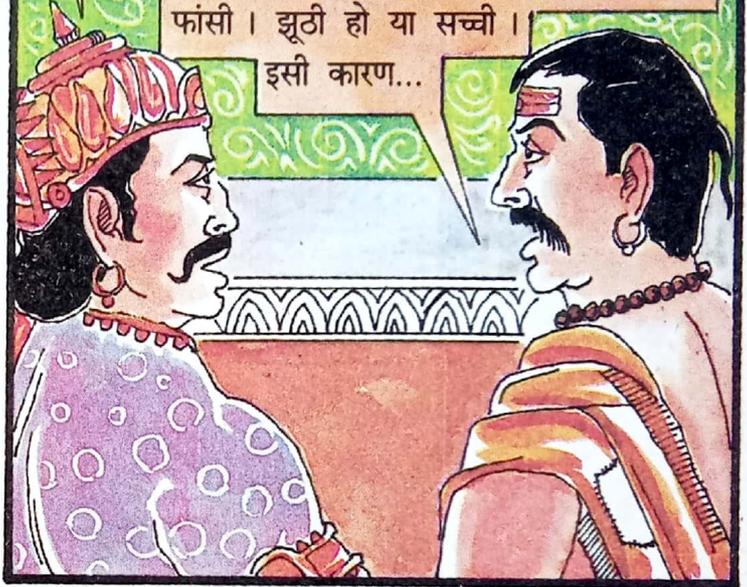
सुनकर राजा की आंखें खुल गईं
आज से हम बिना स्वयं परखे किसी बात पर न प्रसन्न होंगे, न नाराज। और तुम्हें बनाते हैं राज ज्योतिषी!
अब सही है।
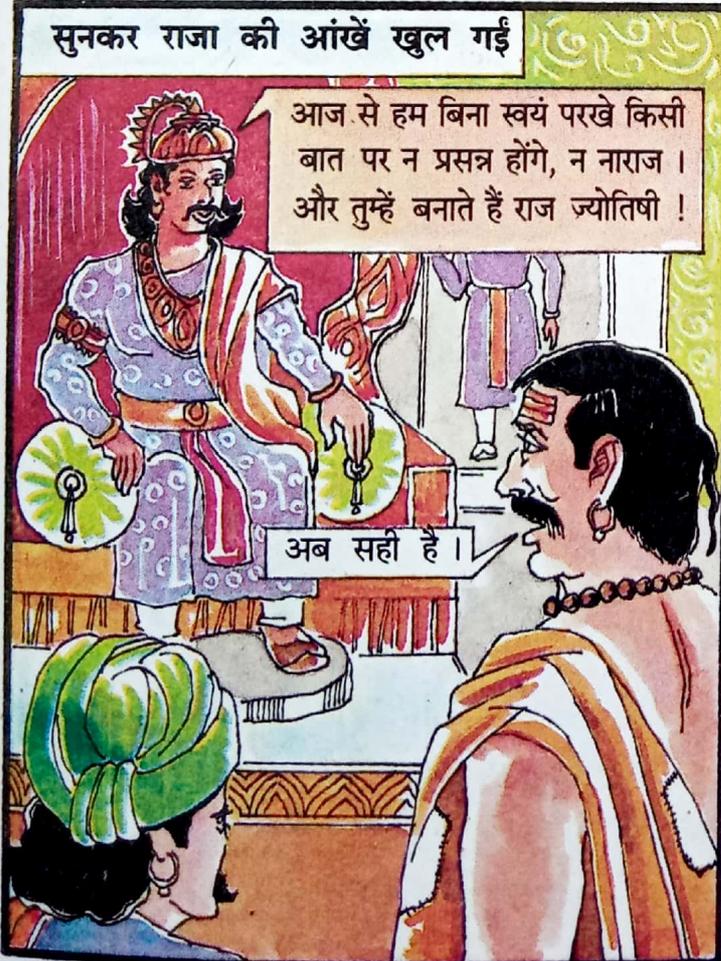
और फिर...
तुम ठीक कहते थे।
हाथ की रेखाएं जो कहती हैं, उन्हें समझने के लिए बुद्धि भी चाहिए---
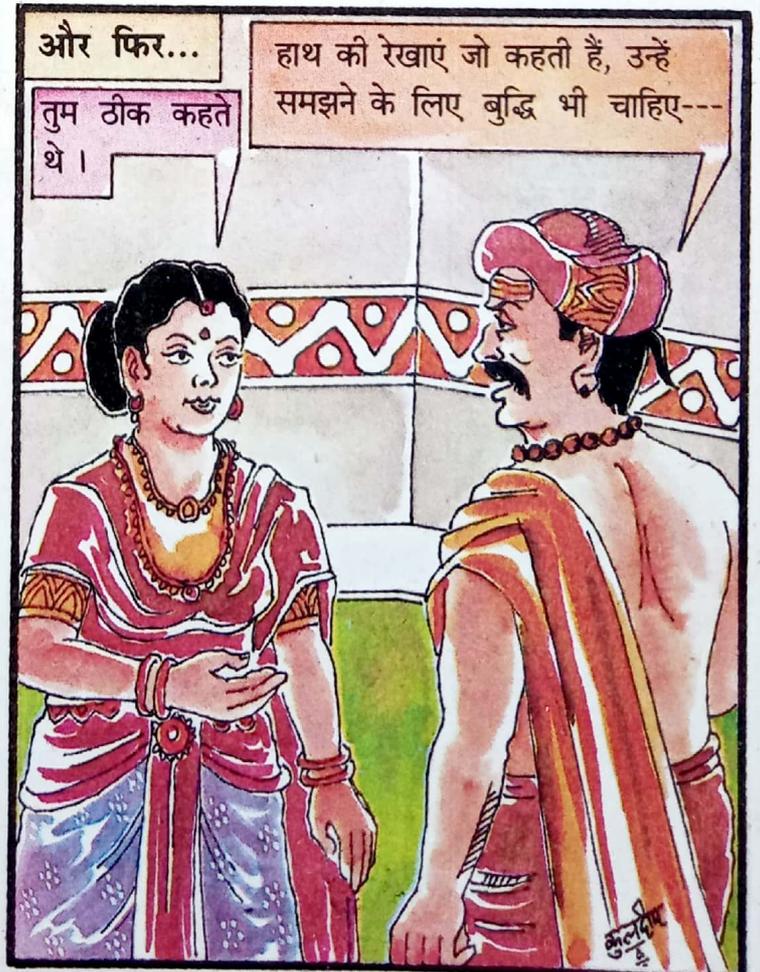
"चमचम निब और जादू सरपट, कॅम्लिन कर दे मेरा होमवर्क झटपट."
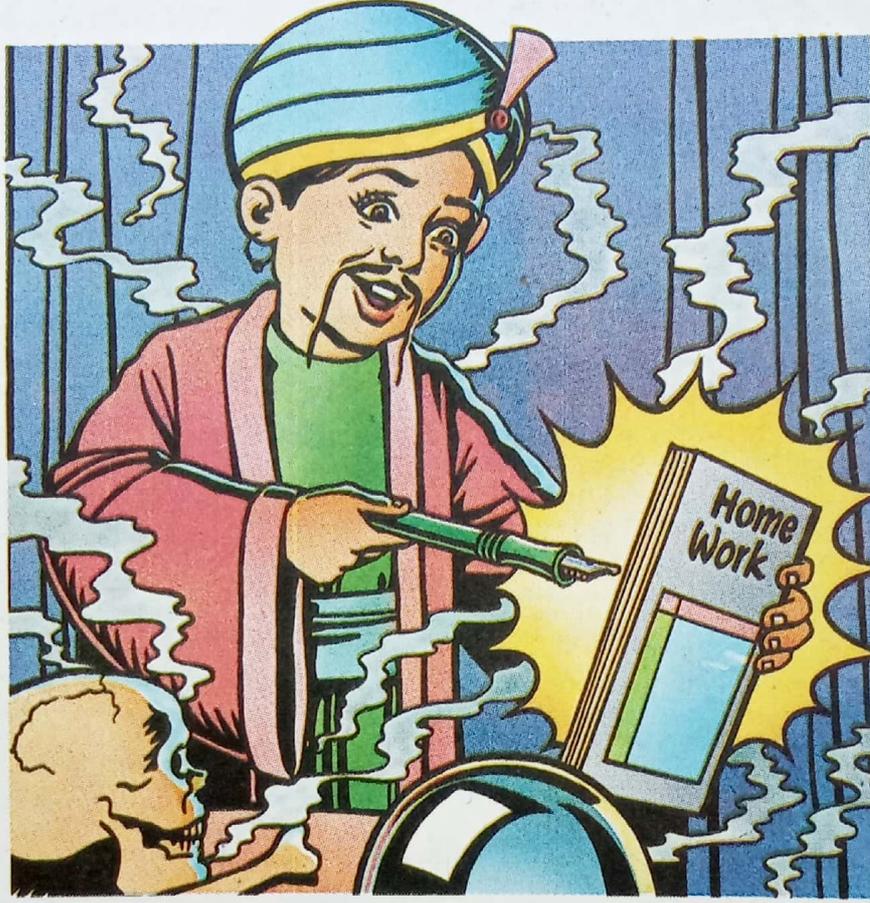
छोटा पाशा का जादू - कॅम्लिन फाउण्टेन पेन. इसकी बेहतरीन निब से लिखाई हो बढ़िया और कितनी जल्दी भी! तभी तो छोटा पाशा का होमवर्क ख़त्म हो जाए चुटकी बजाते. और खेलने को मिले ढेर सारा वक्त.

तुम्हारा सच्चा साथी.

गुफा में रोशनी

—चन्द्रेश्वर प्रसाद

बात उस जमाने की है जब रेल गाड़ियां, मोटर गाड़ियां नहीं थीं। लोगों को जब कभी आना-जाना होता, तो पैदल, बैलगाड़ी या घोड़े पर सवार होकर यात्रा करते थे। उस जमाने में यात्रा करना कठिन काम था। आबादी कम होने से जंगलों की भरमार थी।

उन्हीं दिनों किसी गांव के एक किसान भोला को अपने रिश्तेदार के गांव में जाने की जरूरत पड़ गई। उसे यह खबर मिली कि उसकी पत्नी का भाई बहुत बीमार है और उसके बचने की उम्मीद नहीं है। उसके सामने और कोई रास्ता नहीं रह गया था। उसे यात्रा करनी पड़ी क्योंकि उसकी पत्नी भी अपने भाई के बारे में चिंतित हो उठी थी। हालांकि वह भी साथ चलना चाहती थी, लेकिन घर संभालने वाला कोई और नहीं था। इसी कारण उसे लाचार होकर घर में ही रहना पड़ा। उसने अपने पति भोला के लिए तड़के सुबह चार रोटियां बनाकर पोटली में बांध दीं, ताकि उसे जहां भूख लगे, वहां खा ले। भोला खा-पीकर एक डंडा ले, रवाना हो गया। वह बहुत तेजी से चल रहा था, क्योंकि आसमान में बादल छांए हुए थे।

जब वह जंगल के बीच में पहुंचा, तब तक बूंदाबांदी शुरू हो गई। उसने तेजी से कदम बढ़ाए, पर बारिश थोड़ी तेज हो गई। उसने नजर उठाकर चारों ओर देखा कि कहां पर वह आड़ ले ले, जिससे वह भीगने से बच जाए। उसकी नजर पगडंडी के पास वाली पहाड़ी पर गई, जहां उसे एक गुफा नजर आई। उसे इस बात की आशा हो गई कि वह भीगने से बच जाएगा। वह ऊपर चढ़ने लगा। चूंकि गुफा का मुंह बहुत ज्यादा ऊंचाई पर नहीं था, अतः वह शीघ्र वहां पहुंच गया। तब तक बारिश का जोर बढ़ गया था। वह गुफा के अंदर घुस गया।

गुफा के मुहाने के पास तो थोड़ी रोशनी थी, लेकिन अंदर घनघोर अंधेरा था। हाथ को हाथ नहीं दीखता था। वर्षा और तेज हो गई। भोला पहले मुहाने के पास ही बैठ गया और खाने की पोटली बगल में रख ली। उसके मन में आया कि वह थोड़ा आराम कर ले, तो वर्षा थमने पर तेजी से निकल जाएगा। उसने अपनी लाठी उठाई और जिधर अंधकार था, उधर बढ़ाकर उसने अपनी लाठी ठकठकाई। गुफा के अंदर से कोई पक्षी या जानवर नहीं निकला। भोला को विश्वास हो गया कि अंदर लेटने की जगह है और गुफा एकदम खाली है। वह लाठी टिकाकर आगे बढ़ा। अचानक उसका पांव सरका और वह आठ-दस हाथ गहरे गड्ढे में जा गिरा। उसे जबरदस्त खरोंचें आ गईं तथा सिर में भी चोट आई। वह बेहोश हो गया।

वर्षा तेज होने के कारण एक और राही वहां आया। उसका नाम विजय था। वह थोड़ा भीग गया था। गुफा में घुसकर पहले तो विजय ने अंगोछे से अपना शरीर पोंछा तथा सुस्ताने के लिए बैठ गया। जब वह अंधेरे में कुछ देखने लायक हुआ, तो उसने देखा कि एक पोटली रखी हुई है और एक लाठी खड़ी है। विजय ने पोटली खोलकर देखा। उसमें ताजी रोटियां और चने का सत्तू था। उसे भूख लग रही थी। उसके जी में आया कि वह रोटियां खा ले। ताजी रोटियां, सत्तू और भुनी हुई लाल मिर्च देखकर उसके

मुंह में पानी आ गया । वह भूखा था, पर खाने का यह सब सामान देखकर भी उसने अपने को रोका ।

अचानक विजय के मन में यह बात आई कि पोटली और लाठी छोड़कर वह पहला व्यक्ति कहां गुम हो गया ? उसने बड़े जोर से आवाज लगाई—''कोई है ?'' उधर भोला को थोड़ा-थोड़ा होश आ रहा था । उसके कानों में भी गूंज पहुंची । पर वह इस स्थिति में नहीं था कि कोई उत्तर दे सके । बेहोशी दूर होने के कारण वह कराहने लगा । विजय को ऐसा लगा कि गुफा के अंदर कोई कराह रहा है । इसे कुछ दीख नहीं रहा था । बाहर वर्षा हो रही थी । उसके पास दियासलाई तो थी नहीं कि वह तत्काल रोशनी करता । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे । इतनी बात विजय जरूर समझ गया था कि रोटी उसी व्यक्ति की है, जो गुफा में कराह रहा है ।

विजय के मन में आया कि किसी प्रकार उस घायल व्यक्ति की जान बचाए । उसे एक उपाय सूझा । उसने अपने अंगोछे का एक टुकड़ा लिया तथा पत्थर के एक टुकड़े को गुफा के पत्थर पर रगड़कर आग पैदा करने की कोशिश करने लगा । थोड़ी देर के प्रयास के बाद उसे सफलता मिल गई । विजय ने लाठी में अंगोछा लपेटकर मशाल बनाई और रोशनी का प्रबंध किया । उसने देखा कि सामने तीन हाथ आगे गड्ढा है । उसने उसी ओर रोशनी की । इसके बाद नीचे गिरे व्यक्ति को हिम्मत बंधाई ।

इसके बाद विजय ने अपनी धोती निकाली । पोटली में बंधी घायल भोला की धोती निकालकर दोनों धोतियों की गांठ लगाई । उसे खड्ड में नीचे डालकर जोर से बोला—''या तो धोती के सिरे को जोर से पकड़े रहो अथवा कमर में बांध लो ताकि मैं तुम्हें ऊपर खींच सकूं ।'' भोला ने धोती कमर में बांधकर जोर से पकड़ ली, ताकि वह ऊपर पहुंच जाए । जब वह ऊपर आया, तो विजय ने देखा कि घायल व्यक्ति की हालत सचमुच खराब है । उसे काफी चोटें आई हैं ।

पूछने पर भोला ने बतलाया—''मैं अपनी ससुराल अपने बीमार साले को देखने जा रहा था, लेकिन इस समय तो मैं अच्छी तरह चल भी नहीं सकता । इस कारण मेरा ससुराल जाना संभव नहीं है ।'' भोला ज्यादा बात नहीं कर पाया था । उसका घाव दर्द कर रहा था । दूसरी समस्या थी भोला को वापस घर पहुंचाने की । विजय ने मन ही मन तय किया कि वह भोला को वापस उसके घर पहुंचाएगा । यद्यपि वर्षा थम गई थी, पर आसमान में बादल छाए हुए थे । वर्षा किसी भी समय शुरू हो सकती थी । दूसरे, वर्षा के कारण पगडंडी फिसलन भरी हो गई थी । इस कारण भोला को उसके घर पहुंचाना कठिन काम था । पर और कोई रास्ता नहीं था ।

विजय ने भोला का उत्साह बढ़ाते हुए कहा—''नौजवान होकर हिम्मत क्यों हारते हो ! उठो, हिम्मत कर चल पड़ो । घर लौटना तुम्हारे लिए जरूरी है ।'' भोला के मन में भी यही बात थी । किसी प्रकार भोला उठा । विजय ने उसे सहारा दिया । धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए वह चल पड़ा । कभी-कभी रास्ते की फिसलन इतनी होती कि विजय को उसे कंधे पर उठाकर पार करना पड़ता । लेकिन विजय ने भी साहस नहीं खोया । उसे धीरे-धीरे सहारा देता हुआ गांव ले आया । रात का पहला पहर बीत चुका था, जब विजय भोला को सहारा देते हुए उसके घर पर आया ।

भोला की पत्नी को उस दिन विशेष काम नहीं था । अतः उसने सबेरे अपना काम निपटाकर खाना खा लिया था । बच्चों को खिलाकर सोने लगी थी । उसी समय उसे लगा कि किसी ने पुकारा । उसने दरवाजा खोला, तो उसे भोला नजर आया । जब दूसरे व्यक्ति पर नजर पड़ी, तो वह विजय को पहचान गई । वह रिश्ते में उसका मामा लगता था । उसी से भोला की पत्नी को मालूम हुआ कि उसके भाई की तबीयत पहले से ठीक है । सभी लोगों ने भगवान का धन्यवाद किया । विजय बोला—''यदि ताजी रोटियां नहीं होतीं, तो शायद भोला का दम उसी खड्ड में निकल जाता, क्योंकि रोटियों के कारण ही मुझे भोला का पता चला था ।'' ●

महकता कालीन

—रामसेवक शर्मा

हिमालय की तराई में एक छोटा-सा गांव था फूलपुर। इसी में रामू का परिवार रहता था। रामू कालीन बुनने का काम करता था। उसकी एक फूल-सी प्यारी बच्ची थी— नीलम। रामू की पत्नी तथा पुत्री, दोनों ही उसके काम में हाथ बटातीं। रामू की पत्नी ऊन को सुंदर रंगों में रंगती। नीलम रंगी हुई ऊन को सुखाती तथा उसकी पिंडियां बनाती।

रामू की अंगुलियों में जैसे करामात थी। वह ऐसे कालीन बनाता कि देखने वाले दंग रह जाते। फूलपुर गांव में रामू के अलावा और लोग भी कालीन बनाते थे, लेकिन उन कालीनों में रामू जैसी कलाकारी नहीं होती थी। रामू के बुने कालीन हमेशा ऊंचे दामों पर बिकते थे।

एक रात रामू ने सपना देखा। चांदनी रात। पूरा चांद आसमान में खिला था। तभी एक परी घुंघरू खनकाती हुई धीरे-धीरे उसके पास आई। परी ने एक सुंदर शाल ओढ़ रखा था। रामू ने परी के शाल को ध्यान से देखा। शाल के बीचों बीच चांद और सितारे जड़े हुए थे और चारों ओर महकते हुए फूल। खुशबू से रामू का कमरा महकने लगा। दूधिया चांदनी में पूरा कमरा जगर-मगर हो रहा था।

परी ने रामू से कहा— "रामू, मैं परीलोक से आई हूं। मुझे मालूम है कि तुम बहुत सुंदर कालीन बुनते हो। मैं चाहती हूं कि तुम मेरे लिए एक कालीन बुनो। परीलोक में एक सभा होने वाली है। कालीन मेरे इस शाल जैसा हो।" यह कहते हुए परी ने अपना शाल रामू को दे दिया।

फिर रामू की नींद खुल गई। उसके पलंग पर सचमुच परी का महकता हुआ शाल रखा था। तो यह सपना नहीं था! सुबह हो रही थी। रामू ने अपनी पत्नी तथा पुत्री को रात वाला किस्सा कह सुनाया। उन्हें परी का महकता हुआ शाल भी दिखाया। दोनों शाल को देखकर हैरान रह गईं।
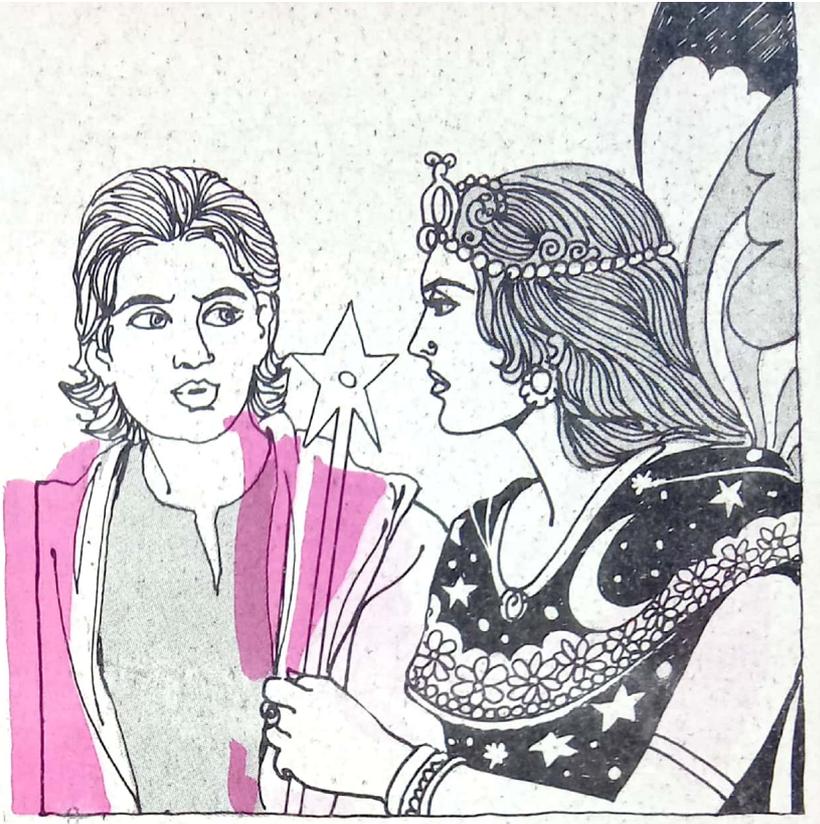
दोपहर को रामू की पत्नी हाट में गई। उम्दा किस्म की मुलायम ऊन खरीद कर लाई। फिर ऊन को चटक रंगों में रंगा। नीलम ने रंगी हुई ऊन को सुखाया तथा पिंडियां बनाईं।

दूसरे दिन से रामू परी के लिए कालीन बुनने के काम में जुट गया। कालीन बुनते हुए रामू खाना-पीना भी भूल जाता। कई महीने की कड़ी मेहनत के बाद कालीन तैयार हुआ। कालीन पर रामू ने चांद और सितारे बुन दिए। और चारों ओर फूल बुने। वह हर समय परी के ख्याल में खोया रहता। परी भी कई बार उसके सपनों में आई और कालीन के बारे में पूछा।

उस दिन भी पूरे चांद की रात थी। कालीन को लपेटकर रामू ने अपने कमरे में रख लिया। परी का दिया हुआ शाल भी पास ही रखा। कालीन को पूरा करके उसका मन खुश था।

आधी रात को रामू को घुंघरुओं की आवाज सुनाई दी। ऐसा लगा, कोई घुंघरू पहने हुए उसी की तरफ आ रहा हो। रामू पलंग से उठा। खिड़की से बाहर देखा। दूधिया चांदनी में उसे परी आती दिखाई दी।

रामू ने परी का स्वागत करते हुए कहा— "परी रानी, आपका कालीन बनकर तैयार है।"

परी ने कहा— "रामू, तुम बहुत अच्छे कारीगर

हो। मुझे विश्वास है, तुम्हारा बनाया कालीन परीलोक में सबको पसंद आएगा।''

फिर परी ने कमरे में आकर कालीन को उलट-पलटकर देखा। उसके शाल का डिजाइन जैसे कालीन पर हूबहू उतर आया था। परी ने महकने वाला शाल ओढ़ लिया। कालीन उठाया और बोली—''रामू, बताओ, तुम्हें क्या दूं ? तुम कुछ भी मांग सकते हो। चाहे कितना भी धन ले लो। हीरे-मोती, सोना-चांदी कुछ भी। इसके बाद तुम्हें फिर कालीन बुनने की आवश्यकता नहीं रह जाएगी।''

परी की बात सुनकर रामू सोच में पड़ गया— 'क्या मांगू और कितना ?' फिर कुछ सोचकर उसने कहा— ''मुझे अपनी कला पर गर्व है। मेरी कारीगरी ने ही आपको मेरे पास बुलाया। मुझे ऐसा कोई इनाम नहीं चाहिए, जिसे पाकर मैं अपनी कला को ही भूल जाऊं। मैं तो चाहता हूं कि इससे भी सुंदर कालीन बनाऊं। पूरी दुनिया में मेरा नाम हो जाए। है कोई ऐसी चीज आपके पास मुझे देने के लिए ?''

परी बोली— ''रामू, तुमने तो अपनी बात से मुझे हरा दिया। सचमुच मेरे पास ऐसी कोई चीज नहीं है। तुम्हारे जैसा कालीन बुनने वाला कलाकार तो हमारे परीलोक में भी नहीं है। मुझे यह सुनकर अच्छा लगा कि तुम अपनी कला से इतना प्यार करते हो।''

रामू मुग्ध भाव से परी की ओर देखता खड़ा था।

परी ने कुछ फूल रामू को दिए। बोली— ''रामू, ये फूल परीलोक का विशेष उपहार हैं तुम्हारे लिए। जो भी कालीन बनाओ, उस पर एक फूल लगा देना। बस, कालीन सदा महकता रहेगा। उसकी सुगंध कभी नहीं मिटेगी। सब तुम्हारी कला का सम्मान करेंगे। क्यों, अब तो खुश हो ?''

रामू ने सदा महकने वाले फूल लेकर परी को धन्यवाद दिया। इसके बाद परी कालीन उठाकर उड़ गई। रामू परी को चांदनी रात में अदृश्य होते देखता रहा। फिर न जाने कब उसे नींद आ गई।

सुबह उसकी नींद टूटी, तो कमरा महक रहा था। परीलोक के फूल सामने रखे थे। ●

काठ का तोता

—हेमचन्द्र जोशी

किसी समय घने जंगलों के बीच एक बरगद का वृक्ष था। वहां तोतों का एक झुंड रहता था। उसमें रुद्राक्ष नाम का तीव्र बुद्धि वाला एक तोता था। उसकी स्मरण शक्ति भी तेज थी।

एक बार जंगल से एक साधु, अपने शिष्यों के साथ गुजरा। बरगद को देखकर साधु ने अपने शिष्यों को वहीं ठहरने का आदेश दिया। शिष्यों ने वहां सफाई कर आस-पास कुटियाएं बना डालीं। वहां साधु शिष्यों को वेद-शास्त्र पढ़ाने लगा।

रुद्राक्ष वहां नियमित रूप से मंत्र और श्लोकों का पाठ सुनने लगा। धीरे-धीरे उसको ढेर सारे मंत्र और श्लोक कंठस्थ हो गए। अब सभी तोते रुद्राक्ष का आदर करने लगे।

एक बार रुद्राक्ष साधु की कुटिया के पास पहुंचा। साधु हवन कर रहा था। रुद्राक्ष ने उससे कहा—''हे महात्मा, मैं आपसे विचार-विमर्श करना चाहता हूं।''

साधु तोते को संस्कृत में बोलता देखकर हैरान था। किंतु हवन में विघ्न पड़ने के भय से कुछ न बोला। उसने हाथ से इशारा कर रुद्राक्ष को कुछ समय इंतजार करने को कहा।

रुद्राक्ष बोला—''हे मुनिवर, मैं आपसे शास्त्रार्थ करना चाहता हूं।''

साधु मंद-मंद मुसकराया। फिर भी वह रुद्राक्ष की बात का जवाब दिए बिना हवन करता रहा। अब रुद्राक्ष क्रोधित हो उठा। वह जोर से चिल्लाया—''हे महात्मा, आप इस प्रकार ढोंग करके मुझसे बच नहीं सकते। आपको शास्त्रार्थ करना पड़ेगा''

फिर भी साधु चुप रहा, तो रुद्राक्ष खीज कर उड़ा और उसने साधु के ऊपर बीट कर दी।

साधु ने क्रोध में कमंडल से हाथ में जल लिया। जल को मंत्रित किया। उसने रुद्राक्ष के ऊपर छिड़कते हुए कहा—''घमंडी तोते ! जा, तू काठ का तोता बन

जा, ताकि तू आज के बाद किसी साधु-महात्मा की भगवत्-भक्ति में विघ्न न डाल सके।'' शाप ने अपना असर दिखाया।

रुद्राक्ष का शरीर तुरंत ही काठ के तोते में बदल गया। वह भूमि पर गिर पड़ा।

रुद्राक्ष घर वापस कैसे जाता ? उधर रुद्राक्ष के माता-पिता को उसकी चिंता हुई। किसी तरह उन्होंने रात काटी। सुबह हुई, तो वे दूसरे तोतों के साथ रुद्राक्ष को ढूंढ़ते हुए उस साधु की कुटिया के पास पहुंचे। वहां उन्हें काठ का रुद्राक्ष मिल गया। रुद्राक्ष को काठ के रूप में देखकर उसके माता-पिता रोने लगे। तोते भी चीखने-चिल्लाने लगे।

तोतों का रोना सुनकर साधु कुटिया से बाहर निकला। उसका हृदय पसीज गया। साधु ने रुद्राक्ष की मां से कहा—''हे शुक देवी, तुम्हारा पुत्र मेरे शाप से काठ का तोता बना है। मैं शाप के प्रभाव को समाप्त तो नहीं कर सकता, पर उसके प्रभाव को कम कर सकता हूं। जब भी कोई तोता तुम्हारे बेटे को असली तोता समझकर छुएगा, तो यह पहले जैसा हो जाएगा।'' फिर साधु ने रुद्राक्ष की सारी कहानी तोतों को सुना दी।

रुद्राक्ष की मां तोतों की सहायता से उसको अपने साथ ले आई। फिर तोतों ने पेड़ पर ही एक मंदिर बनाकर उसमें रुद्राक्ष के शरीर को रख दिया। अब तोते रोज वहां जाते।

धीरे-धीरे यह बात तोतों के समाज में फैल गई। दूर-दूर के तोते रुद्राक्ष के मंदिर में आने लगे। सभी उसको काठ की मूर्ति समझकर छूते थे। अतः वह शाप से मुक्त कैसे होता ?

वर्षों बाद एक राजा राजकुमार के साथ जंगल में शिकार करने आया। बरगद के पास तोतों के झुंड को देखकर राजा को जिज्ञासा हुई। वह राजकुमार के साथ वहां गया। उनके पहुंचते ही सारे तोते वहां से उड़ चले। राजा रुद्राक्ष को देखकर आश्चर्य में पड़ गया। उसने रुद्राक्ष को हाथों में उठा लिया। राजा उसे काठ का बना जानकर आश्चर्य चकित रह गया। उसने तोता राजकुमार को दे दिया।

राजकुमार काठ के तोते को महल में ले आया। वह रोज काठ के तोते के साथ खेलता था। कुछ दिनों के बाद राजकुमार का तोते से जी भर गया। अतः रानी ने काठ के तोते को खिड़की में रख दिया।

उधर जंगल में बाकी तोते रुद्राक्ष के शरीर को खोजते रहे। समय बीतता गया। फिर कहीं झुंड से बिछुड़कर एक तोता भटकते-भटकते राजा के महल के पास पहुंचा। उसने खिड़की में उसी काठ के तोते को देखा। असली तोता समझकर वह रुद्राक्ष के पास जा बैठा। उसने रुद्राक्ष के शरीर को छू दिया। तुरंत चमत्कार हुआ। रुद्राक्ष शाप मुक्त होकर जीवित हो उठा। उसने तोते को धन्यवाद दिया। इसके बाद रुद्राक्ष साधु की कुटिया में पहुंचा। चरणों में गिरकर क्षमा याचना की। साधु ने उसे आशीर्वाद देकर विदा किया। अब रुद्राक्ष बरगद पर बने मंदिर में पहुंचा। वहां अपने पिता और मित्रों से मिलकर वह खुशी से नाच उठा। ●

पुतले ही पुतले

—दिलीप कुमार तेतरवे

प्रजापति रामगढ़ के राजा थे । उनका महल हरी-भरी सोने की घाटी में था । महल के चारों ओर फूलों से सजी बगिया थी । महल पर दिन में सूरज की किरणें पड़तीं, तो महल झिलमिला उठता । राजा प्रजापति कार्यकुशल थे । न्याय प्रिय थे । उनकी प्रजा सुखी थी । उनकी एक ही पुत्री थी हंसा । वह बूढ़े हो चले थे । हमेशा सोचते—'मेरे बाद राजा कौन बनेगा ?'

राजा के पड़ोसी राजाओं से अच्छे संबंध थे । पर उन्हें उधमपुर के राजा विक्रम पर विश्वास नहीं था । वह प्रत्येक वर्ष अपने किसी न किसी पड़ोसी राज्य पर हमला करता और अपने राज्य की सीमा का विस्तार करता था ।

एक दिन राजा प्रजापति को गुप्तचर ने खबर दी—"देव, एक माह बाद, विक्रम हमारे राज्य पर हमला करने वाला है ।"

प्रजापति चिंतित हो उठे । बोले—"मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है । सेनापति भी वृद्ध हो चुके हैं । कैसे टिक पाएगी अपनी सेना राजा विक्रम की विशाल सेना के सामने ? मुझे युद्ध में प्रवीण नया सेनापति नियुक्त करना होगा ।" वह विचारों में खो गए । तभी दासी ने राजा को राजकुमारी हंसा के गायब होने का समाचार दिया । अब तो वह और भी परेशान हो गए । उसी दिन उन्हें सूचना मिली कि विक्रम कभी भी रामगढ़ पर हमला कर सकता है । प्रजापति सारा दुःख भूल गए । उन्होंने राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया—'कल राज मैदान में रण कौशल प्रतियोगिता होगी । राज्य का कोई भी वीर प्रतियोगिता में भाग ले सकता है । प्रतियोगिता में विजयी योद्धा राज्य का नया सेनापति होगा ।'

अगली सुबह मैदान में योद्धाओं की भीड़ लग गई । रण कौशल प्रतियोगिता एक तरुण ने जीती । उसका नाम वीर था । राजा ने कहा—"वीर, तुम आज से वीरगढ़ के सेनापति हो ।

वीर बोला—"देव, मैं राज्य की रक्षा के लिए अपने प्राणों की भी चिंता नहीं करूंगा ।"

वीर ने शीघ्र ही पुतले बनाने वाले कारीगरों से हजारों पुतले बनवाए । पुतले दूर से देखने में असली सैनिक लगते थे । फिर वह राजा के पास पहुंचा । बोला—'दक्षिण के पहाड़ी सीमा क्षेत्र में शत्रु का सामना करने के लिए,मैं आज रात में वहां अपने सैनिकों का जाल बिछाना चाहता हूं ।" यह सुन,राजा ने उसे आज्ञा दे दी ।

वीर रात में ही दक्षिण के पहाड़ी क्षेत्र में पहुंचा । चांदनी रात थी । वीर ने सेना को चारों तरफ तैनात कर दिया । उसने पुतले सैनिकों को झाड़ियों में खड़ा कर दिया । दूरसे लगता—सैनिक अस्त्र-शस्त्र लिए लड़ने को तैयार हैं ।

राजा विक्रम की सेना ने पहाड़ी क्षेत्र में प्रवेश किया । तुरंत उसकी सेना पर तीर और पत्थरों की बौछार शुरू हो गई । विक्रम हतप्रभ था । उसके सैनिक भी इस हमले से घबरा गए । सैनिक तितर-बितर होकर भाग खड़े हुए ।

राजा विक्रम मात खाकर नगर लौट पड़ा । उसने कुछ ही दिनों में सैनिकों को पुनः इकट्ठा किया । राजा ने उनसे कहा—"रामगढ़ की मुट्ठी भर सेना से डरने की क्या जरूरत है ? फिर वहां का सेनापति एक युवक है । इस बार हमें जीतकर लौटना है ।"

राजा विक्रम के सेनापति ने डरते हुए कहा—"देव, रामगढ़ के सैनिकों की संख्या बहुत है । वे सैनिक ऊंची पहाड़ी और जंगली रास्तों में छिपे हैं ।" ।

राजा विक्रम आगबबूला हो उठा—"सेनापति, तुम कायरों जैसी बात क्यों करते हो ? हम किसी एक जगह पर इकट्ठे होकर अपनी पूरी ताकत से उन पर

हमला करेंगे । फिर हमें रामगढ़ जाने से कोई नहीं रोक पाएगा ।'' कहकर राजा विक्रम ने अपनी सेना के साथ कूच कर दिया ।

इस बार भी विक्रम के सैनिकों पर तीर और पत्थरों की भीषण वर्षा शुरू हो गई । उसके सैनिक फिर भाग खड़े हुए । लेकिन इस बार राजा विक्रम को भागने का मौका नहीं मिला । वीर ने उसे अपने सैनिकों के साथ चारों ओर से घेर लिया ।

राजा विक्रम चीख पड़ा—''क्या तुम रामगढ़ वालों को युद्ध का नियम भी नहीं मालूम ? मैं अकेला हूं । तुम लोग हजारों की संख्या में हो । अगर तुम लोगों में कोई साहसी है, तो वह मेरे साथ अकेला लड़े ।''

वीर ने जवाब दिया—''राजा विक्रम ! बेहतर होगा, आप यहां से अपनी राजधानी लौट जाएं । इसके साथ ही आप वायदा करें कि भविष्य में रामगढ़ पर हमला नहीं करेंगे ।''

राजा विक्रम क्रुद्ध होकर बोला—''वीर, मैं तुमसे यहां कुछ सीखने नहीं आया हूं । रणभूमि में वीरता की परीक्षा होती है । अगर तुम चाहो, तो लड़ सकते हो ।''

वीर ने तलवार निकाल ली । राजा विक्रम और वीर

के बीच युद्ध शुरू हो गया । राजा विक्रम वीर पर तेज आक्रमण करने लगा । वीर ने अचानक पैतरा बदलकर राजा विक्रम पर बिजली की गति से हमला किया । विक्रम की तलवार के दो टुकड़े हो गए । वह भूमि पर गिर पड़ा । वीर ने उसकी छाती पर तलवार टिकाते हुए कहा—''राजा विक्रम, अब आप बंदी हैं।''

वीर ने बंदी राजा विक्रम को अपने राजा के सामने पेश किया । राजा प्रजापति ने कहा—''सेनापति वीर, मैं तुम्हारी विजय से प्रसन्न हूं । तुम मेरे पास आओ और अपना पुरस्कार ग्रहण करो ।''

वीर राजा के निकट पहुंचा । राजा ने वीर को नया मुकुट पहनाने के लिए, उसके सिर का पुराना मुकुट उतारा । पर यह क्या ! मुकुट हटते ही वीर की घनी केशराशि खुल गई । वीर के वेश में राजकुमारी हंसा थी । राजा प्रजापति खुशी से गद्‌गद्‌ हो उठे ।

राजा बोले—''बेटी, मैं नाहक अपने मन में पुत्र और पुत्री के बीच भेद-भाव कर परेशान था । तुम जैसी बेटी पाकर मैं धन्य हूं ।''

फिर राजा प्रजापति ने विक्रम से कहा—''राजा विक्रम, आप अपने अपराध का दंड स्वयं बताएं ।''

विक्रम ने कहा—''आपकी पुत्री का देश प्रेम देखकर मेरी युद्ध की इच्छाएं समाप्त हो गई हैं । मेरा घमंड टूट चुका है । अब आप ही मेरे राज्य का संचालन कीजिए । मैं जंगल में रहकर भगवत्-भजन करना चाहता हूं ।''

राजा प्रजापति ने कहा—''राजा विक्रम, आपका पुत्र राजकुमार प्रगल्भ होशियार और वीर है । आप उसे अपना राज सिंहासन सौंप दें । फिर आप किसी वन में जाकर गुरुकुल की स्थापना करें ।''

राजकुमारी ने कहा—''देव, मेरे समीप छद्‌म वेश में राजकुमार प्रगल्भ खड़े हैं । कुछ दिन पूर्व वह अपने पिता की युद्ध लिप्सा से तंग आकर मुझ से मिले थे । इन्होंने ही मुझे पुतले सैनिकों की युक्ति सुझाई थी ।'' फिर उसने अपनी युद्ध नीति की कहानी सबको सुना दी । ●

☐ यात्री—गलती हो गई, मुझे ऐसे बेकार होटल में आना नहीं चाहिए था।
मैनेजर—जाते-जाते बिल चुकाने की एक गलती और करते जाइए। बड़ी मेहरबानी होगी आपकी।

☐ पिता—बेटा, आज तो तुम्हें स्कूल जरूर जाना चाहिए। स्कूल का रिजल्ट निकलने वाला है।
बेटा—स्कूल से आने पर मम्मी की डांट-फटकार मुझसे नहीं सुनी जाएगी। इसलिए आप ही स्कूल चले जाइए!

☐ यात्री—मैं जिस होटल में भी एक बार ठहर जाता हूं, वहां के लोग मुझे दो-तीन वर्ष तक नहीं भूलते।
मैनेजर—आप बिलकुल ठीक कहते हैं। आज से तीन वर्ष पहले आप यहां ठहरे थे। पर आपने बिल नहीं चुकाया। कहीं आप वही बिल चुकाने तो नहीं आए हैं?

☐ राम—मैं सुबह तुम्हारे घर आया था। पर तुम न जाने कहां गायब थे?
श्याम—मैं तो घर में ही था। लगता है, तुम मेरे पड़ोसी के घर से ही लौट गए।

☐ एक आदमी—क्यों भाई! अस्पताल चलोगे?
रिक्शा वाला—जी नहीं। देखते नहीं मुझे, मैं अभी-अभी अस्पताल से पट्टी बंधवाकर आ रहा हूं।

☐ एक यात्री—भाई साहब, आपने तो मेरी चप्पलें ही तोड़ दीं।
दूसरा आदमी—माफ करना। फिर भी यदि आपको नई चप्पलें लेनी हों, तो मेरी दुकान का पता आप लिख लें।

☐ अधिकारी—मैं देखते-देखते सारे काम निपटा देता हूं।
कर्मचारी—सर, तभी तो आपका बार-बार तबादला होता रहता है।

☐ बेटा—आज मैं बिलकुल शोर नहीं मचाऊंगा।
पिता—लगता है, तुम्हारी मम्मी ने सुबह-सुबह तुम्हें जेब खर्च दे दिया है।

☐ एक मित्र—तुमसे अच्छा तो तुम्हारा पड़ोसी है। कम से कम मेरा दुःख-दर्द तो सुन लेता है।
दूसरा मित्र—वह सुनेगा कैसे? वह बचपन से ही बहरा है।

☐ एक कलाकार—मुझ जैसा कलाकार कभी-कभी घर से बाहर निकलता है।
एक आदमी—तभी तो आपको कम लोग पहचानते हैं।

☐ मां—बेटा, एक तो तुम गलती करते हो और फिर माफी भी नहीं मांगते। यह बात ठीक नहीं।
बेटा—मां, आज मैं दोनों ही काम करूंगा और आपको शिकायत का मौका भी नहीं दूंगा।

☐ एक आदमी—पहरेदार भाई, आजकल मुहल्ले में चोरियां कम हो रही हैं।
पहरेदार—हां, क्योंकि दूसरा पहरेदार छुट्टी पर है।

☐ राहगीर—माफ करो भाई, जेबें खाली हैं।
भिखारी—कोई बात नहीं, सूटकेस में से ही निकालकर दे दीजिए।

तेनालीराम ३०८

नए पहरेदार

राजा कृष्णदेव राय ने नया महल बनवाया। मंत्री से कहा—"ईमानदार और परिश्रमी पहरेदारों की व्यवस्था करो।"

मंत्री ने दूर-दूर तक मुनादी कराई। उम्मीदवारों की भीड़ लग गई। सही लोगों की परख के लिए मंत्री ने उपाय खोजा। प्रतिदिन दो-दो उम्मीदवार हर दरबारी को दे दिए जाते। दरबारी उनसे रात भर पहरेदारी कराते। दिन भर घर के काम कराते।
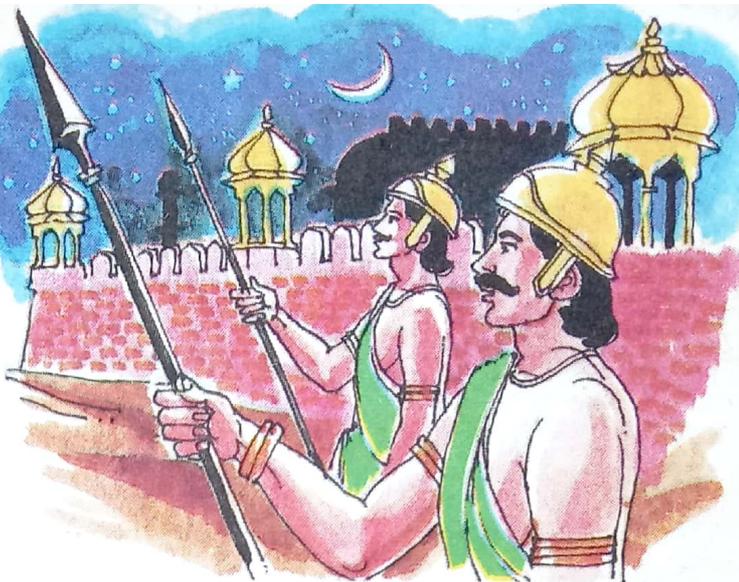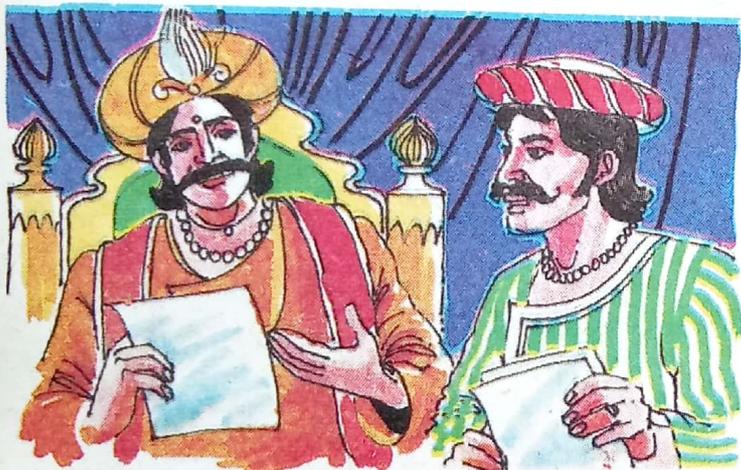
एक दिन मंत्री ने राजा कृष्णदेव राय के सामने दो सूचियां रखीं। पहली सूची में वे नाम थे, जिन्होंने रात भर पहरेदारी की और दिन भर पूरी मेहनत से काम भी किया। दूसरी सूची में वे नाम थे, जिन्होंने रात भर पहरेदारी तो की, किंतु दिन में काम करते समय लापरवाही दिखाई।

दोनों सूचियां राजा ने पढ़ीं। मंत्री से बोले—"पहली सूची वालों को रख लिया जाए।"

सारे दरबारियों ने उनके निर्णय की प्रशंसा की, किंतु तेनालीराम चुप रहा। राजा को अटपटा-सा लगा। पूछ बैठे—"क्यों तेनालीराम, फैसला ठीक लगा ?"

—"नहीं महाराज।"

राजा को अच्छा नहीं लगा। दरबारी भी बोले—"अब यह महाराज के फैसले में भी दोष निकालने लगे।"

राजा कृष्णदेव राय ने कहा—"बताओ, हमारा फैसला तुम्हें उचित क्यों नहीं लगा ?"

तेनालीराम ने कहा—"महाराज, जो सारी रात जागकर मुस्तैदी से पहरा देगा, वह अगले दिन पूरी मेहनत से सेवक धर्म कैसे निभा पाएगा ?"
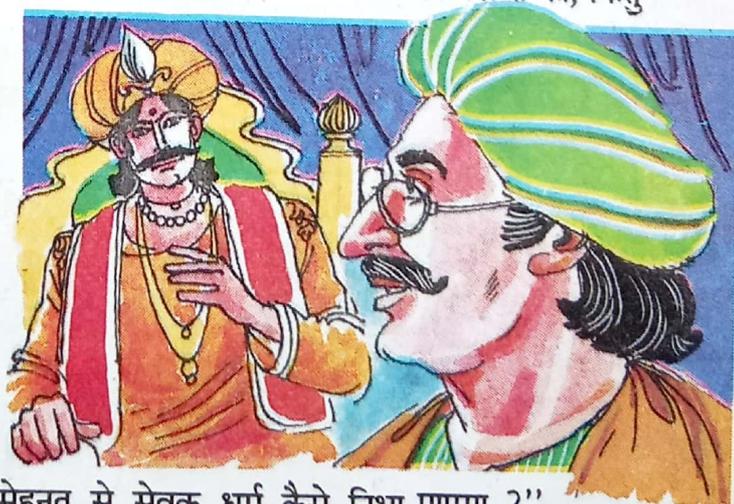
राजा का क्रोध छूमंतर हो गया। उन्होंने छानबीन कराई। पता चला कि पहली सूची में दर्ज उम्मीदवारों ने रात को पहरेदारी के बीच नींद भी ली थी। इसके विपरीत दूसरी सूची में दर्ज लोगों ने पूरी तरह जाग कर रात भर पहरा दिया।

राजा ने अपना निर्णय बदल दिया। नियुक्ति दूसरी सूची के लोगों की गई। तेनालीराम की प्रशंसा की।
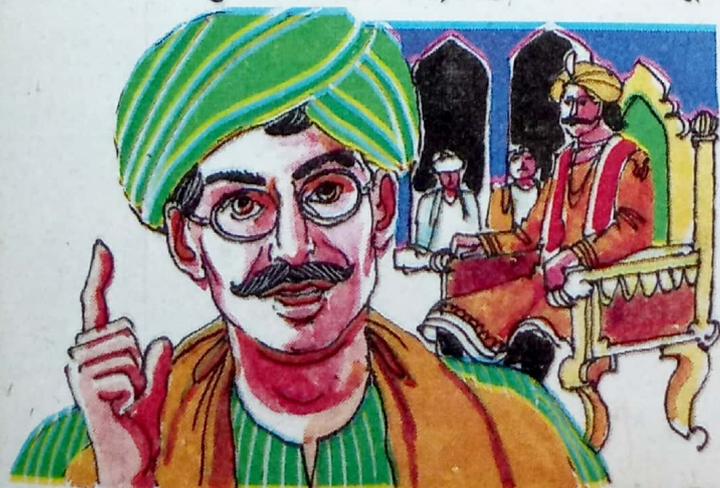
एको स्केच से रंगबिरंगे मुखौटे न केवल बनाना आसान... बल्कि ये है मौज-मस्ती का सामान!
एको – अनेक सुंदर रंगों में १२, २४ और ३० के पैक में उपलब्ध.
और एको की सबसे बड़ी खूबी, ये हैं वॉटर-बेस रंग और अविषैले भी
यानी इनका इस्तेमाल भी नन्हें-मुन्नों के लिए पूरी तरह सुरक्षित है!
एको से बनाइए सुंदर मुखौटे!
और फिर जब मम्मी देखेंगी आपका कमाल...
तो खुशी से होगा बुरा हाल!
हजारों इनाम जीतो!
एको 'फन-विथ-कलर्स' प्रतियोगिता में हिस्सा लीजिए! प्रवेश-पत्र हर पैक के साथ उपलब्ध हैं.
एको – मौज़मस्ती का बेहिसाब हंगामा!
मुफ़्त! कलरिंग बुक हर पैक के साथ!
Ekco®
आपकी कला की सुंदर अभिव्यक्ति.
Karishma/SW/6/2318 HID
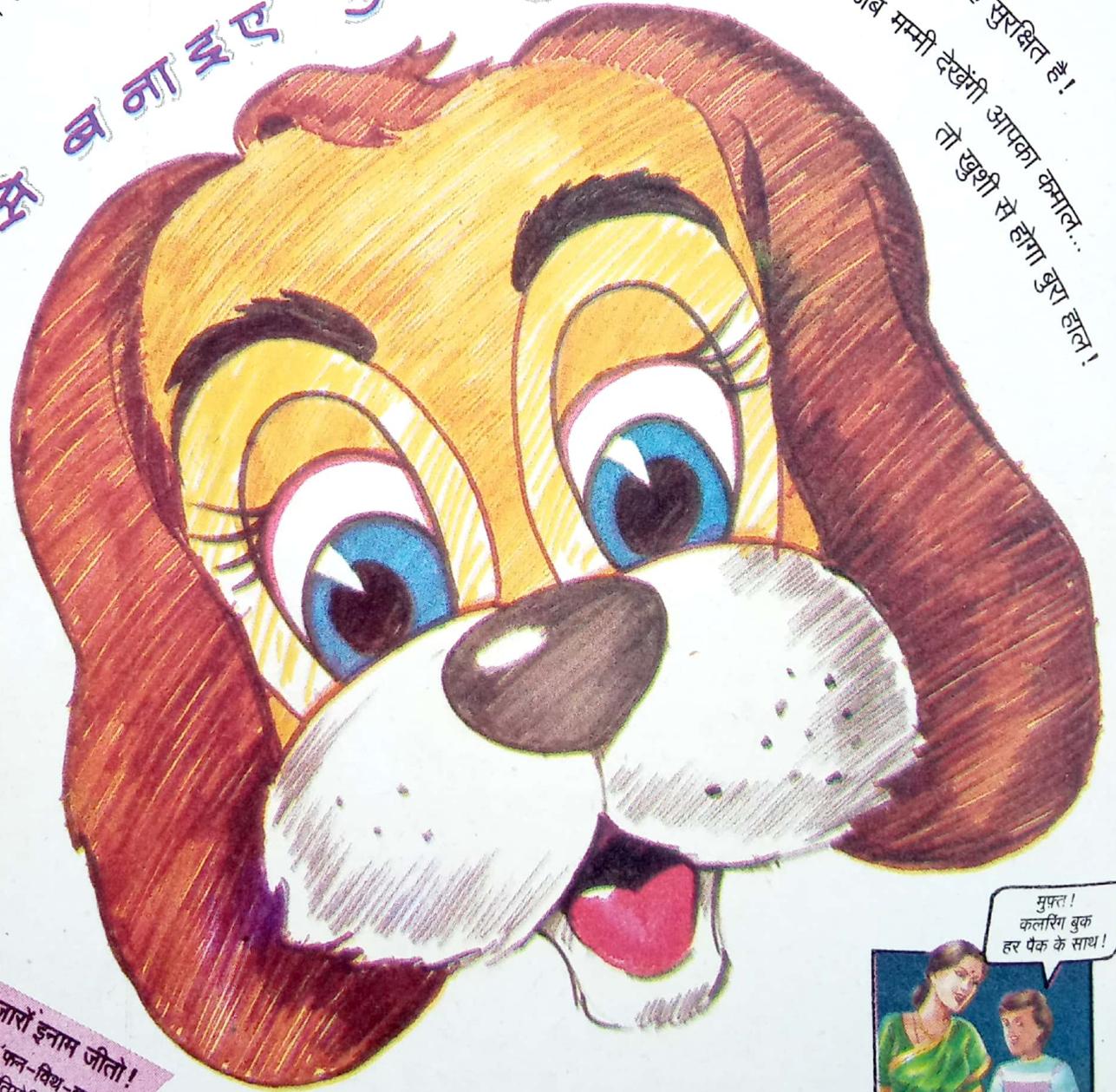
मेरा अमूल चॉकलेट चिड़ियाघर
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
FLAVOURED
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
ORANGE
Amul
MILK CHOCOLATE
CRUNCH
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
Amul
Badambar
RADEUS/GCMMF/AMC/737/9-93-HIN
अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट
वितरक—
गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क
मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड
आणंद ३८८ ००१.

रात में राजा

— हरफूल सुईवाल

पुराने जमाने की बात है। एक राजा था कर्मजीत। राजा परोपकारी और धर्मात्मा था। राज्य में कोई दुखी और असंतुष्ट नहीं था। चारों ओर राजा की जय-जयकार हो रही थी। राजा प्रजा के दुःख जानने के लिए अक्सर रात को वेश बदलकर घूमता था।

एक बार अमावस्या की रात को राजा वेश बदलकर नगर की गलियों में निकल पड़ा।

जब राजा ने वापस लौटने की बात सोची, उसी क्षण किसी औरत के रोने की आवाज सुनाई दी। एक क्षण वह ठगा-सा खड़ा रह गया। सोचा-'भला इतनी रात गए, ऐसी कौन दुखियारी औरत है जो रो रही है?'

राजा यह जानने के लिए उस दिशा में बढ़ गया। उस घर के सामने पहुंचकर वह रुक गया। उसने अंदर हल्का-सा प्रकाश देखा। एक बुढ़िया धीरे-धीरे रोने के साथ-साथ, थोड़े-से अनाज को साफ कर रही थी।

राजा बोला— "माता, इतनी रात गए तुम क्यों रो रही हो?"

राजा की बात सुन, बुढ़िया चुप हो गई। बोली— "माता कहने वाले तुम कौन हो बेटा, जो मुझ दुखियारी के पास चले आए?"

— "मैं भी इसी राज्य में रहता हूं। पर तुम अपना दुःख कहो न?"

— "मैं गरीब बुढ़िया इस घर में अकेली रहती हूं। आज घर में बस इतना ही अनाज था। सोचा, खिचड़ी बनाकर खाऊंगी, पर मेरा दुर्भाग्य तो देख। यह अनाज नीचे बिखर गया। तब से भूखी बैठी, इसे साफ करने में लगी हूं।"

बुढ़िया के प्रति राजा के मन में दया उमड़ आई। वह उसके पास बैठकर अनाज को साफ करते हुए बोला— "यहां का राजा तो दयालु और परोपकारी है। तुम उसके पास चली जातीं, वह जरूर तुम्हारी मदद कर देता।"

— "बेटा, सुना तो मैंने भी है, पर सचमुच में यदि वह ऐसा होता, तो क्या मुझ जैसे असहाय लोगों के लिए कोई अनाथालय न खुलवा देता।"

उसकी बात सुनकर राजा हक्का-बक्का रह गया। सोचा— 'काश! मैंने यह बात पहले सोची होती, तो आज इस बुढ़िया को इतना कष्ट और दुःख न भोगना पड़ता।' वह बोला— "माता, कल सुबह ही मैं यह बात जाकर राजा से कहूंगा। वह धर्मात्मा राजा मेरी बात जरूर मान लेगा।"

राजा ने अनाज साफ किया। उसे कूट-पीसकर एक बर्तन में डाला और चूल्हे पर चढ़ा दिया। जब खिचड़ी पककर तैयार हो गई, तो राजा ने बुढ़िया से कहा— "लो... तुम्हारी खिचड़ी तैयार है।" स्वयं राजा ने एक थाली में खिचड़ी परोसकर बुढ़िया के सामने रखी।

बुढ़िया खिचड़ी खा चुकी, तो राजा ने जूठे बर्तन साफ किए। बुढ़िया के सोने के बाद राजा वहां से निकलकर, महल की ओर बढ़ा।

उस समय नारद मुनि मृत्यु लोक में घूमते हुए उधर से गुजर रहे थे। बुढ़िया की ऐसी सेवा करते देख, वह राजा से बहुत प्रसन्न हुए। मन ही मन राजा की प्रशंसा करते हुए, आगे निकल गए। जब देव लोक में नारद मुनि पहुंचे, तो वहां कई देवी-देवता बैठे थे। पहले इंद्र ने कहा— "कहो महर्षि, मृत्यु लोक में घूमकर क्या देख आए?"

— "बहुत कुछ देखा। अपने धर्म को भूलकर उसके नाम पर सुख भोगने वाले अधिक, पर अपने

धर्म की खातिर सुख न चाहने वाला बस, एक ही राजा देखा।''

नारद मुनि की बात सुन, इंद्र ने फिर पूछा— ''वह राजा कौन है, जो धर्म की राह पर चलकर स्वर्ग में आना चाहता है ?''

''राजा कर्मजीत !'' नारद मुनि ने कहा— ''वह इतना दयालु और धर्मात्मा है कि प्रजा के सुख की खातिर अपना सब कुछ न्योछावर कर सकता है।''

''अच्छा...'' इंद्र ने चौंककर पूछा— ''भला, ऐसा क्या देखा उस राजा में ?''

''एक असहाय बुढ़िया के भोजन के लिए स्वयं राजा ने कंकड़-मिट्टी से अनाज बीनकर उसे कूटा-पीसा और खिचड़ी बनाई। इतना ही नहीं, उस बुढ़िया को अपने हाथों से खिचड़ी परोसी। जूठे बर्तन भी राजा ने साफ किए। सारी प्रजा उस राजा की जय-जयकार करती नहीं थकती है।''— नारद जी ने कहा।

इंद्र बोले— ''महर्षि, राजा प्रजा का शासक होता है। प्रजा के बारे में सोचना उसका कर्तव्य है। कर्मजीत ने सेवा करके अपना कर्तव्य ही निभाया है। जब तक किसी प्राणी के लिए वह खुशी-खुशी अपने प्राण नहीं दे देता, उसे परोपकारी और धर्मात्मा कहना उचित नहीं होगा।''

नारद और इंद्र एक-दूसरे की बातों से सहमत नहीं हुए। उधर राजा कर्मजीत अपनी नैतिकता पर धर्म के साथ अटल था, इस कारण चारों ओर दिन-प्रतिदिन उसकी कीर्ति बढ़ती ही गई। एक दिन राजा घोड़े पर सवार होकर, घूमने निकल पड़ा। रात हो आई। जंगल में बहती नदी के किनारे पहुंचकर, राजा रुक गया। चांदनी रात और एकांत में राजा काफी सुख महसूस कर रहा था।

अचानक किसी गाय के रंभाने की आवाज सुनकर, राजा चौंक उठा। सोचा कि जरूर यह गाय किसी मुसीबत में फंसी है। अगले ही क्षण, वह उस ओर बढ़ चला। थोड़ी दूर चलने पर देखा, एक गाय दलदल में फंसी है। राजा ने घोड़ा छोड़ा और गाय को निकालने चला। बहुत कोशिश के बाद भी वह गाय को नहीं निकाल पाया। तभी राजा ने शेर की दहाड़ सुनी। राजा ने गाय के प्राण बचाने के लिए अपने प्राणों की परवाह नहीं की। वह शेर से लड़ता रहा। दोनों ही घायल हो गए। पर शेर दल दल में फंसी गाय की ओर नहीं जा सका।

उस समय पास ही खड़े पेड़ से एक यक्ष ने कहा— ''राजन, एक गाय की खातिर क्यों अपने प्राण संकट में डाल रहे हो ?''

''मुसीबत में फंसे जीव की रक्षा करना मेरा धर्म है। फिर चाहे इसमें मेरे प्राण ही क्यों न चले जाएं।'' — राजा बोला।

यक्ष ने राजा से चले जाने को कहा, पर वह नहीं माना। अचानक एक ही पल में शेर की जगह साक्षात इंद्र उपस्थित हुए। यक्ष की जगह धर्म और गाय की जगह भू देवी प्रकट हुईं।

''देव, यह कैसी परीक्षा थी ?''—राजा गदगद कंठ से इतना ही बोल पाया।

''एक दिन, नारद और इंद्र के बीच तुम्हारे दयालु और धर्मात्मा होने को लेकर विवाद हो रहा था। नारद तुम्हें परोपकारी और धर्मात्मा कह रहे थे। इंद्र इस बात को स्वीकार नहीं कर रहे थे। बस, तुम्हारी परीक्षा का यही कारण था।''— धर्म ने कहा। फिर तीनों राजा को आशीर्वाद देकर चले गए। ●

फिर उगे पेड़

—उमा शर्मा

राजा प्रजाति का बेटा राजकुमार शुभेंदु बड़ा बलवान था। इस कारण वह अभिमानी भी हो गया था। राजा प्रजाति पुत्र के इस अवगुण के कारण चिंतित रहते। हर प्रकार से उसे समझा-बुझाकर हार गए।

एक दिन राजकुमार शुभेंदु अपने कुछ मित्रों के साथ शिकार खेलने गया। साथ में मंत्री राजसेन भी थे। चलते-चलते वे घने जंगलों में घिर गए, पर शाम होने तक कोई शिकार नहीं मिला।

वापस लौटना भी मुश्किल था। रात्रि पड़ाव के लिए राजकुमार शुभेंदु ने अपने सेवकों को आदेश दिया—"पेड़-पौधों को काटकर पड़ाव डाला जाए।"

मंत्री ने कहा—"राजकुमार, यह जंगली जानवरों का इलाका है। पता नहीं कब, कौन जानवर रात में हमला कर दे। इसलिए पेड़ पर ही मचान बनाकर विश्राम कर सकते हैं।"

—"नहीं, हमें पेड़ पर चढ़ना पसंद नहीं। पड़ाव धरती पर ही लगेगा। पेड़ों को काट दो।"

राजकुमार के आदेश देने पर भी कोई पेड़ काटने को तैयार नहीं हुआ। राजकुमार को क्रोध आ गया—"हमारी आज्ञा का पालन क्यों नहीं हो रहा मंत्री जी?"

—"राजकुमार,पेड़ हमारे राज्य के प्रहरी हैं। इनमें भी प्राण होते हैं।"

"इन बेजुबान पेड़ों में जान है? मंत्री तुम सठिया गए हो। ठीक है, तुम इन्हें काटने को गलत समझते हो, तो मैं करता हूं यह कार्य।"—कहकर राजकुमार तलवार से पौधे और झाड़ियों को काटने लगा।

तभी राजकुमार की तलवार एक पेड़ से टकराई। पेड़ से आवाज आई—"अहंकारी राजकुमार, तू मुझे नहीं काट सकता। मैं हवा का पेड़ हूं।"

राजकुमार ने और ताकत से उस पेड़ पर वार किया। अचानक पेड़ से गरम हवा का झोंका निकला। बढ़ते-बढ़ते वह तेज अंधड़ की शक्ल में बदल गया। चारों तरफ धूल और शरीर को झुलसा देने वाली लू चलने लगी।
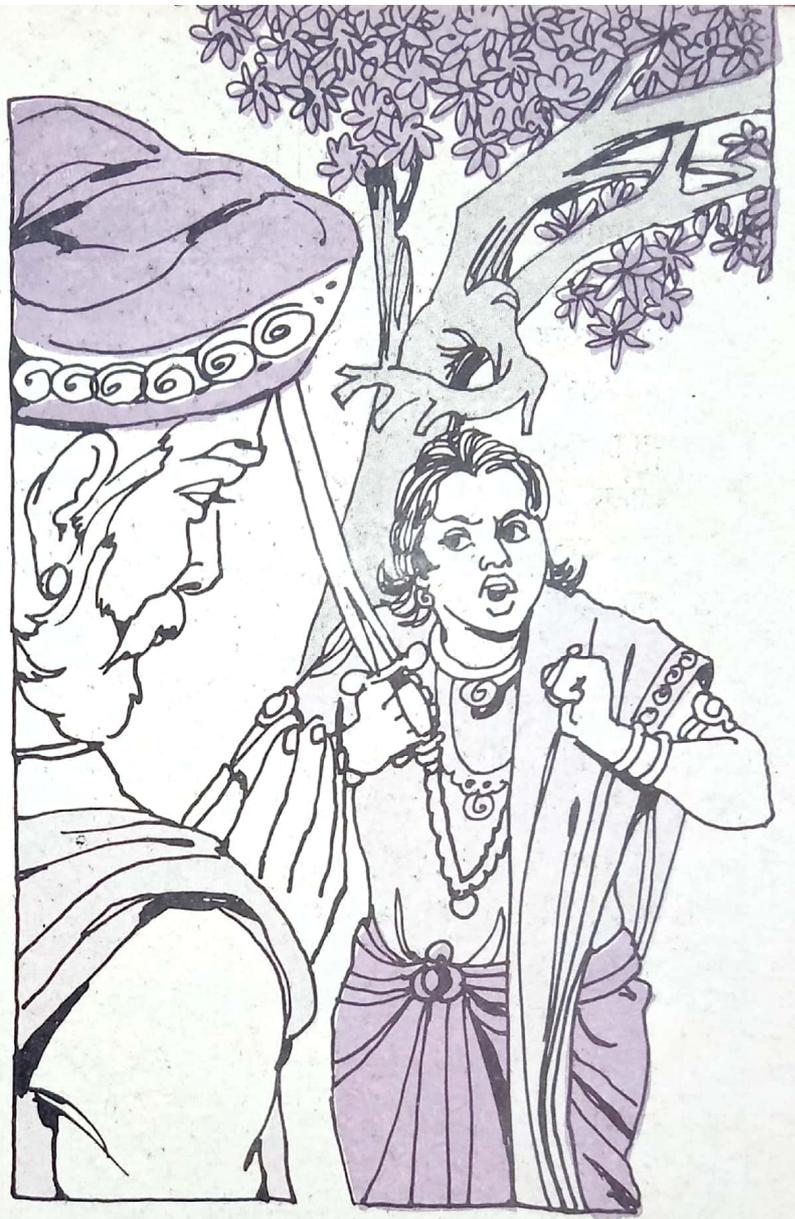
राजकुमार को कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। सब एक-दूसरे से बिछुड़ गए। राजकुमार बुरी तरह 'पानी-पानी' चिल्लाने लगा। आंखों में गरम धूल भर गई। सारा शरीर गरमी के कारण लाल हो गया।

रास्ता सुझाई नहीं दे रहा था। चार कदम चलता, गिर पड़ता। गरम हवा अब भी चल रही थी। जंगल में दावानल का सा दृश्य दिखाई पड़ने लगा।

मंत्री की नजर राजकुमार पर पड़ी। बेहोश राजकुमार को कंधे पर डाल, तेजी से निकल गए।

राजकुमार बेहोशी में 'पानी-पानी' बोल रहा था।
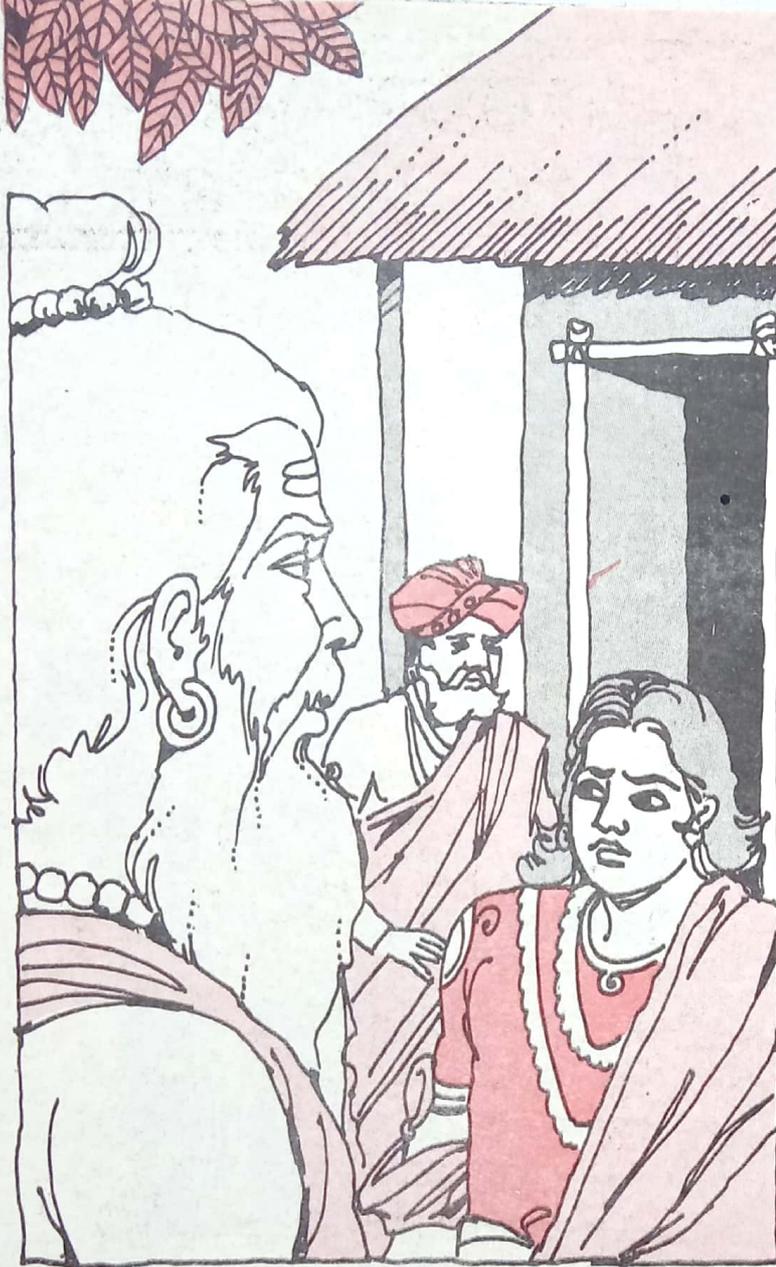
दूर एक आश्रम दिखाई दिया। मंत्री राजकुमार को वहीं ले गया।

"आ गए अहंकारी राजकुमार ?"–आवाज सुन, मंत्री चौंक गया। कहीं कोई नजर नहीं आ हा था। फिर यह आवाज कहां से आई ?

"डरो नहीं मंत्री राजसेन। राजकुमार शुभेंदु को यहीं लिटा दो।"

मंत्री ने देखा, श्वेत, लम्बी दाढ़ी वाला एक वृद्ध तपस्वी झोंपड़ी से निकला।

"उठो राजकुमार।" —आवाज सुनकर राजकुमार तुरंत उठकर बैठ गया।

"पानी-पानी, गरमी–बहुत गरमी है। हवा दो, हवा..."

"मिलेगा, सब मिलेगा राजकुमार, पर पहले एक वचन दो।"—तपस्वी बोले।

"राजकोष से चाहे जितना मूल्य ले लेना, पर पहले पानी दो, हवा..."

"ऐसे नहीं, जितना पानी और हवा मैं तुम्हें दूं, उतनी ही वापस करनी होगी। जब तक वापस नहीं करोगे, तुम्हें यहीं रहना होगा। बोलो मंजूर है ?" —तपस्वी कमंडल लिए खड़े थे।

—"हां-हां, सब शर्तें मंजूर है।"

"चलो मेरे साथ।"—तपस्वी राजकुमार को आश्रम के पिछवाड़े ले गए।

राजकुमार शुभेंदु वहां का दृश्य देख, शांत हो गए। चारों तरफ हरे-भरे पेड़, फलों से लदी टहनियां, चिड़ियों की चहचहाहट। ठंडी, सुगंधित हवा, पास में बहता शीतल, स्वच्छ जल का सोता। देखते ही राजकुमार को ठंडक मिली। जल पीकर वहीं पेड़ की छाया में सो गया।

प्रातः उठकर शुभेंदु चलने लगा, तो तपस्वी बोले—"राजकुमार, तुम्हारा वचन ?"

—"एक कमंडल जल राजमहल में आकर ले लेना।"

—"और यह हवा जिसमें सांस ली है ? यह कहां से दोगे ?"

राजकुमार सोच में पड़ गया। हवा कैसे वापस होगी ?

—"एक तरकीब है, जिससे तुम हवा वापस कर सकते हो।" सुनकर राजकुमार ने उन्हें अजीब नजरों से देखा।

"तुम्हें वे सब पेड़ लगाने होंगे, जो तुमने काटे हैं। तब तक उनकी देखभाल करना, जब तक वे पूरे पेड़ न बन जाएं – ऐसे ही हरे-भरे, हवा देते पेड़।"

राजकुमार वचनबद्ध था। उसे इन्हीं पेड़ों के कारण जीवनदान मिला था।

राजकुमार ने तपस्वी की आज्ञा का पालन किया। कुछ साल बाद वहां फिर से हरे-भरे पेड़ लहराने लगे। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. क्या तुमने — कवि वाल्मीकि का नाम सुना है! (आदि/आशु)

२. हां राजन, यह — सचमुच सुंदर है! (शाम/शाल)

४. गोपू, तुम उस नीले — से इतने डरे हुए क्यों थे? (पशु/पक्षी)

८. अच्छा बताओ, तुमने — की कितनी किस्में देखी हैं? (जूट/जूही)

९. — भी सर्कस देखने गया था न! (तू/मैं)

११. उस रोज बहुत —लग रही थी वह हथिनी। (भूखी/दुखी)

१२. रात में जगमग-जगमग करती है!

ऊपर से नीचे

३. तो फिर प्रियंगुमंजरी, झोले में — ले चलो। (धन/बीन)

५. तुम्हें — रंग इतना प्रिय क्यों है चित्रकार? (नीला/पीला)

६. आखिर बौने — की खोज में यहां तक चले आए। (हार/हाथी)

७. देखो-देखो, — पर वही बच्चा बैठा है। (बैल/डाल)

१०. हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३००

नाम ____________________

उम्र ________ पता ____________________

____
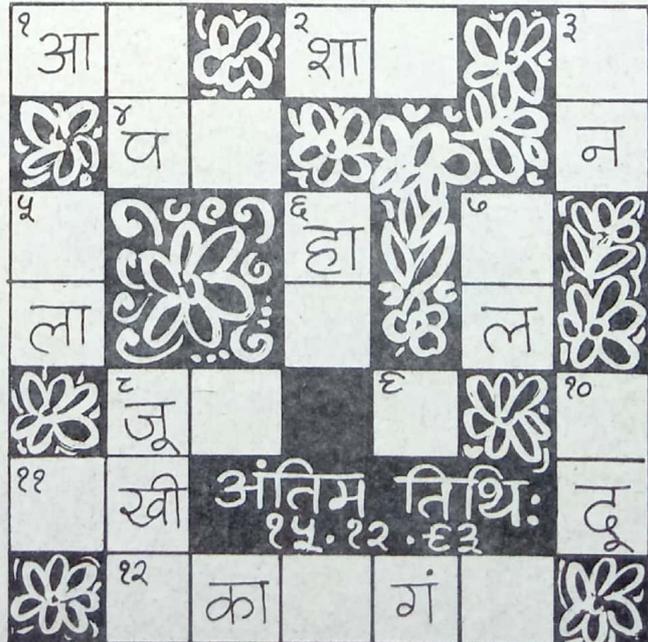
न.ज्ञा.प. ३००

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर खड़ा सार्जेंट मुसकरा रहा है।
२. उसकी पेटी काली हो गई है।
३. आकाश में बादल परस्पर जुड़ गया है।
४. नीचे नकली पहाड़ की चोटी ऊंची है।
५. पहाड़ पर एक पशु और चढ़ा हुआ है।
६. लेख पढ़ते व्यक्ति की टाई दूसरे डिजाइन की है।
७. महिला का दायां हाथ नीचे लटका है।
८. कूड़ेदान के पोल पर बैठी चिड़िया की पूंछ नीचे झुकी है।
९. पोल का आधार कम ऊंचा है।
१०. बाड़े से झांकते जेब्रा का एक कान नहीं है।

नंदन ज्ञान-पहेली : २९८

परिणाम

इस बार भी पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्वशुद्ध हल : एक : दो सौ रुपए

१. सुमनकुमारी तिवारी, पटना।

एक गलती : सोलह : प्रत्येक को पचास रुपए

१. कृष्णकांत जोशी, दिल्ली; २. अशोककुमार गुप्ता, भीलवाड़ा; ३. पिंकी, मलोट (पं.); ४. रविकुमार वर्मा, सीतामढ़ी; ५. रेखा, आगरा; ६. गौरव अग्रवाल, जगाधरी; ७. संजयकुमार, जलपुरा (औरंगाबाद); ८. प्रदीपकुमार बैद, लाडनूं; ९. संतोषकुमार, खगौल; १०. राधेश्याम जोशी 'श्याम', कोहिना (चुरू); ११. रेणुकुमारी, सबौर (भागलपुर); १२. अनीताकुमारी, बड़ौत; १३. जयदीप दत्ता, जबलपुर; १४. प्रकाशचंद, सिवान; १५. आंचल राठी, कोटा; १६. रीतूसिंह, इलाहाबाद।
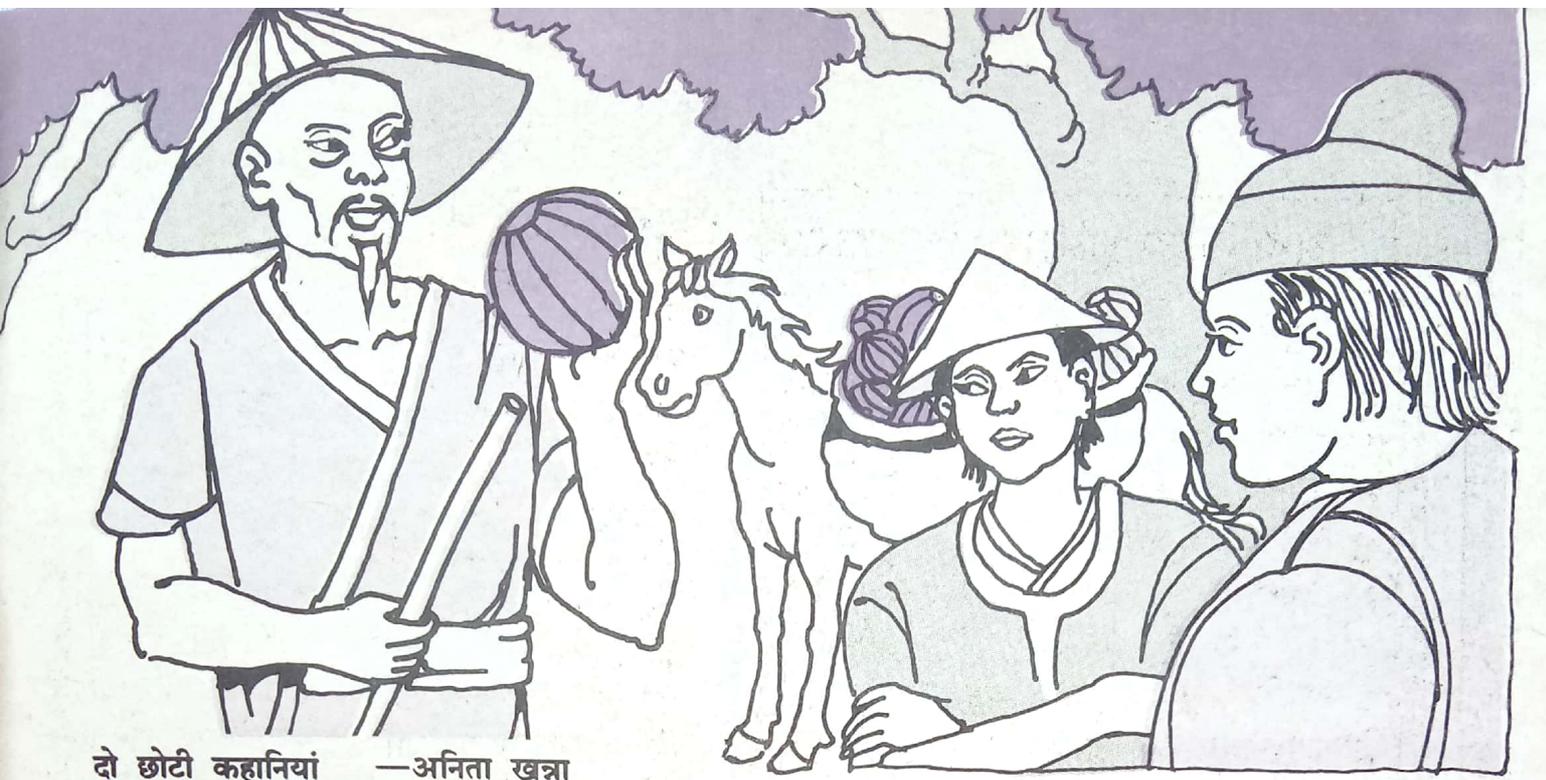
दो छोटी कहानियां —अनिता खन्ना

बूढ़े की करामात

एक समय की बात है, जापान के ओसाका शहर के कुछ व्यापारी घोड़ों पर सामान लादकर बाजार की तरफ ले जा रहे थे। घोड़ों की पीठ पर थैले लदे थे जिनमें खरबूजे भरे हुए थे। जेठ का महीना था और खूब गरमी पड़ रही थी। रास्ते में एक जगह कुछ हरियाली देखकर उन लोगों ने वहीं पर पड़ाव डाल दिया और घोड़ों की पीठ पर से थैले उतार दिए। घोड़े इधर-उधर घास चरने लगे। एक थैले में उन लोगों ने खुद रास्ते में खाने के लिए फल रखे हुए थे। पेड़ की छाया में बैठकर वे खरबूजे खाने लगे। वहीं पास में एक बूढ़ा आदमी उन्हें टुकर-टुकर देख रहा था। मौका पाते ही वह युवकों के पास आकर बोला—"मुझे भी थोड़ा सा खरबूजा खाने को दे दो। प्यास से मेरा गला सूख रहा है।"

उनमें से एक रूखे स्वर में बोला—"भई, अपना रास्ता पकड़ो! ये तो हमारे मालिक के हैं। मालिक से पूछे बिना हम तुम्हें कैसे दे सकते हैं?"

यह जवाब सुनकर बूढ़ा बुड़बुड़ाया—"पूछना है! पूछना है! ... खुद तो खाए जा रहे हो और मुझ बूढ़े को एक टुकड़ा देने के लिए मालिक से पूछना है। चलो, मैं अपना इंतजाम खुद ही कर लेता हूं।"

बूढ़े ने पास के पेड़ से एक डंडी तोड़ी और जमीन खोदने लगा। फिर उसने पास पड़े खरबूजे के बीज उठा लिए जो युवकों ने खाकर फेंके थे। उन्हें बो दिया। बीज बोने की देर थी कि झटपट उसमें से अंकुर फूट पड़े और पौधा उग गया। सब हैरान खड़े देखते के देखते रह गए। पौधा झटपट बड़ा हुआ और उस पर हरी-हरी पतियां निकल आईं। कुछ देर में ही पत्तियां घनी हो गईं और फूल निकल आए। उन पर खरबूजे लगे और कुछ ही मिनटों में बड़े होकर पक गए। बेल खरबूजों से लदी हुई थी।

बूढ़े के मुंह पर एक अजीब सी मुसकराहट थी और आंखों में एक तरह की चमक थी। उसने खरबूजे तोड़े और खाने बैठ गया। फिर आते-जाते लोगों को भी बुला-बुलाकर उसने खरबूजे बांटे। गरमी की भरी दोपहर में उन मीठे-मीठे खरबूजों का स्वाद ही अनोखा था। सब ने जी भरकर खरबूजे खाए। जब बेल पर लगे सब खरबूजे खत्म हो गए, तो बूढ़े ने आराम से अपनी छड़ी उठाई और अपने रास्ते चला गया।

कुछ देर बाद व्यापारी आगे चलने की तैयारी करने लगे। पर यह क्या, थैले तो खाली थे। परेशान व्यापारी थैलों को उलट-पलटकर देखते रहे, परंतु वहां कहीं भी खरबूजों का नाम-निशान तक नहीं था।

खोई हुई बेटी

एक जगह एक व्यापारी अपने परिवार के साथ रहता था। एक दिन उसकी एक वर्ष की बेटी घर के पिछवाड़े खेल रही थी। एक बाज़ उड़ता हुआ आया और उस नन्ही सी बच्ची को एक ही झपट्टे में, पंजे में दबोचकर ले गया। बच्ची की रोने की आवाज सुनकर उसके मां-बाप दौड़कर बाहर आए, तो देखा कि पक्षी लड़की को मुंह में उठाकर पूर्व की ओर उड़ा जा रहा है। उनका तो जैसे सब कुछ ही लुट गया था। बच्ची की मां का रोते-रोते बुरा हाल था। उन लोगों ने उस बच्ची की बहुत तलाश की, परंतु उसका कहीं भी पता नहीं चला। निराश होकर वे दिन-रात अपनी बच्ची की कुशलता के लिए भगवान से प्रार्थना करने लगे।

इसी तरह कई वर्ष बीत गए। एक बार वह व्यापारी किसी काम से शहर गया। वहां एक धर्मशाला में ठहर गया। शाम को धर्मशाला के मालिक की लड़की पानी लाने के लिए बर्तन लेकर अपने घर से निकली। व्यापारी ने उसे कुएं की तरफ जाते देखा, तो उसने सोचा—'कुआं यहीं कहीं पास में ही होगा। क्यों न मैं भी स्वयं कुएं पर जाकर हाथ-मुंह धो लूं।' वह लड़की के पीछे-पीछे चल दिया। कुएं पर पहुंचकर उसने देखा कि कुछ अन्य लड़कियों ने धर्मशाला के मालिक की लड़की का बर्तन उठाकर एक तरफ फेंक दिया। उसकी खिल्ली उड़ाती हुई बोलीं—"ओ बाज की जूठन, दूर रह। जब तक हम सब पानी नहीं भर लेते, तू वहीं खड़ी रह।"

बेचारी लड़की रोती-सिसकती वहीं खड़ी रही। जब सब लड़कियां पानी भर चुकीं, तभी वह पानी भरकर घर लौटी। बेटी के उदास चेहरे को देखकर उसके पिता ने उसकी उदासी का कारण पूछा। बेटी चुपचाप सिर झुकाए बैठी रही। तभी व्यापारी भी कुएं से लौटा। उसने धर्मशाला के मालिक को सारी घटना सुनाई और पूछा—"लड़कियां इस पर झल्लाते हुए इसे 'बाज की जूठन' कहकर क्यों बुला रहीं थीं ?"

धर्मशाला के मालिक ने गहरी सांस लेकर उत्तर दिया—"कुछ साल पहले की बात है। मैं बाज पकड़ने के लिए एक पेड़ पर चढ़कर बैठा था। तभी मैंने देखा, एक बाज नन्ही सी बच्ची को चोंच में उठाकर ले आया और उसे अपने घोंसले में रख दिया। उसके बाद उसने पास ही के पेड़ पर एक पक्षी को पकड़ लिया और खाने लगा। बच्ची को देखकर मैं बाज को पकड़ना तो भूल गया, किसी तरह उसे घोंसले से निकालकर घर ले आया। यह वही लड़की है। इस घटना के बारे में गांव में सबको पता है। शायद इसीलिए नादान लड़कियां मेरी बच्ची को चिढ़ाती हैं।"

व्यापारी ने बातों ही बातों में उस बच्ची के मिलने का समय, रंग-रूप आदि के बारे में पूछा, तो उसे विश्वास हो गया कि वह उसी की खोई हुई बेटी है। व्यापारी ने भी भर्राई हुई आवाज में अपनी छोटी सी बेटी को बाज द्वारा उठाए जाने की घटना विस्तार से सुनाई। उसकी कहानी सुनकर धर्मशाला का मालिक घर के अंदर गया और कुछ कपड़े उठा लाया। व्यापारी देखते ही उन्हें पहचान गया। ये वही कपड़े थे, जो उसकी नन्ही बेटी ने पहने हुए थे, जब उसे बाज उठाकर ले गया था। व्यापारी ने अपनी बेटी को गले लगा लिया। उसे अपनी खोई हुई बेटी मिल गई।

चीटू-नीटू
अब दूरदर्शन पर भी शिक्षा, सुनो बच्चों को टी.वी. देखने दिया करो
दूरदर्शन से शिक्षा
मजे आ गए
घ से... घर आया मेरा परदेसी..
स से.... सनम तेरी..
मां, अंताक्षरी है टी.वी. से सीखी है
फिल्मी अंताक्षरी
घर सिर पर क्यों उठा रखा है?
टी.वी. से ब्रेक डांस सीख रहे हैं
हाय माम
सारा दिन हाय-हाय करते रहते हो, कहो यह भी टी.वी. से सीखा है
आज रामू ने मेरी किताब फाड़ी, दिल करता है उसकी ऐसे ही पिटाई..
मामूली सी बात पर बच्चे को पीट डाला! तुम्हारे मां-बाप तुम्हें यही सिखाते हैं
टी.वी. सिखाता है।
आग लगे ऐसी शिक्षा को, आज से टी.वी. बंद

शीर्षक बताइए

सरस्वती का वेश बनाए
बहना वीणा मधुर बजाए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई सुंदर-सा छोटा शीर्षक सोचिए। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० दिसम्बर '९३ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : फरवरी '९४ अंक

चित्र : शमशेर अ. खान
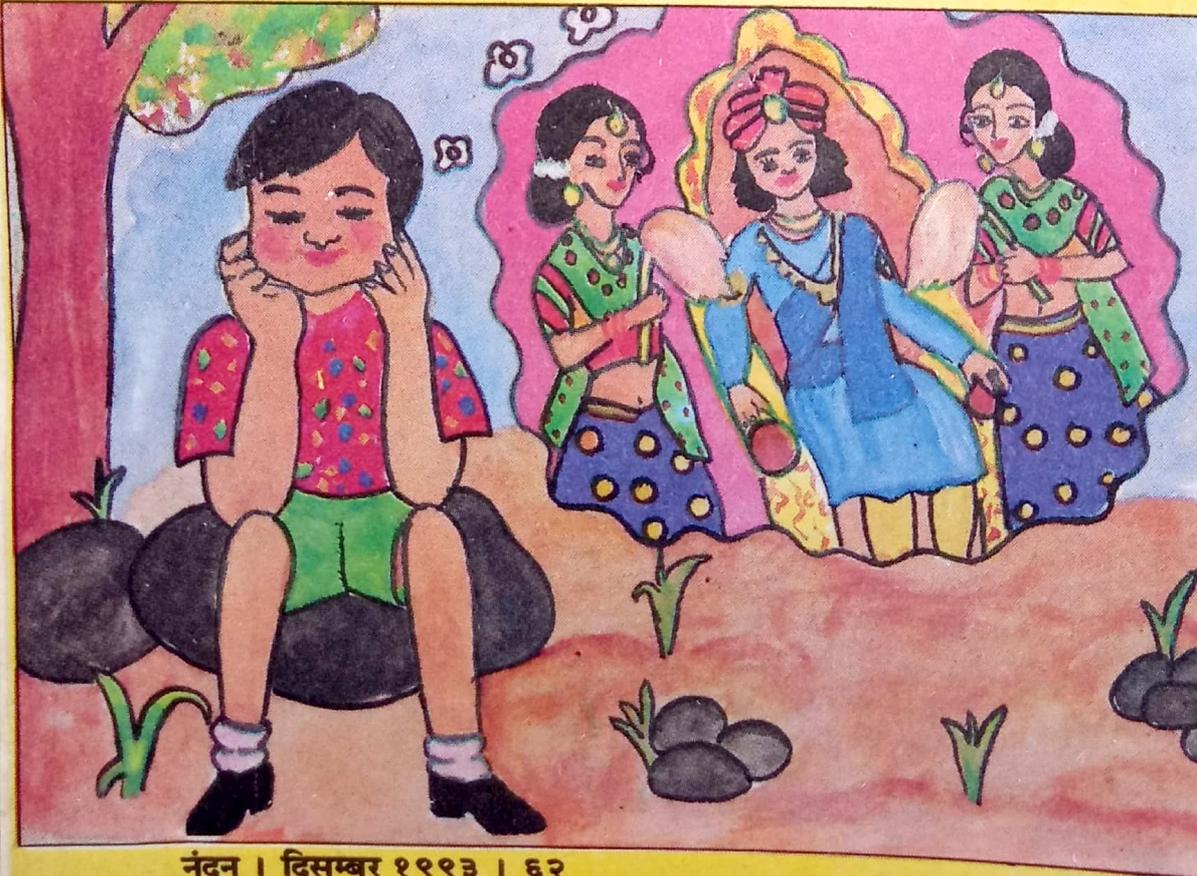
पुरस्कृत चित्र

शाहिना रियाज, आयु १४ वर्ष, द्वारा मिर्जा रियाज बेग, गांव : आदिलाबाद, डाक मुहम्मदाबाद, यूसुफपुर, जिला : गाजीपुर (उ. प्र.)

इनके चित्र भी पसंद आए—चीकू सोढ़ी, नई दिल्ली; अंशुल सक्सैना, सागर; जयदीप दास, कटक; अमृता कौर, चाईबासा; बी. शिरीष, हैदराबाद;

बाल सभा

दिव्या वर्मा

स्वाति चौहान

सतीश

आशीषकुमार

विकासकुमार

पत्र मिला

☐ अक्तूबर '९३ अंक रोचक और मनोरंजक लगा। हमें शिक्षाप्रद कहानियां, 'नंदन बाल समाचार', 'ज्ञान पहेली' बहुत लुभावने लगते हैं। मैं और भी पत्रिकाएं पढ़ता हूं, मगर वह आनंद नहीं जो 'नंदन' में मिला है। यह मेरी आवश्यकता बन गई है। **— अनुराग शर्मा, कोलातूर, मद्रास**

☐ 'गाड़ीभर झूठ', 'बना दो आदमी', 'चिपक खुल जा', 'दूसरा शंख' आदि कहानियां बहुत अच्छी लगीं। 'तेनालीराम' के दिमाग की भी प्रशंसा करनी होगी।

— राजेंद्रकुमार मित्तल, रतिया (हरि.)

☐ मैं वर्षों से 'नंदन' का पाठक हूं। यह मुझे अन्य पत्रिकाओं से श्रेष्ठ लगती है। कहानियां ज्ञानवर्धक तो होती ही है, मनोरंजक भी होती हैं। किसी खिलाड़ी का पोस्टर और उसके बारे में जानकारी छापें, तो आनंद आ जाए।

— सतीशकुमार, पठानकोट

☐ मेरा नाम देवकीनंदन है। सब लोग मुझे 'नंदन' कहकर पुकारते हैं। इसलिए जब घर में पत्रिका आती है, तो मैं कहता हूं कि सबसे पहले मैं पढ़ूंगा क्योंकि इसके हर पन्ने पर मेरा नाम अंकित है। **— देवकीनंदन शर्मा, पाटन (राज.)**

☐ इकलौती पत्रिका ऐसी है, सभी की चहेती है। कथा-कहानी इसके न्यारे। 'आओ बात करें' प्रेरणा देते। प्रतियोगिताएं रोचक लगतीं। 'चटपट' है गुदगुदाने वाली। सबको खूब हंसाने वाली। चित्र-कथाएं प्यारी-प्यारी। 'नंदन' को शीश झुका देते सम्मान। महीने में बस एक बार यह, लाती है ढेर-सा प्यार। **— ब्रजेशकुमार जैन, जसवंतनगर**

☐ ताजे अंक में जनरल विपिनचंद्र जोशी का चित्र बहुत पसंद आया। 'सच का फल' और 'मैं अकेला' कहानियां बढ़िया लगीं। **— साजिद शेख, चुरू**

☐ मिला अंक 'नंदन' का, पढ़ा लगाकर ध्यान। मनोरंजन तो हुआ ही, साथ बढ़ गया ज्ञान। मनोरंजक चुटकुले, बढ़िया-बढ़िया कहानी, ज्ञान पहेली के क्या कहने! अंक बन गया निशानी। **— सौरभकुमार, नैनीताल**

☐ 'नंदन' पत्रिका ज्ञान का पिटारा है। मैं दस वर्षों से इसका नियमित पाठक हूं। 'खील भरा कटोरा', 'निशान गायब', 'अठारह साल', 'चिपक खुल जा' कहानियां अच्छी लगीं।

— सुबोधकुमार, हुगली

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे: विकास आनंद, सीतामढ़ी; दीप कुमार, दुर्गापुर; रोहतास कुमार सुथार, अनूपगढ़।

आगामी अंक

नए वर्ष का नया अंक

● **नए साल का बहुरंगा दीवार कैलेंडर।**

● जिन्होंने दुनिया में भारत की महानता का झंडा फहराया, उन्हीं विवेकानंद का फ्रेम कराने योग्य चित्र—एलबम में

● शंकर अफ्रीका में घनघोर जंगलों की खतरनाक और अनजानी दुनिया में फंस गया। उसे कैसी-कैसी मुसीबतों से जूझना पड़ा। 'विश्व की महान कृतियां' में पढ़िए विभूतिभूषण वंद्योपाध्याय के बंगला उपन्यास 'चांदेर पहाड़' की संक्षिप्त कथा।

● **५० इनाम नए वर्ष में— यह एशियाई खेल वर्ष है, इस 'खेल पहेली' में भाग लें।**

● **चीटू-नीटू, तेनालीराम, चित्रकथाएं नंदन बाल समाचार।**

डकार

— वेद प्रकाश 'वटुक'

एक बार एक जाट और एक व्यापारी ने एक दूसरे को दावत देने का निर्णय किया। तय हुआ कि वे पेट भर खाना खिलाएंगे—और उसका पता चलता है डकार आने पर।

पहले दिन जाट गया व्यापारी के घर। बढ़िया माल बनाया व्यापारी की पत्नी ने। जाट ने जो खाना शुरू किया, तो खाता ही गया। खुराक अच्छी थी, पूरा ढाई-तीन सेर खा गया। व्यापारी ऊपर से तो खुश था, पर अंदर ही अंदर इतना नुकसान होने से कुढ़ रहा था। जाट के डकार लेने पर उसकी जान में जान आई।

अब जाट ने व्यापारी को बुलाया। वह आया, तो जाट बोला—"लाला जी, अभी खाना बन ही रहा है। चलो खेतों की ओर सैर कर आते हैं।"

खेत गन्ने का। जाट ने एक-एक गन्ना दोनों के लिए तोड़ा और चूसने लगे। एक गन्ना चूसते ही व्यापारी को डकार आ गई। जाट हंसकर बोला—"बड़ी कम खुराक है आपकी। खैर, जाओ घर लाला जी। बेकार ही बनवाया खाना।"

व्यापारी अपना-सा मुंह लेकर घर चला आया!

नई पुस्तकें

छत्तीसगढ़ की लोक-कथाएं— लेखिका : प्रीति अग्रवाल; प्रकाशक : आर्य बुक डिपो, करौलबाग, नई दिल्ली-५; मूल्य : बीस रुपए।

मध्य प्रदेश में सात जिलों का अनोखा क्षेत्र है छत्तीसगढ़। कभी यहां छत्तीस किले थे। छत्तीसगढ़ हरा-भरा है, वनों से घिरा हुआ भी है। काफी हिस्से में आदिवासी रहते हैं। यहां की लोक-कथाएं जंगल, नदी, पशु-पक्षी और प्रकृति से जुड़ी हुई हैं। ये कथाएं मनोरंजक तो हैं ही, वहां के रीति-रिवाज और रहन-सहन की झांकी भी दिखाती हैं। इस पुस्तक में चौदह कथाएं ऐसी ही हैं जो पाठकों को पसंद आएंगी। भाषा सरल है।

चिंटू की लोरियां—लेखक : सुखपाल गुप्त; प्रकाशक : आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली-५; मूल्य : बीस रुपए।

चार, छह या आठ पंक्तियों की मजेदार लोरियां पुस्तक में हैं। इनका अपना ही रंग है। पढ़ते हुए लगता है कि हमने इन्हें सुना हो लेकिन फिर भी ताजगी है। सभी पृष्ठों पर सुंदर रंगीन चित्र हैं। छपाई अच्छी है।

भारत जूनियर डिक्शनरी (अंग्रेजी-हिंदी) : सम्पादक : बी. एन. शर्मा; प्रकाशक : भारत पब्लिशिंग हाउस, १२३ दुर्गा चैम्बर्स, देशबंधु गुप्ता रोड, नई दिल्ली-५; बड़ा आकार; सजिल्द मूल्य : दो सौ रुपए।

शब्दकोश से लगता है जैसे मोटी, भारी-भरकम पुस्तक हो। लेकिन यह शब्दकोश बच्चों और नवसाक्षरों के लिए खासतौर से तैयार किया गया है। इसमें तीन हजार ऐसे शब्द हैं जो आम तौर पर इस्तेमाल होते हैं। इन अंग्रेजी शब्दों के उच्चारण तथा अंग्रेजी और हिंदी में अर्थ दिए गए हैं। पुस्तक में हर पृष्ठ पर कई-कई बहुरंगे चित्र हैं। लगभग पांच सौ ऐसे चित्र होंगे।

बढ़िया कागज पर छपा यह शब्दकोश उपयोगी और संग्रहणीय है। ऐसी पुस्तकें बच्चों को भेंट में दी जा सकती हैं। छपाई सुंदर है। विदेश में छपने वाली बढ़िया पुस्तकों जैसी है यह पुस्तक।

अक्ल बड़ी या भैंस— लेखिका : गार्गी तिवारी; प्रकाशक : सरोज प्रकाशन; ९५३ डी. डी. ए. फ्लैट्स, नंद विहार, दिल्ली; मूल्य : बारह रुपए।

पुस्तक में छह कहानियां हैं। सारी कहानियां सरल भाषा और रोचक शैली में लिखी गई हैं। चित्र दो रंग के हैं, मगर बहुत आकर्षक। हरियाणा साहित्य अकादमी का यह एक अच्छा प्रयास है।

अनजाना जाना

—पूर्वा ठाकुर

उनकी दोस्ती जंगल में मशहूर थी। वे साथ-साथ निकलते। शिकार या मौजमस्ती के इरादे से चारों दोस्त जंगल के एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ लगाते। सभी जानवर उन्हें चकित होकर देखने लग जाते थे। इन चारों दोस्तों में एक भेड़िया, एक तेंदुआ, एक बंदर और एक भालू था।

एक दिन जंगल में बाढ़ आ गई। पहाड़ के ऊपरी हिस्से से अचानक पानी नीचे जंगल में उतर आया। जानवरों को संभलने का मौका नहीं मिला। कई जानवर बाढ़ में बह गए। कुछ जानवरों ने चिड़ियों के साथ बड़े वृक्षों पर शरण ली। कुछ तैरकर ऊंची जगहों पर जा पहुंचे। जंगल में हाहाकार मच गया था।

इस बाढ़ ने चारों दोस्तों को एक-दूसरे से अलग कर दिया। उनमें सिर्फ भालू ही नजर आ रहा था। भालू ने एक टीले पर शरण ली थी। वहां दूसरा जानवर दिखाई नहीं दे रहा था। भालू फूट-फूटकर रो रहा था। उसे तेंदुआ, बंदर और भेड़िए की याद बेहद सताने लगी। उसने दोस्तों को बुलाने के लिए कई बार जोर से हांक लगाई। लेकिन उसे कोई जवाब नहीं मिला।

थक-हार कर भालू उसी टीले पर लेट गया। अब वह बाढ़ के गुजर जाने का इंतजार करने लगा। दो दिन बाद बाढ़ का पानी उतरा। चारों तरफ सन्नाटा और उदासी थी। भालू ने दोस्तों को ढूंढ़ने के लिए पूरे जंगल की खाक छानी। लेकिन उसे दोस्तों का पता नहीं चल सका। उसकी हालत बिंगड़ने लगी।

एक दिन, भालू नदी और कई मैदानी इलाके पार करके एक जंगल में पहुंचा। वहां उसने एक बंदर को देखा। दौड़कर भालू ने बंदर को गले लगा लिया। वह रोते हुए बोल पड़ा—"कहां चले गए थे भाई! तेंदुआ और भेड़िया कहां है? मैं तुम लोगों को खोजते-खोजते पागल-सा हो गया हूं।"

बंदर ने भालू को रोते देख सोचा—'इस भालू के दोस्त बिछड़ गए हैं। इसलिए यह सदमे की वजह से अपना दिमागी संतुलन खो बैठा है।' बंदर ने भालू को उसकी भूल का अहसास कराना चाहा।

बंदर ने कहा—"भालू भाई, तुम जिस दोस्त बंदर को खोज रहे हो, वह मैं नहीं हूं। फिर भी मैं चाहता हूं कि मैं तुम्हारा दोस्त बन जाऊं। तुम मुझे अपनी पूरी कहानी सुनाओ।"

बंदर की बातें सुनकर, भालू उदास हो गया। उसने खाना-पीना तक छोड़ दिया। तीन दिन तक वह इसी हालत में रहा। बंदर ने उसे बहुत मनाने और रिझाने की कोशिश की, लेकिन सब बेकार।

बंदर को भालू की हालत देखकर, चिंता होने लगी। उसने एक तरकीब सोची। भालू से उसने कहा—"आज से मैं भी खाना-पीना छोड़ रहा हूं। तुम खाने-पीने लगोगे, उसी दिन मैं भी खाऊंगा।"

दूसरे दिन भालू ने देखा कि बंदर की हालत ठीक नहीं है। उसने खाना-पीना सब कुछ छोड़ दिया है। उसने सोचा कि बंदर के साथ वह अन्याय कर रहा है। उसने सोचा—'जो दोस्त सदा के लिए बिछड़ गए, उनकी चिंता में डूबने से क्या होगा? हां, जो दोस्त सामने है, उसकी अनदेखी करना ठीक नहीं।'

बस, फिर क्या था! भालू ने बंदर को प्यार से देखा। हाथ बढ़ाकर उसने बंदर को अपनी तरफ खींच लिया। दोनों एक-दूसरे के गले से लिपट गए। ●

होनहार बच्चे

सुनयना सिंह तेरह वर्ष की है । आठवीं कक्षा में पढ़ती है । बचपन से ही चित्र बनाने का शौक़ है । 'नंदन' चित्रकला प्रतियोगिता में उसे सांत्वना पुरस्कार भी मिला है । युनिसेफ द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में वह प्रथम पुरस्कार जीत चुकी है । संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश की तरफ से उसे वजीफा भी मिलता है । अपने बनाए चित्रों पर कितने ही पुरस्कार जीत चुकी है । कहानियां लिखने में भी उसकी रुचि है । पता है—श्री घनश्याम रंजन, ६५ कैंट रोड, उदयगंज, लखनऊ ।

शीर्षक बताइए

परिणाम

ढेर सारे शीर्षक मिले । नंदन, अक्तूबर '९३ अंक में छपे चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए–

राजकुमार गोलमटोल, उसका मुकुट है अनमोल ।
—जयेश गंगराड़े, डा. झबरचंद गंगराड़े, नगर निगम पालिका के पीछे, खंडवा (म. प्र.) ।

पहनकर ताज, मैं बना महाराज ।
—सविता अग्रवाल, १ देवाशीष अपार्टमेंट्स, नवजीवन प्रेस के सामने, अहमदाबाद (गुज.) ।

कहां का मैं हूं राजकुमार, बूझो अथवा मान लो हार ।
—अभिजीत कुमार, जयकुमार मिश्र, श्रीविजय प्रेस, रमना, मुजफ्फरपुर (बि.) ।

राज है न काज है, फिर भी सिर पर ताज है ।
—आकांक्षा, ए. के. मिश्रा, एस. एन. सी. ओ. मैस, एयर फोर्स, माउंट आबू (राज.) ।

ये शीर्षक भी पसंद आए : मिनी धीमान, अम्बाला; दीपज्योति गुप्ता, भिंड (म. प्र.); महावीर प्रसाद, सीकर (राज.); योगराज, रानी बाग, दिल्ली ।

पुरस्कृत कथाएं

बुराई का अंजाम

एक व्यक्ति था— करीमबख्श । स्वाभाव से दयालु और मेहनती । परिवार के नाम पर उसके साथ मुल्ला नामक हाथी रहता था, जिसे करीम बेहद प्यार करता था ।

करीम के पड़ोस में अनवर हुसैन नाम का व्यक्ति रहता था । वह बहुत धूर्त और लोभी था । अनवर करीमबख्श की सम्पन्नता से बेहद जलता था । जब-तब करीमबख्श से मोहरें मांगता रहता । करीम भी उससे बिना कुछ पूछे, जो मांगता दे देता । करीम का दोस्त हजूरबख्श, बादशाह का सिपाही था । वह उसे ऐसा करने से मना करता, लेकिन स्वभाव से दयालु करीम हंसकर उसकी बात टाल देता ।

एक दिन, अनवर ने रात के समय आकर करीम की तिजोरी से सारी दौलत निकाल ली और खिड़की से कूदकर भाग खड़ा हुआ । आहट सुनकर हाथी मुल्ला जगा । उसने अंधेरे में भागते हुए अनवर हुसैन को पहचान लिया ।

अगली सुबह, खाली तिजोरी देख करीमबख्श बिना कुछ खाए-पिए, हजूरबख्श से मिलने घर से निकल पड़ा । मुल्ला के खाने के लिए केले रख गया । जल्दबाजी में करीम दरवाजा खुला छोड़ गया था । बस, मालिक के जाते ही, मुल्ला बिना कुछ खाए चिंग्घाड़ता हुआ घर से निकल पड़ा । उसका रुख अनवर के घर की ओर था । मुल्ला ने अनवर के घर की दीवारें तोड़ डालीं । पेड़ों को उखाड़कर उसके घर की छत पर फेंकने लगा । यह देख, अनवर घर से भागा । मुल्ला भी उसके पीछे भागा । सिपाहियों ने चिंग्घाड़ते हुए हाथी को रोकने का बड़ा प्रयास किया, लेकिन रोक न सके ।

अनवर की जान पर बन आई थी । हड़बड़ाते हुए बोला— ''हां-हां, मैं बुरा आदमी हूं । मैंने कल रात तुम्हारे घर चोरी की थी ।''

— "लेकिन क्यों, तुम जो भी मांगते थे मैं दे देता था !" — करीम ने कहा।

— "हां, लेकिन मुझे एक मोहर नहीं, पूरी दौलत चाहिए थी। मैं तुम्हें कंगाल देखना चाहता था। मुझे माफ कर दो। अपनी दौलत वापस ले लेना, लेकिन पहले मुझे हाथी से बचाओ। यह मुझे मार डालेगा।"

करीम ने मुल्ला को समझा-बुझाकर रोका और वापस घर भेज दिया। पास ही खड़ा हजूरबख्श हंसा। अनवर की ओर मुखातिब होकर बोला— "क्यों, अनवर मियां, देखा बुराई का अंजाम !"

— उपासना टिक्कू, जम्मू-तवी

नवाब का हाथी

दौलताबाद के नवाब कासिम बहुत ही न्यायप्रिय और कुशल प्रशासक थे। यों तो उनके पास एक से एक अच्छी चीजें थीं, मगर उन्हें अपने हाथी से बहुत प्यार था।

एक दिन महावत ने आकर कहा कि हाथी पागल हो गया है। यह सुनकर नवाब कासिम बहुत दुखी हुए। उस हाथी का खूब इलाज कराया, पर सब बेकार। हाथी ठीक न हुआ।

अंत में उन्होंने घोषणा कराई कि जो उनके हाथी को ठीक कर देगा, उसे मुंहमांगा इनाम देंगे।

एक दिन, एक नौजवान वीरभद्र वहां आया। उसने कहा— "मैं पास के ही गांव में रहता हूं। पागल हाथी के बारे में सुनकर, अपनी तकदीर आजमाने आपके पास आया हूं। यदि आज्ञा हो, तो एक बार मैं भी उस हाथी को देख लूं।" नवाब ने वीरभद्र को इजाजत दे दी। महावत उसे हाथी के पास ले गया।

दिन बीत गया। रात में भी वीरभद्र जागता रहा। वह चौकस निगाहों से चारों ओर देख रहा था। आधी रात के समय, उसे कुछ लोगों की आवाजें सुनाई दीं। उसने झांककर देखा। चार लोग वहां बैठे माल का बंटवारा कर रहे थे। साथ ही मार-काट की बातें भी कर रहे थे। अब वीरभद्र को हाथी के पागलपन का कारण समझते देर न लगी। उसने तीरों से चारों चोरों को मार गिराया।

कुछ दिन बाद हाथी बिलकुल ठीक हो गया। वीरभद्र ने नवाब को यह सूचना दी। नवाब ने आकर हाथी को देखा। उन्हें भी वह ठीक लगा।

नवाब ने हाथी के ठीक होने का कारण पूछा। वीरभद्र बोला— "इस दीवार के पीछे चार लोग मरे मिले थे। लेकिन उनके मारने वाले का पता नहीं चला था। वे चारों चोर थे। उन्हें मैंने ही मारा था।"

"लेकिन उन चोरों का इस हाथी के पागलपन से क्या सम्बंध ?"— नवाब ने पूछा।

"सम्बंध है। वे हर रात, इसी दीवार के पीछे अपने माल का बंटवारा करते थे। साथ ही मार-काट की बातें भी करते जाते थे। उनकी बातें सुनकर, यह हाथी भी हिंसक हो उठा। हमेशा दूसरों को नुकसान पहुंचाने की सोचने लगा। चोरों को मारकर मैंने साधु-संतों से इस पेड़ के नीचे बैठने की प्रार्थना की। संतों की अच्छी बातें सुनकर, यह हाथी ठीक हो गया।"— वीरभद्र ने कहा।

नवाब वीरभद्र से बहुत खुश हुए। उसे खूब इनाम दिया। अपने दरबार में भी एक ऊंचा पद दे दिया।

— अभिषेक, चाईबासा

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : संजयकुमार उपाध्याय, सोनभद्र; रसिककुमार गोयल, रायपुर; बबीता राई, दार्जिलिंग; तृप्ति बिसेन, हैदराबाद।

सोने की ईंट

—अखिलेश राय

गीता देवी शादी के सातवें साल में ही विधवा हो गई थीं। उनके जीने का सहारा उनके बेटे अजय, विजय एवं संजय ही रह गए थे, जिनके लिए हर हाल में उन्हें जीना था।

उनके पति की एक छोटी-सी सोने-चांदी की दुकान थीउसे बंद करना पड़ा। जो भी जमा पूंजी थी, उससे तीनों बच्चों को पढ़ा-लिखाकर काबिल बनाना ही उनका ध्येय बन गया था।

अजय पढ़ने में सबसे अच्छा था। विजय ठीक था। संजय साधारण निकला। गीता देवी उन्हें कुछ न कुछ इनाम देकर, हमेशा पढ़ने-लिखने में अव्वल आने के लिए प्रोत्साहित करतीं रहीं। उन्होंने यह ऐलान कर दिया कि जो जितना बड़ा आदमी बनेगा, उसको उतना ही बड़ा इनाम दूंगी।

उनका लालन-पालन और प्रोत्साहन रंग लाया। अजय कलक्टर तो विजय पुलिस इंसपेक्टर बन गया किंतु संजय अधिक तरक्की न कर सका। उसे साधारण नौकरी ही मिल सकी। लोग कहते— "देखो, इसके दोनों भाई कितने ऊंचे चढ़ गए। एक यह है!"

उसका मन मां की सेवा और मजबूरों की मदद में लगता। गांव-गांव घूमकर लोगों को कविता सुनाता। वह पूरे इलाके में घुमक्कड़ कवि के नाम से लोकप्रिय हो गया था।

गीता देवी ने अजय व विजय की शादी कर दीं।

संजय सीधा-सादा था। वह थोड़े में ही खा-पीकर मस्त रहता था। मां की सेवा और लोगों की मदद करने में ही उसका समय बीतने लगा। मां गीता देवी उसके लिए चिंतित रहने लगीं।

कुछ ही महीने बाद अजय और विजय ने घर पैसा भेजना बंद कर दिया। तब तो गीता देवी की चिंता और बढ़ गई। उन्हें अपने राम-लखन जैसे बेटे अजय-विजय से ऐसी उम्मीद न थी। वह संजय को लेकर, अजय के यहां गईं। वहीं विजय को बुलवाकर, संजय और अपनी परवरिश की समस्या को रखा।

संजय का जिम्मा लेने को कोई तैयार नहीं हुआ। मां के लिए कहा कि वह हर माह दस-दस रोज, उनके यहां रह सकती हैं।

संजय पर तीसों दिन बोझ बनने के बजाए, दस-दस रोज तीनों के यहां रहने को गीता देवी राजी हो गईं। अजय और विजय के यहां उन्हें गाड़ी-बंगला, नौकर-चाकर, खाने-पीने की हर सुविधा थी, किंतु संजय के अनिश्चित भविष्य की चिंता उन्हें खाए जा रही थी। वह बीमार रहने लगीं।

जब वह संजय के यहां पहुंचीं, तो उनकी बीमारी और बढ़ गई। संजय दिन-रात मां की सेवा में लगा रहता था, किंतु पैसे के अभाव में उचित दवा नहीं करा पा रहा था। उसने भाइयों को इसकी सूचना भी दी। उनका जवाब आया कि अपनी बारी आने पर वे इलाज करा देंगे।

गीता देवी को यह अहसास हो गया था कि उनका

आखिरी वक्त आ गया है। अंतिम समय में उन्होंने अजय,विजय को इनाम देने के लिए तार दिया। वे दूसरे ही दिन पत्नियों सहित आ पहुंचे। उनके चेहरे पर मां से इनाम पाने की ललक स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

गीता देवी ने तीनों बेटों को कागज में लिपटी एक-एक ईंट देते हुए कहा— ''मेरा अंतिम समय आ गया है। मैं अपना दिया वचन पूरा कर रही हूं। जो जितना बड़ा आदमी बन सका है, उसे उसके अनुसार इनाम दे रही हूं।''

जब सबने इनाम पर से कागज हटाया तो अजय लगभग चिल्ला पड़ा— ''नहीं मां,यह ना इंसाफी है। बेईमानी है। तुम्हारा वादा था, जो जितना बड़ा आदमी बनेगा उसे उतना ही बड़ा इनाम दोगी। पर तुमने कलक्टर बनने के बावजूद मुझे छोटा इनाम, तांबे की ईंट दी और नाकारा, आवारा संजय को सोने की ईंट। यह सरासर पक्षपात है। विजय को चांदी की ईंट दी है जो सिर्फ इंस्पेक्टर बन सका। मुझे सबसे गया गुजरा बना दिया।''

गीता देवी को अजय से ऐसी ही आशा भी थी। उसे समझाते हुए बोलीं— ''देखो अजय, तुम्हारे और विजय के पास कार-बंगला, नौकरी सब कुछ है। एक मां के दो बेटे राजयोग भोगें और एक बेटे को दो वक्त की रोटी भी न मिले, तो मां के हृदय में तनिक भी खुशी नहीं आ सकती। अतः अपने मन में खुशी लाने के लिए मैंने जो इंसाफ किया है, वह एक मां का इंसाफ है। इसे आशीर्वाद समझकर स्वीकार कर लो ताकि मैं चैन से मोक्ष प्राप्त कर सकूं।''

अजय पर इन बातों का कोई असर नहीं पड़ा। संजय ने सोने की ईंट बड़ी भाभी के हाथ में देकर उनसे तांबे की ईंट ले ली। बोला —''यह लो। सोना मेरे किस काम आएगा! इसे रख लो। भाभी मेरे लिए तो यह तांबे की ईंट ही बेहतर है। मैं इसका घड़ा बनवाऊंगा। उसी का पानी पिऊंगा। सुना है तांबे के बर्तन का पानी पीने से मन और शरीर दोनों निर्मल रहते हैं।''

गीता देवी को संजय की त्याग भावना से बहुत

सुकून मिला। बोलीं— ''मैं नाहक ही तुम्हारे भविष्य के लिए चिंतित रहती थी। तुम तो खुद सोने की खान हो। तुम्हें कभी किसी चीज की कमी नहीं होगी। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।''

अजय और विजय कभी मां को देखते कभी संजय को और कभी अपने अंदर झांकते। उनके पास सब कुछ था पर अपनी मां का स्नेह, आशीर्वाद न था। संजय की तरह सोने जैसा दिल भी नहीं था। वे संजय जैसे भाई की त्याग भावना से विह्वल हो गए।

अजय सोने की व विजय चांदी की ईंट संजय के सामने रखकर, मां के चरणों में गिर पड़े। बोले—''मां हमें माफ कर दो। हमें तुम्हारा इंसाफ मंजूर है। वाकई संजय ही सोने और चांदी की सारी ईंटों का हकदार है। उसका दिल भी सोने जैसा है। ऐसे भाई को हमने आज तक नहीं समझा। असल में तांबे की ईंट की जरूरत तो हमें है, जिसका घड़ा बनवाकर उसका पानी पीने से हमारा मन और शरीर निर्मल हो सके।''

उन्होंने संजय को गले से लगा लिया। ●

पत्र-मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ——— आयु ———

पूरा पता ———

रुचि ———

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. दीपक कुकशाल, १४ वर्ष, ५७/१ एम. टी. आर. सी. लाइन, कानपुर रोड, इलाहाबाद; २. संजीव रंजन, १६, सुरेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव, प्रोफेसर्स कालोनी, पी. एच. रोड, बेगूसराय; ३. महोत्पल त्रिपाठी, १५, शिव बालकराम त्रिपाठी, ग्रा. डोभा, पो. कठहा, जि. सतना (म. प्र.); ४. गौरव सक्सेना, १६, ९/२५ ए, पांडवरोड, विश्वासनगर, गली नं. १८, शाहदरा, दिल्ली; ५. सिद्धार्थ कुमार, १२, ए. जी. कालोनी, ए/८९०, पो. वेटेनरी कालेज, शेखपुरा, पटना; ६. लवकुमार जैन, ८, सी-२२८, ज्ञान मार्ग, तिलकनगर, जयपुर; ७. अशोककुमार, १५, दशरथ दास, ग्रा. सलेमपुर, पूर्वी चम्पारण; ८. सुरेशकुमार सिंह, १४, सी-१३/३९, औरंगाबाद, वाराणसी; ९. सन्त्री साहा, ९, ५५० ब्लाक एन, न्यू अलीपुर, कलकत्ता; १०. मनीष गुप्ता, १६, १६६ शिव कुटीर, सिविल लाइन, गुरुदयाल सिंह रोड, लुधियाना; ११ निरंजन तुलाधर, १३, अरनिको बोर्डिंग स्कूल, ठाकुर बाड़ी रोड, विराटनगर (नेपाल); १२. पंकजकुमार १०, रक्षपाल सिंह जादौन, ८/४ मालवीयनगर, गली नं. ४, ए. बी. रोड, इंदौर; १३. पुष्कर सक्सेना, १४, ९२५ ए, पांडव रोड, विश्वासनगर, गली नं. १८, शाहदरा, दिल्ली; १४. राहुल शर्मा, १६, २६०/२ गनपत मार्ग, सतना; १५. मोहित शर्मा, १३, ३६ आदर्शनगर, मांडल टाउन, अम्बाला छावनी; १६. गौतम जायसवाल, १४, अशर्फीलाल जायसवाल, जनरल मर्चेंट, नौतनवा महाराजगंज (उ. प्र.); १७. डूंगाराम चौधरी, १४, वगताराम चौधरी, पो. जवाली, जि. पाली (राज.); १८. सुनीलकुमार, १५, एच-४८ पंच बगलिया, पुलिस क्लब, छीपी टोला, आगरा; १९. राजेशकुमार आर्य १४, रसराज मिष्ठान्न भंडार, धर्मशाला रोड, भभुआ (बि.); २०. नीतू गुप्ता, १५, सुभाषचंद्र वैश्य, बाजार गंज, सरायतरीन, मुरादाबाद; २१. रामचंद्र दास, १६, २/२ तिलजल्ला रोड, गफूर मियां की बाड़ी, कलकत्ता; २२. नीलाशीष चक्रवर्ती, १३ एम. आई. जी. १९२/२ ए, साकेतनगर, भोपाल; २३. हरेंद्र पंडित, १४, लालमोहर प्रसाद, समग्र योजना एवं अन्वेषण प्रकोष्ठ, पो. विलासी टाउन, देवघर (बि.); २४. कपिल मेहरोत्रा, १४, के. के. मेहरोत्रा, चांदमारी, काठगोदाम, नैनीताल; २५. संतोषकुमार यादव, १६, बी ८९, बाई तारापुकुर गवर्मेंट क्वार्टर, श्रीरामपुर, हुगली; २६. प्रेमसिंह धामी, १४, ग्रा. खेड़ा, वाया विकासनगर, देहरादून; २७. रोमी अवस्थी, १० ११३/१७७ स्वरूपनगर, कानपुर; २८. मनीष शर्मा, १३, ३ नं. पार्वती घोष लेन, कलकत्ता; २९. अरशद सनमु १४ वर्ष, मंजूर अहमद, निकट-मुहल्ला पोखरा, पीरो, जि. भोजपुर; ३०. विकास सक्सेना, १४, आर. के. सक्सेना, रेलवे रोड, पीली कोठी, सिकंदराबाद (उ. प्र.)।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :

१. पवनकुमार गुप्ता, १६ वर्ष, राम लखन गुप्ता, वस्त्र विक्रेता, हरैया, बस्ती; २. वर्षा सक्सेना, १४ ९/२५ ए, पांडव रोड, गली नं. १८, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली; ३. राकेशकुमार भारद्वाज, १४, रमाकांत पांडेय (शिक्षक); पी. सी. रोड, सासाराम (बि.); ४. संजय राज न्यौपाने, १५ शंकरप्रसाद न्यौपाने, जनकपुर (नेपाल); ५. सुनील कूमावत १५, १९ पान दरीबा, शास्त्री का बाड़ा, गणेश मंदिर, उज्जैन, ६. तृप्ति वार्ष्णेय, १४, सतीशचंद्र वार्ष्णेय, गांधी गंज, सिकंदरा राऊ ७. नवीन मणि, १०, ६ भरतपुरी कालोनी, फैजाबाद; ८. स्वस्ति पचौरी, ९, १७/बी १ हिंदुस्तान टाइम्स आपार्टमेंट्स, मयूर विहार, दिल्ली; ९. अभिनव घोष, १०, जे. के. घोष, काजीपुर क्वार्टर्स-११ के सामने, रोड नं. ३, पटना; १०. अनुज यादव, १२, प्रेमसिंह यादव, ६२ बी, फ्रेंडस् कालोनी, इटावा; ११. प्राण शर्मा, १४, भोलाराम शर्मा, स्टेशन रोड, खाचरोद, उज्जैन; १२. विनोद चक्रवर्ती, १६, सहगल फिल्म्स, मेन रोड, सिमडेगा, रांची; १३. भूपेंद्रसिंह कालरा, १३, ९५ आदर्शनगर, मुरादाबाद; १४. अम्बिका भल्ला, १०, १५-बी/३३/७, एच. एस. सी. एल., भिलाई, दुर्ग; १५. कपिल राज, १२, बिलैया किराना मर्चेंट, डिंडौरी, मंडला (म. प्र.); १६. प्रमिला भारती, १५, जवाहर भारती, ८२ शेखपुरा, बमरौली, इलाहाबाद; १७. सज्जनकुमार सिन्हा, १३, रंजन वर्मा, पत्रकार, चित्रगुप्तनगर, खगड़िया (बि.); १८. सूर्यकांत वर्धन गौतम, १२, हर्षवर्धन गौतम, सेदरिया, पो. महरारा, मथुरा; १९. संतोषकुमार, १३, II/१२९ जगजीवन नगर, न्यू कालोनी, धनबाद; २०. प्रणव आर्य, १२, ५/५६१ विकासनगर, लखनऊ; २१. रौनक गुप्ता, १३, २००/३ सोलानी कुंज, रुड़की, हरिद्वार; २२ सीमा, १६, ४९८ डी, न्यू डांडी गढ़ी कैंट, देहरादून; २३. नूपुर, १२, बी. टी. एच. विश्वविद्यालय परिसर, कुरुक्षेत्र, २४. अचला कुमारी मिश्रा, १३, तेजनाथ मिश्रा, शुभंकर पुर, ड्योढ़ी के पीछे, दरभंगा; २५. पूर्णिमा गौड़, १६, डी. जी. ९२७, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

शेर की कहानी ऐक्शन की जुबानी
action SHOES
PISTA
आज मैं इस आदमखोर शेर को मार कर यहां के गांववालों को इससे मुक्ति दिलवा दूंगा!
वाह! यम-- यम-- आज इसका दो प्याजा बनाकर खाऊंगा!
ऊई याा.... हाय-- पैर में जालिम कांटा चुभ गया--!
ओह-- तो तुम अपने आप ही मेरे कब्जे में आ गये-- मरने के लिए तैयार हो जाओ!
अबे ओय-- शिकारी की दुम-- शर्म नहीं आती एक निहत्थे, घायल शेर को मारते हुए-- पहले मेरे पैर में से कांटा निकाल-- फिर मुझे मारना!
ताकि तू मुझे खा जाये!
अरे नहीं यार-- कैसी दुश्मनों जैसी बातें करता है-- वैरी गुड-- चल आ-- कांटा निकाल दूं!
एक शर्त पर निकालूंगा--पहले तू वायदा कर कि आज के बाद किसी आदमी को नहीं मारेगा!
चल, वायदा किया-- पर मेरी भी एक शर्त है-- जैसे तूने एक्शन शूज पहने हुए हैं-- वैसे ही दो जोड़ी एक्शन शूज मुझे भी ला दे-- ताकि जंगल में शिकार खेलते हुए फिर कोई कांटा न चुभे!
मंजूर है!
कुछ ही देर बाद...
शिकारी घूंघर लाल जी की...
जय!
बाई गॉड-- यह एक्शन शूज तो वाकई बहुत कमफरटेबल हैं!
ऐक्शन शूज की बदौलत आज मैं एक हत्या से बच गया!
समाप्त

रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९३ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४